॥ अर्हं नमः॥

# यू-टर्न

# U-Turn

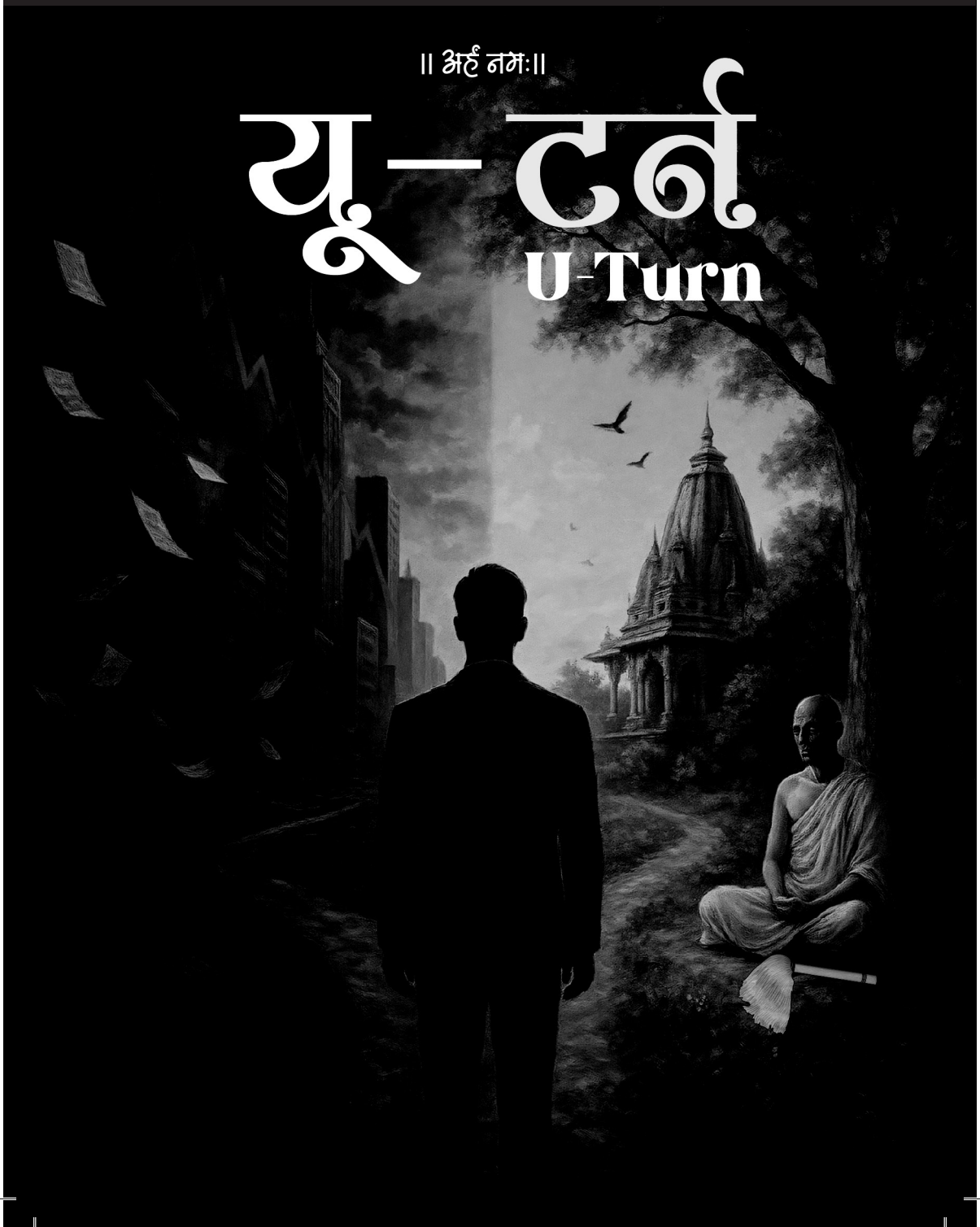

*** दिव्य आशीर्वाद ***

सच्चारित्रचुडामणि, कर्मसाहित्यनिष्णांत, सिद्धांत महोदधि

**पू. आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा.**

एवं उनके विनेय संघहितचिंतक गच्छाधिपति

**प.पू. आ. श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म. सा..**

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति

**प.पू. आ. श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.**

युगप्रधानाचार्यसम शासनप्रभावक गुरुदेव **प.पू. पं श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.**

*** निश्रादाता ***

प्रशांतमूर्ति सरलस्वभावी गच्छाधिपति **प.पू. आ. श्री. राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

सरलस्वभावी **प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म. सा.**

**– लेखक –**
**मु. गुणहंस वि.**

**–अनुवादक :–**
**सा.श्री शीलांगयशा श्रीजी म.सा**


* प्रकाशक *

**कमल प्रकाशन ट्रस्ट**

**१०२–ए, चन्दनबाला कोम्प्लेक्स, आनंद नगर, पोस्ट ओफिस के सामने भट्टा, पालडी, अहमदाबाद–७.**

First Edition : 2000,Copies - 12/10/2024

Second Edition : 1000, Copies - 01-06-2025

Live Contacts :

Hitesh Bhai - Mumbai
(98209 28457)

Laksh Bhai - Chennai
(81488 36505)

Hemanth Bhai - Surat
(98253 56430)

Pritesh Bhai Shah - Rajkot
(98790 18318)

Rajendra Bhai - (Ahmedabad)
(94265 84295)

Designed & Printed By :

Dharamveer : 91763 64790

# प्रस्तावना

वि.सं. २०७८-७९ और इ.स. २०२३ का हमारा पांच महिने का चातुर्मास **विजयवाड़ा** में था। उसके बाद दिनांक १ दिसम्बर से **श्री अरिहंतधाम तीर्थ** में **श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथदादा** की छत्रछाया में हमारे उपधान थे।

श्री अरिहंतधाम तीर्थ के ट्रस्टीगण का संपूर्ण सपोर्ट...

और विजयवाड़ा निवासी **श्रीमती हुलासीदेवी हेमराजजी नागोत्रा सोलंकी परिवार (मीनाक्षी एन्टरप्राईझ)** का संपूर्ण लाभ...

और उपधान एकदम अच्छी तरह संपन्न हुए।

इस उपधान में बनी हुई एक सत्य घटना...

मैंने मेरी भाषा में इस पुस्तक में लिखी है।

पुस्तक लिखना शुरु करने से पहले तो मैंने नाम नक्की किया था, **"साधर्मिकबंधु को संभालना।"** परंतु इस नाम का पीछे से मेरे साधुओं ने जबरदस्त विरोध किया कि " गुरुजी ! यह नाम नहीं चलेगा..."

उनके विरोध में प्रेम के मीठे मनोभाव छीपे हुए थे। सभी की नजरों के सामने ही यह घटना बनी थी, इसलिए सभी ऐसा चाहते थे कि इसका नाम श्रेष्ठ होना चाहिए।

संतान के जन्म के पहले संतान के नाम के लिये परिवार में संघर्ष होता है, वैसे यहाँ पुस्तक के लेखन से पहले इसके नाम के लिए हमारा परस्पर मीठा झगड़ा हुआ।

पहले तो साधुओं को ही पूछा कि "आप ही नाम बताओ, फिर आप में से सबसे ज्यादा संख्या में से जिस नाम के लिये अनुमति मिलेगी वह नाम रखेंगे..."

परंतु उसके बाद मुझे विचार आया कि "यह काम इस पुस्तक पढ़नेवालों को सौंपे तो कैसा ?"

इसलिये हमने एक स्पर्धा = कोम्पीटीशन रखी है।

अभी तो मैंने ही इस पुस्तक का विचित्र नाम रखा है।

# इस पुस्तक का नाम क्या ? आप ही बताओ...

**"म.सा. ! हैद्राबाद से आया हुआ हूं, देवर्षि म. ने यह पत्र दिया है ।"** ३० साल का एक युवान मेरे सामने खड़ा था । और गुजराती भाषा में बोल रहा था ।

वि.सं. २०७८-७९ और इसवीसन २०२३ का हमारा विजयवाड़ा का चातुर्मास ! पांच महीने के इस चातुर्मास के अंतिम दिन थे । शायद कारतक सुद-आठम-दसम का दिन हो सकता है । युवान की गुजराती भाषा सुनकर ख्याल तो आ गया कि "यह मारवाड़ी नहीं है ।"

सादे कपड़े, मुख पर उदासीनता, दो वाक्य बोलने में भी उसे कष्ट हो रहा हो ऐसा लगे00 है ।

मैंने पत्र पढ़ा । उसमें **पू.आ. हेमरत्न सू.म.** के शिष्य मुनि देवर्षिविजय ने लिखा था कि *"यह युवान यहाँ उपधान करने के लिये आया है । गुजराती है, तो उन्हें उपधान में बैठने देना ।"*

दि. १ दिसम्बर से हमारे उपधान शुरु होनेवाले थे । २५ नवम्बर आसपास का वह दिन था । मैं समझा कि "यह युवान महात्मा का मुमुक्षु होगा..."मैंने उन्हें उपधान के लिए हाँ कही । पांच-सात दिन हमारे साथ रहे । रोज दो समय वंदन करते, परंतु मैंने कुछ विशेष ध्यान दिया नहीं, क्योंकि चातुर्मास के अंतिम दिन होने से मैं अन्य कार्यो में लगा हुआ था । और ऐसे भी पर्सनल मीटींग करने का मेरा स्वभाव भी कम, और यह तो मुमुक्षु था, तो उसके गुरुभगवंत ही उसकी संभाल करेंगे ना !

दि. १ दिसम्बर से अरिहंतधाम में उपधान शुरु हुए, उस युवान ने भी उपधान में प्रवेश किया । उसका नाम था **"भव्य !"**

भव्य रोज के पांचों प्रवचनों में उपस्थिति देता था, भव्य सभी आराधना भी अच्छी तरह करता था । अरिहंतधाम तीर्थ के एक बड़े हॉल में सभी भाई साथ में रुके हुए थे, उसमें युवान भी बहुत थे । वे सभी साथ में ही रहने के कारण से उन सभी के बीच अच्छी मैत्री हो गई थी । युवानी के प्रभाव से रोज हंसी-मजाक

तो चलता ही रहता था, कभी *Free* हुए, तो अलग-अलग बातें भी करते थे। हालाँकि उपधान में विकथा नहीं करनी चाहिए, परंतु बहुत नये जुड़े हुए थे और युवा-उम्र और आज के जमाने में साधु भी हास्यादि से संपूर्ण बचे हुए तो कम देखने मिलते है, तो इन युवानों की तो क्या बात करना ?

रोज के पांच-सात प्रवचन होते थे, उसमें मेरा प्रवचन एक और शाम की भक्ति में मैं बोलता था। उसमें पू. गुरुदेवश्री का वात्सल्य मिला था, इसलिये पश्चात्ताप, आलोचना ये सभी बातें अनेकबार आती थी, बहुत सारे आराधक भव-आलोचना लेने लगे थे...

लगभग उपधान के ३५ से भी ज्यादा दिन पसार हो गये थे।

बीच-बीच में उपधान के आराधक युवानों ने और साधुओं ने भी मुझे एक शिकायत की कि "साहेबजी ! यह भव्य कुछ बोलता नहीं है। किसी के साथ मिक्स होता नहीं है। अकेला-अकेला रहता है। हम कभी बात करने भी जाये, तो भी रीस्पोन्स बहुत कम मिलता है, इसलिये हमें आगे बात बढ़ाने का भी उत्साह नहीं जगता।"

"दूसरी कोई गड़बड़ तो नहीं है ना..." मुझे चिंता हुई।

"नहीं, नहीं ! साहेब ! पूरे दिन आराधना तो बराबर करता है, उसमें कुछ कमी नहीं है। कोई झगड़ा नहीं है, वापरने में भी कोई पंचायत नहीं है, जो मिलता है, वह खा ही लेता है... ऐसा कोई प्रोब्लेम नहीं है, परंतु वो सभी के साथ *Mix* क्यों नहीं होता है ?"

"वह तो सभी का स्वभाव अलग-अलग होता है। उनका स्वभाव कम बोलने का हो, मिलने का नहीं हो तो, उसकी ज्यादा चिंता नहीं करनी। दुनिया में ऐसा तो बहुत चलता ही रहता है। उसकी चिंता मत करना। अपने उपधान में कुछ गड़बड़ करे, तो हमें सोचना पड़ता है..." मैंने उस बात को एकदम नोर्मल ही ली।

उपधान के लगभग ३५ से भी ज्यादा दिन बीत जाने के बाद एक दिन भव्य मेरे पास आया, उसके स्वभाव के अनुसार वह कम ही बोला, "मुझे भव आलोचना देनी है।" ऐसे कहकर मेरे हाथ में नोर्मल साइज की दो नोटबूक रख दी, मैंने कहा "मैं पढ़कर आपको प्रायश्चित्त देता हूं।"

वह कुछ भी बोले बिना चला गया। परंतु आंखो में, चेहरे पर एक अलग

ही प्रकार का भाव दिख रहा था । डर भी था, संतोष भी था, कुतूहल भी था... देखने जाये, तो अनेक भावों का मिश्रण था ।

जनवरी २०२४ का वह पहला सप्ताह होगा । मैंने उसकी नोट पढ़नी शुरु की, **और एक भयंकर** इतिहास मेरी नजर के सामने प्रगट हुआ ।

**वह भव्य क्यों कम बोलता था, वह रहस्य उसमें छुपा हुआ था...**

**वह भव्य क्यों किसी के साथ *Mix* नहीं होता था, यह रहस्य उसमें छुपा हुआ था...**

अत्यंत पीड़ादायक था उसका लेखन !

अत्यंत कम बोलनेवाले भव्यने लिखने में तो १२० पृष्ठ भर दिये थे । कहीं कोई माया-कपट नहीं, शब्द छुपाने की मेहनत नहीं, निर्लज्ज बनकर लिखा था उसने ! हर सौ आलोचना में मुश्किल से ऐसी शुद्ध + स्पष्ट एकाद आलोचना देखने मिलती है ।

मुझे उसके पाप यहाँ नहीं बताने है...

परंतु जो अत्यंत गंभीर भूल उसने की थी, जो भूल हजारो युवान कर रहे हैं, वह बताना है... और उसके द्वारा नई पेढ़ी को सावधान करना है ।

३५ दिवस के प्रभुवचनों ने भव्य को एकदम भीगा दिया था, उसे पूरे भव के सभी पापों की आलोचना करने के लिए प्रेरित किया था । तब मुझे हुआ कि अब भव-आलोचना की जगह **"भाव-आलोचना"** नाम ही सभी को कहना पड़ेगा । हम पूरे भव की आलोचना करें या एक बार वह करने के बाद हर साल आलोचना करें, हमें हमारे भावों की आलोचना करनी है... जो अशुभ भाव थे, वे प्रगट करने है...

आज दि. २९-०७-२०२४ का सुबह का समय है । गुजराती अषाढ वद-नोम का दिन है, और सिकंद्राबाद डी.वी. कोलोनी जैन संघ में सबसे ऊपर की बाल्कीनी की एक रुम में बैठकर लिखने का चालु किया है । लगभग यह पूरा प्रसंग होकर आठ महीने हो गये हैं, और मैंने चेन्नई में रहते भव्य को पूछा कि "तेरी आलोचना की दो नोट अभी है या पस्ठ दी है ।"

सामान्य से तो मैं किसी की भी आलोचना पढ़कर वहाँ ही उसे फाड़ देता हूं, इसलिए मुझे यह ही ख्याल था कि "मैंने उसे फाड़ दी होगी ।" फिर भी मैंने उसे पूछवाया । आश्चर्य यह हुआ कि "वह नोट मैंने उसे तब वापस

दी थी, और उसने भी यह नोट फाड़ी नहीं थी, ऐसी की ऐसी थी । बाकी तो मैंने नहीं, तो उसने तो फाड़ ही दी होती । आठ-आठ महिने खुद के पापों के लेखनवाली नोट कौन रखता है ?" मुझे तो उसकी घटना लिखने के लिये उस नोट की जरुरत थी, क्योंकि मुझे सब तो याद नहीं ही रहता और मुझे परफेक्शन के साथ लिखने की भावना थी, उसने वह नोट मुझे वापस भेज दी । आज यह लिखते समय दोनों नोट मेरे पास है । मैं उसके आधार से ही उसके जीवन की कडवी घटना अनेक युवानों के हित के लिए लिख रहा हूं ।

भव्य ने क्या लिखा था ? वह उसकी ही भाषा में मैं लिख रहा हूं ।

|| **भव्य की दर्दभरी दास्तान** ||

गुरुदेव ! ये चोरी के विषय मैं मेरे जीवन का सबसे कडवा भाग लिख रहा हूं । जिसके कारण आज की तारीख में मेरा परिवार और १५०-२०० लोग मेरे कारण से भारी व्याकुल जीवन जी रहे हैं । पता नहीं है कि उनके मन में कैसी कषाय की आग मेरे लिए लगी होगी, क्योंकि मैंने उन सभी के साथ बड़ा धोखा किया है । सभी के विश्वास का घात किया है । लुच्चाई-बदमाशी-झूठ कुछ भी बाकी रखा नहीं है ।

मेरा नाम भव्य भावेशभाई ! मेरा जन्म हुआ भावनगर में और स्कुल से लेकर मेरा २५ साल का समय भावनगर में ही पसार हुआ ।

१८ साल की उम्र तक मैं पढ़ने में अच्छा था और सी.ए. की एन्टरन्स परीक्षा भी मैंने पास कर दी थी । और एक जगह सी.ए. के पास साड़े तीन साल की प्रेक्टीस के लिये भी लग गया था । अगर मैं उस ही Field में होता, तो तो आज सी.ए. होता, वेल सेटल होता, लाखों रुपये कमाता होता, समाज में प्रतिष्ठित इंसान होता, शादी करके पत्नी-संतान-माता-पिता के साथ बहुत प्रसन्नता के साथ जीता होता ।

परंतु आज के जमाने के लाखों युवान जो भूल कर बैठते हैं, वह भूल मैंने भी की । *Easy Money* के चक्कर में मैं फंस गया ।

मैंने एक मार्केटींग कंपनी का प्लान सुना, और मुझे हुआ कि, "इसमें जल्दी पैसा कमा सकूंगा ।" यह चक्कर चल ही रहा था और छः महीने में दूसरे दूषण ने प्रवेश किया, वह दूषण यानि **शेरबजार** ! १०० का १ लाख चपटी में बना देने के सपने मुझे आने लगे, सी.ए. बनने की सालों की मेहनत करनी मुझे

एकदम व्यर्थ लगने लगी ।

मैंने मेरे पापा भावेशभाई को बात की, पापा ऐसे तो नीति के धन में मानते हैं, मेहनत करने में मानते हैं, परंतु पता नहीं उन्होंने मुझे शेरबजार के लिए हामी भर दी । शायद वे ऐसे ही समझे कि "यह भी एक प्रकार का व्यापार ही है ना !"

और मैंने हमारी एफ.डी. तोड़ दी, वे पैसे डाले शेरबजार में !

शुरुआत में थोड़े पैसे कमाये, इसलिए उत्साह बढ़ा । अब मन इसमें ही ज्यादा से ज्यादा दौड़ने लगा, पढ़ने में मन लगना बंद हो गया, सी.ए. पढ़ने में भी प्रमाद किया । और उसका खराब फल आया कि मैं कॉलेज में १४वीं कक्षा में फैल हो गया । कॉलेज का दूसरा साल मेरे लिये एक कलंक बनकर आया कि **"भव्य फैल !"**

दूसरी तरफ ई.स. २००८ में पूरे विश्व में मंदी का वातावरण फैला हुआ था । उसमें शेरमार्केट की कमर टूट गई, भाव नीचे चले गये, हमें बहुत नुकसान हुआ । एफ.डी. के पैसे साफ हो गये । यह सब ई.स. २००९ तक हो गया । इस तरफ कंटाल कर मैंने भी मेरे कॉलेज और सी.ए. दोनों का त्याग कर दिया ।

मैं मेरे माता-पिता का एक ही बेटा ! भाई-बहन कोई नहीं, मेरे कारण से सब नुकसान हुआ, मैं थोड़ा गंभीर बन गया, और ई.स. २००९ में एक जगह नौकरी में लग गया । परंतु रोज की दस घंटे की मेहनत दुःख रुप लगने लगी ।

और ई.स. २०१० में वापस मार्केटींग कंपनी में आकर्षित हुआ, नौकरी छोड़ दी और कंपनीओं की मार्केटींग करना शुरु कर दिया । मैंने प्रचार तो जोरदार किया, परंतु मैंने कंपनी की तरफ से लोगों को जो वायदे दिये थे, वे वायदे कंपनी पूरी नहीं कर सकी । जिन लोगों नें हमारे भरोसे पर उस कंपनी में पैसे डाले थे, उन सभी को नुकसान हुआ । उन सभी ने तो मुझे ही पकड़ा, हमारे बीच उल्टा-सुल्टा बोलना हुआ, संबंध बिगड़ गये...

मैंने तो नौकरी छोड़ ही दी थी, नई नौकरी मिली नहीं, और मुझे नौकरी के बदले नये साहस करने में ही रस था । एकबार मार खाई, फिर भी कुत्ते की पूंछ टेढ़ी ही रही... और मैं नई कंपनी में मार्केटिंग के लिये जुड़ गया, उसके

बाद एकाद साल के बाद वापस नई कंपनी में...

मैं सिर्फ सपनों में ही जीता रहा, और दूसरों को भी दिन में सपने दिखाकर पैसों का नुकसान करवाता रहा, उसके द्वारा मन का नुकसान किया । बहुत लोग मेरे कारण से भटक गये ।

ई.स. २०११ में मैंने एक व्यक्ति के साथ पार्टनरशीप की । और फोरेन एक्सचेन्ज में ट्रेडींग चालु की, और उसके लिये मार्केटींग कंपनी जैसा प्लान बनाया, और लोगों के पास से पैसे लेने का चालु किया । हमने सभी को वायदे दिये थे, सपने दिखाये थे कि "एक से देढ साल में आपके पैसे दुगने हो जाएंगे ।"

**"लोभी होता है, वहाँ धूर्त लोग भूखे नहीं मरते हैं ।"** इस न्याय से बहुत सारे धन के लालची भोले लोग हमारी बातों में फंस गये, हमारा इरादा खराब तो नहीं था, परंतु हम ये भूल गये कि "हम सपना देख रहे हैं... और दूसरों को दिखा रहे हैं..." इसलिये हम भी मर गये और दूसरों को भी मार डाला । हाँ ! पहले हमें अच्छा प्रोफीट हुआ, परंतु ३-४ महीने के बाद नुकसान होना शुरु हो गया । और ई.स. २०११ के अंत तक लगभग ७-८ लाख का नुकसान कर दिया ।

मेरा पार्टनर समझदार निकला, उसने तुरंत लाईन छोड़ दी । परंतु मेरी बुद्धि तो एकदम भ्रष्ट हो गई थी, इसलिये मैं नुकसान को कवर करने और मैं लाखों-करोड़ों कमा लूं उसके लिये नये-नये रास्ते ढूंढता रहा, नये-नये लोग ढूंढता रहा ।

और इस विषचक्र में अंत में मैंने प्रवेश किया M.C.X. में !

अभिमन्यु के चक्रव्यूह के सात कोठे जैसी है ये *Easy Money* की दुनिया ! उसमें प्रवेश करना एकदम सरल है, परंतु उसमें से बाहर निकलना लगभग अशक्य है । अभिमन्यु तो शहीद होकर अमर बन गया, परंतु इस धन के चक्कर में फंसनेवाला तो जीकर कुत्ते की मौत मरता है, और साथ में खुद के परिवार को और खुद पर विश्वास रखनेवालों को भी कुत्ते की मौत की तरह जिंदा ही मार डालता है ।

M.C.X. के लिये मेरे पास पूँजी तो नहीं थी, उसमें तो पैसे रोकने ही पड़ते है ना ! वो लाना कहाँ से ? मुझे एक रास्ता मिल गया । पापा भावेशभाई

और माता भानुबहन को मैंने बात की । मैंने कहा कि "आपके पास पगड़ी के दो घर है, आपको दो घर की जरूरत नहीं है, अभी एक घर बेच देते हैं, वे पैसे M.C.X. में लगा देते हैं, उसके बाद थोड़े ही समय में मैं सब कमा लूंगा ।"मम्मी-पापा शुरुआत में तो नहीं माने, परंतु फिर मेरा कोन्फीडन्स देखकर उन्होंने हामी भरी । उनका मेरे पर अनहद प्रेम था, एकलौता बेटा था ना ! और उनकी शादी के १५ साल के बाद मेरा जन्म हुआ था । इसलिए मेरी बात उन्होंने मान ली । वे कभी मुझे दुःखी नहीं देख सकते थे, कभी दुःखी भी नहीं करते थे । मुझे याद है तब तक एक भी बार मेरे जीवन में मुझे उन्होंने मारा नहीं था । प्यार-दुलार में ही रखा था । उन्हें मेरी बातों से आशा बंध गई कि "ठीक है... एक घर बेच भी देंगे तो हमारे पास दो घर है ना ! अपने खुद के हैं, पगड़ी पर है । (घर बेचो, तो तीसरा भाग मूल मालिक को देना पड़ता है, उसका नाम पगड़ी घर !) एक घर में तीन लोगों को रहने में तकलीफ ही कहाँ है ?

और हमने एक घर बेच दिया, उसके सब पैसे डाले M.C.X. में ! और मेरे अरमान तीन महीने में ही राख बन गये । सभी के सभी पैसे M.C.X. में खत्म हो गये ।

अब ? "**हारा हुआ जुआरी दुगना खेलता है ।**"यह न्याय है । **युधिष्ठिर** और **नल** जैसे भी अगर लालच में फंस गये और नहीं सुधरे, तो मेरी क्या बिसात (शक्ति) ?

मैं अभी भी सपने की दुनिया में ही पड़ा रहा । मैं मार्केट में से भी पैसे उधार लेने लगा । वो भी व्यापार के लिये लेने में आये, उस नोर्मल ब्याज के रेट से नहीं । परंतु कटोकटि के समय में लेने में आये, ऐसे बहुत ऊंचे ब्याज के रेट से लिये । टोपीयाँ बदलता गया...

और ई.स. २०१२ में मैंने वापस एक दुनिया में प्रवेश किया । जो बिनकायदेसर है, उस डब्बा ट्रेडींग में मैं घुसा, (जानकारों को ये सभी दुनिया का नॉलेज होगा ही ।) परंतु वहाँ भी सब नुकसान किया । फिर भी सपनों की दुनिया टूटी नहीं । हर समय कोई नई सीस्टम हाथ में लेता था, और सोचता कि "अब कमा लूंगा ।"और ऐसा ही व्यापार चालु रखा, और नये-नये कर्म बांधता गया ।

ई.स. २०१३ में मेरी हालत ऐसी थी कि "मुझे किसी भी तरीके से पैसे

चाहिए ही ।" इसलिए मैं नये-नये प्लान बनाकर Online किसी को भी E-mail करता था । आशा थी कि "मेरा प्लान देखकर कोई मुझे पैसे देने को तैयार हो जाए ।"

दूसरे कोई तो मुझे पैसे देने के लिये तैयार नहीं हुए, परंतु पुलिस को मेरी धोखेबाजी की गंध आ गई । उस समय ऐसे चीटींग के केस बहुत बढ़ गये थे । पुलिसने किसी के नाम से मुझे फोन किया कि "आपका प्लान हमनें देखा है । हम आपको पैसे देने के लिए तैयार है । महिने के ८% ब्याज से आपको पैसे देंगे । उसके लिये हम एकबार मीटींग कर लेते हैं... आप Legal एग्रीमेन्ट और चेक लेकर आओ..."

पुलिस के जाल में मैं फंस गया । मैंने लंबा विचार नहीं किया, मुझे तो बस, किसी भी हिसाब से पैसे चाहिए थे, और मैं पुलिस के द्वारा बताई हुई जगह पर पहुँच गया । वहाँ पुलिस का आदमी मुझे नोर्मल कपड़े में मिला, हमारी मीटींग चल रही थी, और अचानक पुलिस ने वहाँ छापा मारा । उनका तो यह प्रि-प्लान ही था, मुझे यह कुछ पता ही नहीं था । उन्होंने मुझे पकड़ा । मेरे पास से पूरी जानकारी ले ली, मैं झूठा था, वह सत्य था । उन्होंने मुझे कहा कि, "तुझे मुक्त होना हो, तो १ लाख ४० हजार भरने पड़ेंगे ।" मैं अगर पैसे नहीं भरता हूं, तो वे मुझे जेल में बंद कर देते, ज्यादा से ज्यादा परेशान करते । जैसे मैं पैसे कमाने के लिए गलत रास्ते अपनाता था, वैसे वे भी पैसे कमाने के लिये मेरे जैसे को डराकर - घबराकर पैसे निकालने के लिये गलत रास्ते अपनाते थे । हम दोनों में फर्क क्या ? मैं दूसरों को फंसाता था, वे मुझे फंसाते थे ।

मैंने घर में मम्मी-पापा को बताया कि "मैं फंस गया हूं, Please ! मुझे छुड़वाओ ।"

उस समय घर में पैसो की तंगी कितनी थी, वह तो मुझे पता ही था । इसलिए ही तो मैं ऐसे गलत रास्ते अपनाता था ना ! तो फिर माता-पिता मेरे लिये इतनी रकम कहाँ से लाएंगे ? वह मुझे सोचना ही चाहिए । परंतु मैंने वह विचार नहीं किया । क्योंकि जेल में रहने की पुलिस की धमकियाँ और मार खाने की मेरी ताकात ही नहीं थी ।

मम्मी मेरी सहायता के लिए आए, उन्होंने खुद के पियर में बात की और कैसे भी करके १ लाख ४० हजार इकट्ठे किये, पुलिस को देकर मुझे वहाँ

से निकलवाया । किसी भी प्रकार की डाँट-डपट नहीं, थप्पड़ नहीं, बस ! प्रेम से इतना ही कहा, "बेटे ! अब कोई गलत काम मत करना । हम सुखी रोटी भी खाकर जी लेंगे ।"

मम्मी की बात मैंने मान ली होती, तो अभी भी हम सभी की जिंदगी चाहे सादी, परंतु सुख-चेन से भरी हुई रहती । मैं एक समय का सी.ए. होनेवाला युवान था, मेरे पास शक्ति तो थी ही । मुझे इतना ही करना था कि मुझे जिसे-जिसे पैसे चुकाने बाकी थे, उन्हें इतना ही कहना था कि "अभी मेरे पास कुछ नहीं है, कमाकर धीरे-धीरे चूकाऊंगा ।"

इसमें मेरी इज्जत कम हो जाती, थोड़ी गालियाँ सुननी पड़ती... परंतु थोड़े टाइम के लिये ही, उसके बाद मैं तो शांति से मेहनत करने लग जाता ना ! और धीरे-धीरे रकम चूका भी देता । परंतु मैंने मेरी होशियारी नहीं छोड़ी, मैं यानि कौन ? मैं सभी को गलत-गलत वायदे करता ही गया, "आपको इस तारीख को चूकाऊंगा, आपको उस दिन... मेरे पैसे एक जगह अटक गये हैं, वो आने की तैयारी में है, वो आएंगे, तब आप सभी को चूका दूंगा..."ऐसे तो कित-कितने झूठे वायदों को मैंने बाजार में रखे और बिचारे लोग असत्यता में बह गये । इस तरह मेरा समय खिंचता गया । मम्मी-पापा को ऐसा था कि "अब भव्य सुधर गया है ।"

परंतु मेरा नाम ही भव्य था, हकीकत में मैं अभव्य जैसा निकला, एकदम ही नालायक ! मम्मी-पापा का भविष्य आदि कुछ भी मैंने सोचा नहीं और April २०१३ में मैंने एक नये महापाप की शुरुआत की - IPL का सट्टा !

भारत के लाखों घर इसमें बर्बाद हुए हैं । सरकार किसलिये सख्तता के साथ इसे बंध नहीं करवाती ? पता नहीं । भारत को बर्बाद करके ऐसी क्रिकेट मैच खिलाना ही किसलिये ?... ऐसा विचार आज मुझे आता है, परंतु उस समय तो मैं उसमें डूब गया, परंतु उसमें भी मुझे कोई फायदा नहीं हुआ, परंतु तो भी मेरी आदत नहीं छूटी । M.c.x. + IPL + शेरमार्केट बाप रे ! अब तो तीन-तीन गधों पर एक साथ सवारी करने को निकला था । लाते कितनी खानी पड़ती है ? बस पैसा पैसा पैसा... उसके लिये नया रास्ता...! **"मुंगेरीलाल के हसीन सपने ।"**की तरह अभी भी मेरे सपने चालु ही थे ।

नुकसान बढ़ता गया, फायदा कुछ नहीं... पापा भी निवृत्त जैसे थे । और

अब लेनदारों का दबाव बहुत बढ़ता गया । "मेरी वायदेबाजी एकदम गलत है ।" ऐसा उनको अंदाज आ गया । बोलचाल बढ़ती गई, गाली बोलना, घर आकर परेशान करना, धमकी देना चालु होता गया... मैं तो ठीक, परंतु माता-पिता जबरदस्त दुःखी हो गये, अतिशय डर में रहने लगे, मेन्टली टोर्चर सहन करने की ताकत खो बैठे...

और आखिर दूसरा घर भी बेच देने का निर्णय लेना पड़ा । मुझे उन्हें निर्णय दिलवाना पड़ा और उन्होंने मान्य भी रखा, क्योंकि वे हैरान-परेशान हो गये थे ।

और ई.स. २०१३ के दिसम्बर में हमने हमारा घर बेच दिया । सौदा हुआ ६ लाख ५० हजार में ! उसमें घर पगड़ी का इसलिए Main (मुख्य) मालिक को २ लाख देना ! उसमें भी खरीदनेवाले ने एक साथ पैसे नहीं दिये, टुकड़े-टुकड़े में दिये, ई.स. २०१४ मार्च महीने तक उसने ५ लाख चुकाये । अब मुख्य मालिक को २ लाख दे दो, तो हमारे पास बचेंगे क्या ? नये किराये के घर के खर्च चालु होनेवाले थे और लेनदारों को चुकाने का तो बाकी ही था । हम बहुत बड़े इंसान नहीं थे, इसलिये करोड़ों रुपये चुकाने नहीं थे, परंतु लाखों चुकाने भी हमारे लिये अशक्य हो गया था ।

हाँ ! यह बात तो कहना भूल गया । हमने यह घर बेचने के पहले इस घर की मुख्य रसीद गीरवी रखकर उस पर भी १ लाख रु. महीने के १०% के ब्याज से लिये हुए थे, इसलिए वे पैसे भी चुकाने बाकी थे ।

हमने मुख्य मकानमालिक को फोर्स करके, आजीजी करके पगड़ी के उसके दो लाख केन्सल करवाये, इसलिए घर बेचने के पांच लाख हमारे हाथ में तो आये, परंतु टुकड़े टुकड़े में । और दूसरी तरफ महीने के १० हजार रुपये ब्याज के भरने थे ।

अधूरे में पूरा... शेरमार्केट में डिब्बे ट्रेडींगवाले को अभी भी मुझे २ लाख ३० हजार चुकाने बाकी थे । इन सभी सिरफिरे लोगों को पैसे नहीं चुकाओ, तो गुंड़ो के द्वारा हाथ-पैर तूड़वा देते हैं, वे इतने खतरनाक होते हैं ।

एक तरफ अनेक लोगों का कर्ज,
दूसरी तरफ गीरवी रखा हुआ घर, वह छुड़वाना बाकी...
तीसरी तरफ डिब्बेवाले को २.३० लाख चुकाने का बाकी...

हमारे हाथ में सिर्फ ५ लाख ! वे भी थोड़े बहुत खर्च हो गये थे, क्योंकि तीन महीने में थोड़े-थोड़े आये थे ।

अब कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया ।

मैंने माता-पिता और दादी तीनों के सामने रोती आंखों से सभी बात पेश की, और समझाया कि "अगर यहाँ रहेंगे, तो ये लोग मुझे मार डालेंगे । हाथ-पैर तो तोड़ ही डालेंगे, इसलिए हम यह स्थान छोड़कर कही चले जाते हैं ।"

पूरी जिंदगी जहाँ बीताई थी, उस स्थान को छोड़कर एकदम अनजान नई जगह जाना था । और व्यवस्था तो वापस थी ही नहीं, पापा की उम्र ५२ साल ! मम्मी ५० के ! दादी ७० के आसपास ! इस उम्र में शांति से जीने के बदले परेशानी का समय आ गया । नई जगह जाकर कहाँ रहेंगे ? क्या खाएंगे ? क्या कमाएंगे ?... कौन मदद करेगा ?.... ये सभी प्रश्न खड़े ही थे । वो तीन तो कमा सकने वाले नहीं थे, और मैंने इतने सालों तक खोने का ही काम किया था । मेरे से तो वे बहुत अच्छे थे कि कम से कम उन्होंने नुकसान तो किया नहीं था, किसी को खून के आंसु तो नहीं गिरवाये थे, किसी की हाय ली नहीं थी...

हम चारों ने क्या निर्णय किया पता है ?

"हम चारों को शंखेश्वर जाना, कोई व्यवस्था हो तो ठीक है । नहीं तो बाद में मुझे आत्महत्या तो कर ही लेना..."

मेरी मृत्यु के बाद मेरे माता-पिता को तो कोई हैरान नहीं करेगा, और वे बचे हुए पैसो में से कुछ भी करके खुद की जिंदगी पूरी करेंगे...

मेरा यह निश्चय हो गया था, परंतु हम ऐसा कुछ करे, उसके पहले ही एक चमत्कार का सर्जन हुआ । इस निर्णय के दो दिन में ही मेरे एक फूफा (भूरोसा) (अंकल) मेरे घर आए । उन्हें हमारे शंखेश्वर + आत्महत्या के निर्णय का पता नहीं था, परंतु मेरी शरारतों के बारे में उन्हें सब कुछ पता था । स्वजनो ने पहले सहायता कर दी थी, परंतु मेरी भूलों की परंपरा देखकर उन्होंने सहायता करनी बंद कर दी थी ।

हमने उनको सभी बात बता दी थी, शंखेश्वर + आत्महत्यावाली भी !

उन्हें हम पर दया आई, उन्होंने कहा, "आप चिंता मत करो, मैं

आपकी कुछ व्यवस्था करता हूं..." मुझे लगा कि "शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा ने ही उन्हें भेजा है हमारी रक्षा के लिये !" जिंदगी में पहलीबार प्रभु पर श्रद्धा प्रगट हुई ।

फुफाजी सी.ए. थे, मेरी नजर के सामने उन्होंने चार-पांच जगह फोन किया, उन्होंने उनके सी.ए. मित्र के साथ सभी बात करके फाइनल किया, और मुझे कहा कि "तू दो दिन के बाद मुझे ऑफिस में मिल । तेरा काम हो जाएगा ।"

मम्मी-पापा की आंखों से आंसु टपक पड़े । वे फुफा का बहुत उपकार मानने लगे, उनकी भी आंखे गिली हो गई । "कुछ तकलीफ नहीं । जीवन में सुख-दुःख तो चलते ही रहते हैं ?" और स्मित के साथ उन्होंने बिदाई ली ।

दो दिन के बाद उनकी ऑफिस पर मिलने गया, "भव्य ! दक्षिण भारत के एक शहर में मेरे मित्र की फेक्टरी है । वे तुझे वहाँ नौकरी रखने के लिये तैयार है । तेरे लिये किराये का घर भी नक्की हो गया है । तू अब परिवार के साथ वहाँ चला जा । यहाँ तुझे जीना अब भारी पड़ ही रहा है, तो एकदम नये प्रदेश में चला जा ।"

मैंने बात स्वीकार ली, लोगों को पैसे नहीं चुकाने की बददानत हमारी नहीं थी, परंतु अभी हमारे पास दूसरा कोई उपाय ही नहीं था । अभी तो बस, हमें जीना किस तरह ? यह ही सबसे बड़ा प्रश्न था, जिसका उत्तर मेरे फुफा दे रहे थे ।

(प्रायः उनकी मम्मी के फुफा थे...)

सब फाइनल हो गया, तुरंत ही शहर छोड़ देना था... मैं उनकी ऑफिस में से निकल ही रहा था, और फुफा ने एक मिनिट मुझे खड़ा रखा, "भव्य ! अब वापस ऐसी कोई भूल मत करना । नहीं तो मुझे मेरे मित्र को उत्तर देना भारी पड़ेगा, और आप चार लोगों की जिंदगी मुश्किल में आ जायेगी । बस, जो मिले, उसमें संतोष मानकर जीना ।"

उनके शब्दों में सावधानी, भय, सहानुभूति, मनोभाव, हितशिक्षा... सब ही था । मैंने उनकी बात का स्वीकार किया । उनके Face पर संतोष प्रगटा, परंतु उन्हें या खुद मुझे भी खबर ही नहीं थी कि, "मेरा भविष्य अभी तो ज्यादा भयानक बननेवाला है ।" (और साथ ही फुफा को, भव्य को, भावेशभाई, भानुबहन किसी को भी पता नहीं था कि इस भयानक भविष्य के पीछे सोने का

सूरज भी उनके जीवन में उगनेवाला था, भवितव्यता ने भयानक दुःख के पीछे सुख की सुंदरता छुपाई हुई ही थी । नौ महीने के गर्भवास का दुःख भोगने के बाद ही संसार में जन्म पाने का सुख मिलता है ना ! कुदरत की लीला अपरंपार है, ऐसा अजैन कहते हैं । भवितव्यता - कर्मसत्ता... ये सभी सभी को नचाने की प्रचंड ताकत रखती हैं...)

मैंने घर जाकर सब से बात की । वे तो कुछ आशा रखकर ही बैठे थे । वे खुश हुए । इतने भयानक दुःखों के बाद यह छोटा सुख भी उनके लिए महासुख था । हमने तैयारी कर ली, और दि. ११ मार्च २०१४ के सुबह चार बजे हम भावनगर छोड़कर, हमारे घर को अंतिम बार देखकर भाग ही गये । सब को कहकर जाना तो शक्य ही नहीं था । इसलिये ही सुबह चार बजे चोरों की तरह भाग निकले ।

कुछ सामान मेरे पापा के खास मित्र के वहाँ रखवा दिया था, "हम दक्षिण में सेट हो जाये, उसके बाद वो सब सामान भेज दें ।" इस तरह सब सेट कर दिया था ।

अरे, एक आघातजनक बात तो कहनी भूल ही गया । मेरे लिये, मुझे बचाने के लिए, मेरे जैसे कपूत की - नालायक की रक्षा करने के लिये मेरी मम्मी ने खुद का मंगलसूत्र भी गीरवी रख दिया था, ई.स. २०१३ में ! पति नहीं मरे, तब तक भारत की पत्नी मंगलसूत्र तो नहीं ही निकालती । परंतु मेरे पापा नजर के सामने जिंदा होने के बावजूद मम्मी को यह काम भी करना पड़ा मेरे जैसे हीन के लिए ! और मैं उस मंगलसूत्र को छुड़वा भी नहीं सका । और मम्मी का गला खाली ही रहा, फिर भी उसके फेस पर उस बात का खेद नहीं, जीभ पर एकबार भी शिकायत नहीं, मंगलसूत्र छुड़वाने को याद भी नहीं करवाया... माँ यानि माँ ! परंतु मैं नालायक यह सब नहीं समझ सका, तब तो नहीं ही समझा ।

२०१० से २०१४ तक जिन-जिन लोगों ने मुझ पर भरोसा रखा, उन सभी को मैंने धोखा ही दिया । मैंने मेरे सपनों की दुनिया में जीकर राक्षस जैसा जीवन जीया । बस, स्वार्थ और स्वार्थ ही रखा । कभी भी मैंने विचार नहीं किया कि "इतने सभी लोग इसमें फंस रहे हैं..." मेरे पिता-माता जिस घर में २५-२५ साल से रहते थे, वह घर उनको हमेशा के लिये छोड़ देना पड़ा, वह भी सिर्फ थोड़े सामान के साथ में ! और यह सब होने के बावजूद मुझे आंसु तो नहीं ही

आये, अरे ! अंदर भी मेरी भूलों का पश्चात्ताप नहीं था । सिर्फ मेरी निष्फलता का दुःख था, परंतु "मैंने ही मेरे पैर पर कुल्हाड़ी मारी है, मेरे ही अपराध मुझे दुःखी कर रहे हैं ।" ऐसा कोई विचार नहीं आया । मैं बिन्दास्त बनकर ही जीया, और आज मुझे पता चल रहा है कि मैंने क्या नुकसान किया है, और कितने लोगों की जिंदगी में कषायों की आग लगाई ।

महाराज साहेब ! यह शेरबजार और अलग-अलग स्ट्रों में मैंने हमारे परिवार की जमापूंजी, २ घर, सोना, मन की शांति... यह सब ही नष्ट कर दिया और कितने ही लोगों का कर्ज तो खड़ा ही है, वह तो अधिक में ! भावनगर का मेरा देने का फीगर ३४ लाख था, और वह चूकाये बिना हम वहाँ से भाग गये ।

मार्च २०१४ में दक्षिण के एक शहर में हम आ गये । मेरी उस समय उम्र थी २५ साल ! १८ से २५ साल की उम्र में तो मैंने बहुत दुनिया देख ली थी । शादी हुई नहीं थी, परंतु फालतू लड़के को लड़की मिले भी किस तरह ? मुझे वहाँ पहले ही दिन से नौकरी पर रख दिया गया । पहले ही दिन से हमें रहने के लिये किराये का घर भी मिल गया, मुझे उस कंपनी में मान-सन्मान भी मिलने लगा, क्योंकि मैं मजदूर इंसान नहीं था । पढ़ा हुआ था, और मैंने भी पुराना सब कुछ भूलकर बहुत ही मेहनत की, और कंपनी के डीस्पेच विभाग को संभालना शुरु कर दिया । इस कंपनी के सेठ, जो मेरे उपकारी थे, उन्होंने कभी भी मेरी मजबुरी का लाभ लिया नहीं था । वेतन कम कर देना, काम ज्यादा लेना... ऐसा कभी भी उन्होंने मेरे साथ नहीं किया, वह मेरे पुण्य से भी ज्यादा उनकी उदारता थी ! मेरे बारे में सब जान कर भी मेरे पर विश्वास रखकर मुझे नौकरी पर रखा, वह उनकी कितनी महानता ! नहीं तो मेरे जैसे को कोई घर में भी घुसने नहीं देगा । मानो कि हड़काया (पागल) कुत्ता ! मेरा वेतन महीने का ६० हजार हो गया था ।

परंतु मेरा अतिभयंकर दुर्भाग्य ! मेरी बुद्धि वापस भ्रष्ट हो गई । इतनी मार खाने के बाद भी किसी को ऐसी दुर्बुद्धि सूझेगी, वह कोई नहीं मानेगा, मैं भी नहीं मानूंगा... परंतु यह तो मेरा खुद का अनुभव है, और ई.स. २०१५ अगस्त महीने में वापस शेरबजार के कीड़े ने मुझे चटका भरा । कंपनी की काम-दार सोसायटी में से मैंने १ लाख की लोन ली, और ट्रेडींग चालु की । रीजल्ट तो शेरमार्केट में क्या आता है ? वहाँ कमानेवाले १०-२०% और खोनेवाले

८०-९०% ! **हर्षद महेता** का अनुभव सभी को है ही । और ई.स. २०१६ जनवरी तक वे १ लाख तो लाख हो ही गये, परंतु उसके साथ मैंने यहाँ बचत कर-करके जो ७० हजार इकट्ठे किये थे, वे भी बर्बाद हो गये ।

मैं एकदम बेवकूफ इंसान कि इतना सब होने के बावजूद भी इसमें से भी मैं सबक नहीं सीख पाया कि "यह लाइन मेरे लिये नहीं ही है । और मुझे तो मेहनत ही करनी है । क्योंकि मेहनत करके पिछले ६ महीने में काम + वेतन दोनों में अच्छी प्रगति प्राप्त कर ली थी । आसिस्टन्ट मेनेजर बन गया था इस समय में तो ! और वेतन महीने का ६० हजार !"

ई.स. २०१६ मे महिने में मैंने बैंक लोन ली १ लाख ५० हजार की और *B.C* उठाकर वापस मैंने ये सभी पैसे शेरमार्केट और M.C.X. में डाले । और परिणाम तो यह ही आया कि "जनवरी २०१७ तक वे सभी ही रुपये साफ !"

तब मन से विचार किया कि "अब इन सभी में एक रुपया भी मुझे डालना नहीं ।"

ई.स. २०१७ अगस्त से ई.स. २०१८ फेब्रुआरी तक मैंने दक्षिण में ही एक अन्य शहर में पेपरमील में काम किया, वहाँ मेरी पोस्ट + वेतन दोनों बढ़े ।

ई.स. २०१८ फरवरी तक में मुझे ज्यादा वेतनवाली मेनेजर पोस्ट की ओफर मिली । पहली जगह मैंने ज्यादा पगार के लिए छोड़ दी थी, पर वे मुझे वापस बुला रहे है । मैंने यह ऑफर स्वीकारी, परंतु पेपरमील में जब जुड़ा था, तब इस्तीफा देने के बाद मीनीमम ४५ दिन रुकने का टाइम *Fix* किया था, मैंने वो पाला नहीं । और वापस मेरी नौकरी की जगह पर पहुंच गया ।

ई.स. २०१८ जनवरी से ई.स. २०१९ तक मैंने उस कंपनी में जबरदस्त मेहनत की और काम में रीजल्ट मिला भी सही, हमारी आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे अच्छी हो रही थी । परंतु कंपनी में लेबर प्रोब्लेम चालु हो गई, और २४ घंटे अगर कंपनी चले, तो काम में बहुत ही तकलीफे आने लगी । ऐसे भी गर्मी की ऋतु में यह तकलीफ होती ही है, परंतु इस साल यह प्रोब्लेम ज्यादा ही थी । उसमें रोजरोज की सेठ लोगों की सिरपच्ची होने लगी । रोज की मेरी ड्युटी १३ घंटे की थी... और लोग परेशान होकर शराब पीने लगते हैं, गुटखा खाने लगते हैं, वैसे मैं परेशान होकर मेरी पुरानी आदत शेरबजार तरफ मुड़ गया । मम्मी

को मेरी आदत की गंध आ गई, उन्होंने मुझे मना किया कि "इत-इतनी मार खाई है, अब मार खानी नहीं है । इस उम्र में मेरी बिल्कुल ताकत नहीं है ।" परंतु तो भी मैंने बैंक में से रु. ५ लाख की लोन ली, और मम्मी को इस तरह आश्वासन दिया कि "भावनगर में तो हमनें लोगों के पास से पैसे लिये थे, यहाँ हम बैंक के पास लोन ले रहे है, और वे हर महिने अपने वेतन में से कटते जायेंगे । उसके लिये अपने सिर पर कोई दूसरा बोझ आनेवाला नहीं है ।"

अरे गुरुदेव ! गधे ऐसे मैंने वापस उस ही शेरमार्केट नाम के किचड़ में छलांग मारी और ई.स. २०१९ के अंत तक वे ५ लाख रु. साफ !

ई.स. २०२० जनवरी में मैंने एक भाई को गलत कारण बताया, और उनके पास से मैंने २ लाख उधार लिये । झूठ बोलना - माया करनी... यह सब मेरे लिए दांये हाथ का खेल बन गया था । उस भाई के साथ मेरा कंपनी के कारण परिचय हुआ था । मेरी पोस्ट + मेरी बातें... इन दोनों के कारण उन्होंने मुझ पर विश्वास रखकर रु. २ लाख दिये ।

बस, मैं पहले की तरह टोपी घुमाने लगा, पैसे के लिये किसी-किसी को पकड़ता, झूठी बातें करता और पैसे लेता, लोग ब्याज के लिये मुझे पैसे देते । मेरा वेतन ८० हजार था, इसलिए उसमें से हम तीन के नॉर्मल खर्चे के बाद पैसे तो बचते ही थे । मुझे बीडी-सिगारेट-शराब ऐसा कोई व्यसन नहीं था, मित्रवर्ग भी नहीं था कि उनके साथ मुवी-होटल-घुमने आदि का खर्चा हो... उन सभी से मैं मुक्त था, जीवन Simple था, इसलिए बहुत कम खर्चे में चल जाता था । इसलिये बचे हुए पैसे में से मैं ब्याज तो चूका देता, परंतु ओरीजीनल कर्ज चूकाना मेरे लिये शक्य नहीं बना ।

ऐसे करते-करते ई.स. २०२२ जनवरी तक मेरे सिर पर वापस रु. ११ लाख का कर्ज हो गया । अब सभी कर्जदार पैसे मांगते थे, ब्याज नहीं, परंतु उनकी मूल रकम मांगते थे । मैं फंस गया, सच बोल नहीं सका... और उस समय एक गलत इंसान का मुझे परिचय हुआ, और उसने मुझे गलत युक्ति बताई ।

उस गलत इंसान ने मुझे कहा कि "तू तेरी कंपनी के नाम के गलत बिल बना, और ट्रान्सपोर्ट वाले के पास से एडवान्स के नाम पर पैसे ले ले । इसमें कंपनी को नुकसान नहीं होगा, और तेरा काम हो जायेगा ।"

पहले तो मैंने कंपनी के साथ धोखा करने की मनाई की, परंतु रोजरोज

कर्जदारों का प्रेशर बढ़ता ही गया, इसलिये मैंने उस गलत रास्ते को अपनाने का निर्णय किया ।

हकीकत तो मुझे आज समझ आती है कि, "गलत इज्जत बचाने के चक्कर में कर्जदारों को सच्ची बात नहीं कहना, उसमें तत्काल शांति, परंतु लंबे समय में नुकसान है । उसके बदले सच्ची हकीकत बता ही देना, शायद थोड़ी गाली सुननी पड़े, शायद मार खानी पड़े, परंतु उसके बाद शांति से जीवन जी सकते हैं..."

मैंने वह गलत रस्ता, शोर्टकट ले लिया, पैसे कमाये, और जिसको-जिसको पैसे चुकाने जरुरी थे, उन्हें चुका दिये ।

इतनी हद होने के बाद भी मैं अटक गया होता तो ? परंतु नहीं । मैं अभी भी उन ही सपनों की दुनिया में जी रहा था । कोई नहीं मानेगा, परंतु यह सत्य है, मैं पागल ही था, ऐसा नक्की कह सकते हैं ।

मुझे वापस बैंक लोन लेनी थी । परंतु मेरा पुराना बैंक क्रेडीट रेकोर्ड तो खराब ही था । इसलिए बजाज आदि बड़ी बैंक लोन देने के लिये तैयार नहीं थी । परंतु मेरे नीचे काम करनेवाले जो स्टाफ के इंसान थे, उन्हें तो बैंकलोन मिल सकती थी । क्योंकि उनकी क्रेडीट थोड़ी भी खराब नहीं थी । इसलिए मैंने मेरे नीचे काम करनेवाले दो लोगों को लालच दी । उल्टी-सीधी बातें करके लोन लेने के लिये तैयार किया और बजाज फाइनान्स में से उन्हें रु. ५ लाख और ७० हजार की लोन उठाई, उसमें से मैंने थोड़े पैसों से पुराने कर्ज को चुकाया और बाकी सभी पैसे डाले शेरमार्केट में ! और थोड़े ही टाईम में वापस वे सभी पैसे साफ ! शेर मार्केट ऐसा समुद्र है कि उसमें नदी का मीठा पानी कितना भी डालो, वह सब उसमें कहाँ समा जाता है वह पता ही नहीं चलता, यानि कि अपने डाले हुए लाखों-करोड़ों रुपये शेरमार्केट में स्वाहा हो ही जाते हैं ।

मैंने नये ग्राहको को ढूंढना चालु ही रखा कि, जो खुद के नाम से लोन ले, और मुझे पैसे दे, और मैं उन सभी को सपने दिखाता कि "आपके इन पैसों को मैं दुगना-तीनगुना करके दिखाऊंगा ।"

मेरा दुर्भाग्य कि मुझे ऐसे ग्राहक मिल ही जाते थे... आज-कल मंहगाई बहुत है, मौज-शोख सभी को पसंद है... इसलिये सभी को जल्दी पैसे चाहिए और ज्यादा चाहिए । इसलिए हमारे जैसों की लालच रुपी जाल में वे सभी जल्दी फंस जाते ।

एक तरफ मैंने गलत बिल कर-करके जो पैसे उठाये थे, उसे चुकाने के लिये पैसे नहीं थे, तो बीच में जो इंसान था, उसने टाइम खिंचने के लिए मुझे कहा कि "तू और बड़ी रकम का बिल बना..." और मैंने भी पागल की तरह उसकी बात का स्वीकार किया और ऐसे करके पांच महिने खिंच दिये । और उन महीनों में मैंने जो पैसे लिए थे, वे सभी इस गलत बिल की आती रकम से चुकाता गया, परंतु बीच के इंसान ने ट्रान्सपोर्ट को पैसे चुकाए नहीं और ई.स. २०२२ ऑक्टोबर में उस ट्रान्सपोर्टरने कंपनी में फोन लगाकर कहा कि "आपकी कंपनी को हमें रु. ८ लाख ६५ हजार चुकाने हैं..." और वे गलत बिल वोट्सअप पर कंपनीने भेज दिये ।

यह मेटर मेरे डीपार्टमेन्ट में आता था, इसलिए मेरे डीपार्टमेन्ट में इन्कवायरी आई, बिल बनाने का काम तो मेरा ही था । मुझे अब उस बात को स्वीकारे बिना कोई चारा नहीं था, और मैंने वह बात स्वीकार कर ली । परंतु जितने बिल पकड़े गये, उसकी ही भूल स्वीकारी, भूतकाल के बिलों की बात छुपाकर रखी, क्योंकि उसके प्रुफ नहीं थे । मैंने तब बहुत गलत कहा, मेरी नौकरी बचाने के लिये जबरदस्त प्रयत्न किये, उस बीच के इंसान ने भी मुझे वायदा दिया कि "वे सभी पैसे दो महीने में चुका देगा ।" और मैंने भी ट्रान्सपोर्टर के साथ डायरेक्ट बात की, टाईम खिंचने का प्रयत्न किया ।

मैंने कंपनी के सेठ को विनंति की, "ऐसी भूल वापस नहीं होगी ।" ऐसा विश्वास दिया । ३ महिने की मुदत मांगी, सेठ भी मान गये और नौकरी में से मुझे निकाला नहीं...

इस समय के दौरान मैंने और स्टाफ के दो लोगों को फुसलाकर बैंकलोन निकलवाई ।

ई.स. २०२२ में लगभग जुलाई में मुझे किसी ने मटके का चटका लगाया । और मैंने उसमें प्रवेश कर लिया । "रातोरात सभी पैसे कवर करके लखपति बन जाना और नोकरी छोड़ देना ।" ऐसे तुक्के मन में आते ही रहते थे, मेरा मन अब नौकरी में - काम में लगता नहीं था । मेरे महीने का ब्याज चुकाने का इतना बढ़ गया कि मेरा पूरा वेतन भी उस ब्याज को चुकाने में कम पड़ता था । इसलिये ही तो किसी भी जगह से, किसी को भी बहला-फुसलाकर पैसे लेने से मैं नहीं अटका, नहीं ही अटका...

मैंने नई योजना का विचार किया । बड़ी बैंक मुझे लोन नहीं देती, परंतु

छोटी लोकल बैंक तो लोन देती है, और मैंने इस तरह लोन लेना चालु किया। उस लोन से मेरी पुरानी बैंक में मेरे क्रेडीट रेकोर्ड को अच्छा बना दिया, और यहाँ हर महीने लोन भरने के लिये नई-नई लोन लेता ही गया, यह पूरा विषचक्र चलता ही रहा।

जिस बीच के इंसान की बातों पर आकर मैंने कंपनी के गलत बिल बनाये थे, उसने ई.स. २०२३ मार्च तक ट्रान्सपोर्टर को रु. ५ लाख चुका दिये, और मुझे कहा कि, "मुझे कार लेनी है, तो तू तेरे नाम से कारलोन लेकर मुझे देना ! मैं बाद में चूका दूंगा।"

बैल के जैसी बुद्धि मेरी। मैं खुद ही कर्ज के पहाड़ के नीचे दबा हुआ था, तो भी उसकी बात में आकर मैंने कहीं से कारलोन लेकर दी। मैंने मेरी कंपनी में मेहनत कर-करके नाम कमाया था, परंतु उस इंसान की अनीति के कारण से मेरा नाम खराब हुआ था। उस ही इंसान के लिये मैंने मेरे नाम से कारलोन लेकर दी।

उसने तीन-चार महीने तो कारलोन बराबर भरी, परंतु फिर उसने भी किसी कारणसर लोन भरने में गड़बड़ करना चालु कर दिया। लोन तो मेरे नाम से ही थी, इसलिए लोन देनेवाली बैंक तो मुझे ही पकड़ेगी ना। और मैं कंपनी में नौकरी करता था, अगर मैं लोन नहीं भरता हूं, तो वापस मेरा नाम खराब हो जाएगा, कंपनी का सेठ मुझे निकाल देगा, इसलिए मैं कुछ भी करके किसी के पास से पैसे ले-लेकर लोन के हफ्ते भरता था, और उस बीच के इंसान के पीछे लोन के हफ्ते के लिए घुमता था।

मेरे पापकर्म और ज्यादा उदय में आये, मुझे और एक नया इंसान मिला। उसने बिल्डर को बिल्डिंग बनाने के लिए पैसे दिये थे, और बिल्डर ने एक फ्लेट उसके लिये रखा था। उस इंसान ने कहा कि, "तू यह फ्लेट तेरे नाम पर रजीस्टर कर ले, उसके बदले में रु. ७ लाख तुझे उपयोग के लिए दूंगा।" उसके वायदे में मैं आकर्षित हो गया। मेरे सिर पर तो भूत सवार ही था कि, "मुझे पैसे चाहिए।"

ई.स. २०२३ अप्रिल में मैंने मेरे नाम पर बैंकलोन लेकर वह फ्लेट मेरे नाम पर रजीस्टर करवाया। परंतु जो ७ लाख मुझे मिलनेवाले थे, वे मुझे आज तक मिले नहीं है। वह इंसान टोपी बदलनेवाला निकला, वह मुझे कहता है कि

"मेरे पैसे दूसरे प्रोजेक्ट में फंसे हुए है । वे मुझे मिलेंगे, तो मैं तुझे तुरंत पैसे दे दूंगा ।" उसके इस वायदे को छः महीने हो गये परंतु अभी तक पैसे नहीं मिले हैं ।

इस तरफ ई.स. २०२३ मई में मेरा बैंक रेकोर्ड अच्छा हो जाने से मैंने बैंक की लोन की अपडेट का फायदा उठाकर रु. ५ लाख ५ हजार की नई लोन ली । उस समय तो मुझे ऐसे ही था कि मुझे रु. ७ लाख आनेवाले हैं । (उन्होंने आलोचना दिसम्बर २०२३ में लिखवी है, इसलिए अप्रिल से लेकर दिसम्बर तक छः- आठ महीने हो गये हैं । इसलिए उन्होंने ऊपर लिखवा है कि छः महीने हो गये हैं, अभी तक वे ७ लाख आये नहीं ।)

बस, मेरे मन पर अहंकार सवार हो गया । ५.५ लाख मेरे हाथ में लोन के और ७ लाख आने का वायदा... "साड़े बारह लाख रुपये मेरे पास है ।" यह भूत मेरे दिमाग पर सवार हो गया है और जो परमोपकारी सेठ ने मुझे भावनगर के बाद पहलीबार नौकरी पर रखवा था, वापस बुलाकर दूसरी बार रखवा था, बिल के गड़बड़ में मैं नंगे हाथ पकड़ा गया था फिर भी उन्होंने मुझे माफ करके तीसरीबार रखवा था, उनकी नौकरी छोड़ देने का मैंने निर्णय ले लिया । कंपनी के काम में मेरा सेठ के साथ झगड़ा भी हुआ, कंपनी को उस समय बहुत प्रोब्लेम भी थे, अभी मुझे कंपनी को सहायता करने की जरुरत थी, उस सेठ ने मेरे पूरे परिवार को आत्महत्या करने से बचाया था... परंतु मैं बन गया कृतघ्न ! सभी उपकार भूल गया और एक झटके से मैंने वहाँ की नौकरी छोड़ दी । वह समय था ई.स. २०२३ जून महीना ! पैसे का गुमान मेरे मन पर सवार हो गया था ।

मेरा पापोदय और भी बढ़ा कि इतना सब होने के बावजूद उस ही कंपनी के चार इंसान मेरे पास आये "हम पांच लोग साझेदारी में शेरमार्केट का धंधा करते है ।"

उन्हें पैसे की लालच, और वे ऐसे समझे कि, "मैं शेरमार्केट में मास्टर हूं ।" बिचारों को ध्यान ही नहीं कि "मैं शेरमार्केट में पैसे खोने में मास्टर हूं ।"

हम पांच लोगों ने इकट्ठे होकर ई.स. २०२३ अगस्ट में शेरट्रेडींग चालु की । मार्केट में से उल्टा-सुल्टा करके सभी ने १४ लाख रुपये उठाये, उन बिचारों चारों लोगों ने मुझ पर भरोसा रखकर इतना बड़ा स्टेप लिया और मुझे

पूरी सत्ता दी क्योंकि "मैं शेरमार्केट का सालों से अनुभवी था ना !" मुझे तब तो लगता था कि "अब मेरा सब व्यवस्थित हो जाएगा और ४-५ महीने में तो सब कर्ज पूरा कर दूंगा और एक अच्छी लाईफ स्टाइल जीऊंगा ।"

परंतु यहाँ भी मेरी लालच ने सब कुछ सत्यानाश कर दिया । एक कदम भरने के बदले मैंने एक साथ दस कदम भर दिये । रातोरात पैसेदार बनने के चक्कर में बड़े रीस्क लेने चालु कर दिये । और हर महिने जब हम पांच इकट्ठे होते, तब उनको थोड़ा प्रोफीट या लोस बता देता और टाईम खिंचता रहता । इस तरह मेरे पास मेरी लोन के हफ्ते भरने के पैसे नहीं थे, तो मैंने चारों में से किसी को कहे बिना ३ लाख २० हजार मेरे एकाउन्ट में ट्रान्सफर कर दिये और मैंने उसमें से मेरे हफ्ते भरे ।

वह ट्रान्सपोर्टर मेरी कंपनी के पास वापस बिल की शिकायत लेकर न आये, उसके लिये उसे २.२५ लाख चुका दिये । ये पैसे वैसे तो उस बीच के इंसान को ही भरने थे, परंतु बिल तो मैंने फाड़े थे, यह अपराध मेरा गिना जाता था, इसलिए मैंने चुकाये ।

बीच के इंसान ने मुझे वायदा किया कि, "ये २.२५ लाख और कार के ३५ हजार का हफ्ता ये दोनों मैं तुझे दूंगा ।" परंतु वह "देता हूं, देता हूं" करता रहा, और आज तक उसके पास से एक भी रुपया वापस नहीं आया ।

हम जो पांच लोगों ने व्यापार चालु किया था, उसमें मेरी लालच और निपुणता नहीं होने के कारण से ६ लाख और ४० हजार का लोस हो गया, और मैंने जो मेरे खाते में गुप्त तरह से ट्रान्सफर किये थे, उस ३ लाख और २० हजार का लोस भी हुआ था । ऐसे ९ लाख ६० हजार यानि कि १० लाख तक का नया नुकसान हम पांच लोगों के बीच व्यापार में हुआ, जिसका जिम्मेदार एकमात्र में ही था ।

ई.स. २०२३ के नवम्बर महिने में इसका भांडा फुटा और मुझे मेरे पार्टनरों को सच्चा हिसाब देना पड़ा ।

हमारे पांच में एक तो पुलिस में होमगार्ड था, और उसकी बड़े अधिकारीओं के साथ अच्छी पहचान थी । उसने मेरे उपर पैसे देने के लिये प्रेशर किया, और अंत में मैंने हरेक पार्टनर के नाम पर उस-उस रकम का चेक लिखवकर दिया, और उन्हें कहा कि, "दि. १० नवम्बर के बाद आपको इस

चेक के पैसे मिलेंगे, उसके पहले चेक पास नहीं होगा ।"

इस तरह, उन चार को तो मैंने थोड़ा ठंडा किया, उन्हें आशा बंधी कि "यह भव्य १० नवम्बर तक कुछ भी व्यवस्था कर लेगा ।"

नवम्बर महिने के मेरे नाम के बैंक के सभी ही हफ्ते वापस गये थे, क्योंकि मेरे खाते में पैसे ही नहीं थे । इसलिए वे लोन देनेवाले भड़कने ही वाले थे और ये जो १० नवम्बर के बाद चुकाने के लिए दिए हुए रु. १० लाख के चेक का तो बड़ा संकट सिर पर ही था ।

और मैंने सालों पहले का निर्णय वापस लिया, "आत्महत्या का..."

इतने समय से माता-पिता मेरी गतिविधियों उथल-पाथल को मूक मुख से देख रहे थे, मेरी फालतू बातों को सुन रहे थे, और सहन भी कर रहे थे । इसलिए मेरी आत्महत्या की बात सुनकर उन्हें झटका जरुर लगा, परंतु आश्चर्य नहीं हुआ, मैंने उन्हें बड़ी मुश्किल से समझाया और अंत में माता-पिता ने मुझे अनुमति दी कि, **"जा ! बेटा ! अब दूसरा कोई रास्ता ही नहीं बचा है, तो तू कर ले आत्महत्या..."**

ये कोई देश के लिए शहीद होने के लिये जा रहे बेटे को देशप्रेमी माता-पिता आशिष दे कि "देश के लिए मर मिटना ।" ऐसे आशिष नहीं थे, परंतु मजबूरी के कारण से ६० साल की उम्र में कंटाल गये माता-पिता की आत्महत्या के लिये हा थी ।

उसके बावजूद घर में आठ दिन तक तो इसके लिये बहुत चर्चा चली कि "क्या करना ? आत्महत्या करनी ? या भाग जाना ? या पुलिस में कम्प्लेन करना कि मुझे मार डालने की धमकी दी जा रही है ?"

अंत में निर्णय हुआ कि "तारीख नौ नवेम्बर ई.स. २०२३ के दिन ट्रेन में पटरी के नीचे सोकर मर जाना ।"

परंतु उस विचार से घबराहट चालु हो गई, और इस विचार को छोड़कर नक्की किया कि, "नहीं, आत्महत्या नहीं करनी है, परंतु यहाँ से भाग जाते है । सालों पहले जैसे भावनगर छोड़कर भागे थे, वैसे अब वापस भागकर कहीं जाने का नक्की किया ।"

आत्महत्या करने का विचार और उसे केन्सल करने का विचार क्यों आया ? इन दोनों का कारण भी बता देता हूं। मेरे नाम की रु. १ करोड़ की

एल.आई.सी. थी । मुझे ऐसे हुआ कि अगर मैं मर जाऊं, तो मेरे माता-पिता को रु. १ करोड़ मिलेंगे, तो दक्षिण का कर्ज और गांधीधाम का कर्ज भी चुका देंगे और उसके बाद ३०-४० लाख बचेंगे, उसमें मेरे माता-पिता शांति से जी लेंगे-जीवन बिताएंगे । मैं जीते जी तो उन्हें सुख नहीं दे सका, कम से कम मरते-मरते तो उन्हें सुख दूं । इसलिए आत्महत्या का निर्णय किया, परंतु जांच करने पर पता चला कि "अगर स्वाभाविक मृत्यु हो, तो ही कंपनी १ करोड़ रुपये देती है । कोई आत्महत्या करें, तो उसको तो १ रुपया भी नहीं मिलता है ।"

इसलिये यह निर्णय केन्सल करना पड़ा ।

इसतरह आठ दिन ये ही सोचा था कि "मैं किस तरह मर जाऊं, तो वह नॉर्मल मत्यु ही साबित हो । वह आत्महत्या साबित नहीं हो..." परंतु ऐसा कोई उपाय नहीं मिला । सभी में डर था कि "यह बात पता चल ही जायेगी ।" और इसलिये आत्महत्या का विचार केन्सल किया था ।

साहेबजी ! हमारी कैसी परिस्थिति होगी कि मेरे माता-पिता मुझे बहुत ही चाहने के बावजूद मेरी आत्महत्या के लिये भी तैयार हो गये, और उसके लिए उपाय ढूंढने की चर्चा में भी इन्वोल्व हुए । कितनी हदबाहर की उनकी मजबूरी होगी ना !

और ई.स. २०२३ दिनांक ८ नवेम्बर की रात को हमने दक्षिण छोड़ दिया । हम वापस भागे और पहुंच गये मुंबई ! परंतु इस समय सिर्फ पहनने के दो-तीन जोड़ी कपड़े और सभी के लिए एक-एक थाली-कटोरी-ग्लास का सेट और ठंडी के सामने रक्षण प्राप्त करने के लिये थोड़ी चीजें... इन सभी की बेग भरकर हम सभी वहाँ से भाग गये । पूरा भरा हुआ घर छोड़कर भाग जाने के लिये मैंने मेरी माता को दूसरी बार मजबूर किया । वह बिचारी हर बार मुझे कहती कि, "भव्य ! इस अनीति के व्यापार को बंद कर दे । कुछ नहीं मिलेगा, तो चलेगा... हम रुखा रोटला खा लेंगे ।" परंतु मैं स्वार्थी और बुद्धि बिना का बारदान ! मैंने मम्मी की एक भी बात पर ध्यान दिया नहीं था ।

हम मुंबई दि. ९ नवम्बर को पहुँचे, हमारा कोई नहीं था, हम एकदम अनाथ थे । हम तीनों के फोन हमने बंद कर दिये थे । क्योंकि कर्जदार फोन करे या पुलिस फोन करे तो पुलिस मोबाइल ट्रेस करके हमें पकड़ सकती

थी । उससे बचने के लिये हमने हमारे मोबाइल को तोड़ दिया, ताकि हमारा कोई कोन्टेक्ट नहीं कर सके, पुलिस भी हमें पकड़ नहीं सके ।

परंतु अब क्या ? रहना कहाँ ? खाना क्या ? हम फुटपाथ पर रहनेवाले भिखारी की तरह एकदम ही अनाथ-बेघर थे ।

पापा को कठोर दिल से कहना पड़ा, "भव्य ! तेरे साथ में रहकर-घुम कर हम सहन कर-करके थक गये । अब हम अगर अलग हो जाये तो अच्छा है । भगवान की कृपा होगी और भविष्य में वापस मिलने का लिखा होगा तो मिलेंगे..."

मम्मी आहटें भर-भरकर रोने लगी ।

मेरे भी आघात का पार नहीं था ।

"आप कहाँ जाओगे ?" मैंने बहुत मुश्किल से पूछा ।

आंसु के साथ पापा बोले, "वीरपुर सौराष्ट्र की तरफ जाएंगे । सुना है कि वहाँ बहुत वृद्धाश्रम है, किसी वृद्धाश्रम में हमें सहारा मिल जाएगा, तो अंतिम जिंदगी वहाँ ही बीता देंगे ।"

"परंतु कोई वृद्धाश्रम आपको नहीं रखे तो ?" मैंने धड़कते हृदय से सवाल पूछा ।

"तो ?" पापा बोले, "फूटपाथ पर बैठकर भीख मांगकर पेट भरेंगे... आज भी भारत के लाखों गरीब इस ही तरह जीते ही है ना !"

वे कटाक्ष में नहीं बोल रहे थे, उनके शब्दों में सत्यता थी, हकीकत में इस तरह जीने की तैयारी थी ।

३५ साल का युवान बेटा जिंदा होने के बावजूद माता-पिता वृद्धाश्रम या अंत में फुटपाथ पर रहने की तैयारी के साथ बेटे से अलग हो रहे थे, और बेटा माता-पिता को प्रेम करने के बावजूद भी कुछ कर नहीं सकता था ।

मैंने पापा के चरणों में गिरकर आशिष लिए । पापा मुझे आशिष देकर रोये । "बेटा अब गलत कदम मत उठाना..." बस, उनका गला रुंध गया । वे आगे कुछ बोल नहीं सके ।

मम्मी के चरणों में गिरकर आशिष लेने गया, मम्मी मुझे गले लगाकर आहटें भर-भरकर रोने लगी । अब हम हमेशा के लिये अलग होनेवाले थे और मोबाइल के सीमकार्ड तोड़ दिये थे उसके कारण हमारे बीच कोई

कोन्टेक्ट होनेवाला नहीं था ।

मम्मी ने बहुत प्रेम दिया और चिंता के साथ पूछ ही लिया कि, "बेटा ! तू कहाँ जायेगा ?"

और अचानक मुझे तेलंगना राज्य का १४०० साल प्राचीन तीर्थ **कुलपाकजी** याद आ गया । इस तीर्थ की मैंने दो बार यात्रा की थी । वो भव्य प्रतिमाएँ और तीर्थ का शांत वातावरण मुझे खिंचने लगा और मैंने कह दिया "अभी तो मैं कुलपाकजी जाऊंगा, वहाँ प्रभु की भक्ति करुंगा; बाद में क्या ? वह भगवान ही जाने ।"

साहेबजी ! मेरे पिता की उम्र ६२ साल है, और मम्मी की ५९ साल ! इस उम्र में भी उन्होंने सिर्फ मेरे जीवन के लिये ऐसा तकलीफ वाला रास्ता स्वीकार किया ।

उनके पास थोड़ी रकम थी, वे वह लेकर सौराष्ट्र वीरपुर की तरफ चले गये । वहाँ जलाराम बापा की बहुत महिमा है... और मैं मुंबई से पहुँचा हैद्राबाद ! और वहाँ से कुलपाकजी जाकर पांच दिन रुक गया ।

ई.स. २०२३ नवेम्बर ता. ११ से १५ पांच दिन मैं कुलपाकजी रुक गया । प्रभु माणिक्यस्वामी यानि कि महावीरस्वामी वहाँ बिराजमान ! अतिप्राचीन मंगलकारी प्रतिमा मूलनायक प्रभु आदिनाथ ! उन पांच दिनों में ही दिवाली आई, दि. १४ के दिन दिवाली ! मैंने १३-१४-१५ ये तीन दिन वहाँ मंगल के लिये आयंबिल किये । बहुत भाव के साथ प्रभुभक्ति की, "सच्चा रास्ता दिखलाना ।" ऐसी तीव्रभाव से प्रार्थना की और मेरी प्रार्थना और मेरे आयंबिल सक्सेस हुए ।

वहाँ से वापस हैद्राबाद आया । पू. देवर्षि म. मिले । उन्हें सब बात की, उन्होंने मुझे विजयवाडा उपधान में जाने को कहा । मैंने मेरे मोबाइल के लिये नया सीमकार्ड ले लिया था, परंतु वह मोबाइल हैद्राबाद ही छोड़कर मैं पहुंच गया विजयवाडा ! देवर्षि म. की लिखी हुई चिट्ठी आपको दी । आप मेरे लिए क्या सोच रहे हो ? वह तो पता नहीं, परंतु आपके इतने दिनो के प्रवचनों से मेरे में मेरे दोषों को स्वीकार करने की हिंमत आई । अरिहंतधाम के मूलनायक शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा के पास जाकर प्रार्थना की और आलोचना लिखने का प्रारंभ किया । और सच्चे भावों के साथ, किसी भी प्रकार के माया-कपट के

बिना मैंने यह १२० पेज लिखे है । उसमें मेरी जिंदगी का सबसे खतरनाक पाप यह है, जिसने मेरी और मेरे साथ बहुत सारे लोगों की जिंदगी बर्बाद की है ।

उपधान में किसी के साथ मैं बात नहीं करता, किसी के साथ मिक्स नहीं होता । शायद कुछ बात निकल जाये और मुझे उतर देना पड़े, तो ऐसे ही कहता हूं कि, "हम सौराष्ट्र के है... बस ! दक्षिण की बात कहने में डर लगता है । क्योंकि कही किसी भी तरह लीक हो जाये, और दक्षिण के उन-उन स्थान की बात जाहिर हो जाये, तो वहाँ के कर्जदार मेरे पास पैसे मांगेंगे ही । और पैसे तो मेरे पास तो है ही नहीं ना ! कोई ज्यादा पूछे तो कहता हूं कि, "महाराष्ट्र में नौकरी करता था, वह मैंने छोड़ दी है । अब उपधान खत्म होंगे, उसके बाद कुछ नया चालु करुंगा ।"

"हम सौराष्ट्र के है ।" यह जो कहता हूं, यह मेरी बात तो सच्ची ही है । हम मूल सौराष्ट्र के ही है । परंतु हमारा सौराष्ट्र में कुछ भी नहीं है, और अब तो हमारा कहीं भी कुछ भी नहीं है । नहीं सौराष्ट्र में या नहीं दक्षिण में ! इसलिए ही किसी भी ग्रुप में जोइन्ट होने में बहुत डर लगता है, क्योंकि बातों-बातों में लोग तो पूछेंगे ही कि "क्या काम-काज ? परिवार में कौन-कौन ?" तो उसने सभी को सच्चा उत्तर देने की ताकत नहीं है । और मुझे अब गलत बोलने का पाप करना नहीं है ।

मेरे इस झूठ बोलने के कारण से भावनगर में और दक्षिण में बहुत सारे मध्यम वर्ग के स्त्री-पुरुष, कुछ सग्गे-संबंधी, हमारा घर खरीदनेवाले और थोड़े मित्र कितने आर्थिक नुकसान और मानसिक दुःख सहन कर रहे हैं, वह तो भगवान ही जाने...

मुझे याद आता है कि, बचपन से ही मेरे में झूठ बोलने के संस्कार थे, वे मुझे बड़े होने के बाद भी हैरान करनेवाले बन गये । बचपन में किसी प्रकार का विशेष कारण नहीं होने के बावजूद बहुत झूठ बोला है । स्कुल में गोटी और चम्मच की रेस थी । चम्मच में गोटी रखकर भागना व गोटी नहीं गिर जाये यह ध्यान रखना, उसमें पहला आना... इसमें मैंने भाग लिया था, परंतु में जीता नहीं था । स्कूल में भाग लेनेवाले सभी को दो-दो चोकलेट मिली थी । मैंने घर पर जाकर मम्मी को कहा कि, "मेरा दूसरा नंबर आया है, इसलिए मुझे दो चोकलेट मिली है । जिसका पहले तीन में नंबर नहीं है, उन्हें कुछ भी नहीं ।"

इसके द्वारा मैंने यह बताया कि "मेरा नंबर आया है ।" परंतु यह बताने की जरूरत ही नहीं थी । बस, मेरा बड़प्पन दिखाने के लिये मैंने यह पाप किया था ।

स्कुल में गणित की नोटबुक कभी भरी ही नहीं । और घर में बताई ही नहीं । जब फाईनल परीक्षा के पहले स्कुल के टीचर को वह बुक बताने का समय आया, तब घबरा गया, मम्मी को आजीजी की और मम्मी के पास भरवाकर वह बुक जमा करवाई । बाकी पूरा वर्ष तो कुछ न कुछ गलत बोलता ही रहा ।

स्कुल-कॉलेज में चोरी की और करवाई, एक साल तो ऐसा किया कि, स्कूल में पीछे बैठते लड़के को परीक्षा में पूछता, वह मुझे सच्चा उत्तर देता, और वह जब पूछता तो मैं जानबूझकर गलत उत्तर देता, जिससे उसके मार्क्स कम आये... मेरे से आगे नहीं बढ़ जाये ।

पांचवीं कक्षा में पढ़ता था, तब ट्युशन का जो टाईमटेबल था, उसमें से मैंने इंग्लीश विषय ही निकाल दिया । बहुत दिनों के बाद ट्युशन के टीचर ने टाईम-टेबल देखा, और इंग्लीश नहीं देखते वे गुस्सा हो गये, मैंने तुरंत कहा, "आपकी छोटी लड़की ने यह गड़बड़ की है ।"

साहेबजी ! शेरबाजार में मैंने दूसरा तो कुछ सीखा नहीं, परंतु गाली बोलने का सीख लिया । पैसे तो गुमा दिये, परंतु खानदानी भी खो दी, जब शेरबाजार में इन्वोल्व नहीं होता, तब मुझे कुछ तकलीफ नहीं आती । परंतु शेरमार्केट में जुड़ा होता था और उसमें मुझे नुकसान हो जाये, तो फिर क्रोध में गंदी गालियाँ भी बोल देता था ।

दक्षिण में जहाँ नौकरी करता था, वहाँ कंपनी में लेबरवर्ग लगभग सभी गालियाँ बोलते थे, अरे ! माता-बेटी पर भी गालियाँ बोलने में उनकी जीभ अटकती नहीं थी । मैंने लोगों को माता-बहन पर भी गालियाँ सहजता से दी है और उसके अलावा गालियाँ तो चने-ममरे की तरह बोला हूं।

दक्षिण में हमारी असलियत छुपाने के लिए बोला था कि "हम पुना में रहते थे ।" परंतु उसके अलावा मेरे पर कर्ज रु. ..... लाख का है, वह सब छोड़कर भागा हूँ। इसके कारण से सामान्य वेतनवाले अनेक लोग मुश्किली में आ गये हैं, और पता नहीं कि वे कैसे-कैसे कषायों में फंसे होंगे ।

गुरुदेव ! मैं इतना ज्यादा नीच हूं कि मैंने मेरे माता-पिता - दादी पर

भी भारी कषाय किया है । शुरुआत में मेरी और पापा की शेरमार्केट के लिये बात होती और उसमें जब मतभेद हो जाता, तब मैं क्रोध में आकर ऐसी Rude भाषा बोल देता कि वे हताश होकर बैठ जाते । मैंने उनकी सलाह लगभग मानी ही नहीं है, और शायद इस कारण ही मैं एकदम निर्धन बनकर बैठा हूं...

शेरबजार की बातों में ऐसी गरमागरमी पापा के साथ कुछबार हुई कि मैंने उन्हें गुस्से में आकर धक्का मारा और वे कुर्सी पर बैठे थे, तब कुर्सी को भी धक्का दिया है ।

मेरी दादी ७० साल में मर गई । अंतिम अवस्था के समय उन्हें गुदा की प्रोब्लेम थी और डॉक्टरों के इन्जेक्शन के साइड-इफेक्ट के कारण से उनके दिमाग पर और दांत पर असर हुई । इन सभी के कारण से एक तो वे लगभग शय्यावश बन गये और उनका बर्ताव विचित्र बन गया । उसमें भूल उनकी नहीं थी, परंतु साहेब ! मैं अधम, अधमाधम...

मैंने मेरी दादी को गुस्से में आकर मारा है ।

मैंने मेरी दादी के दोनों हाथ गुस्से में पीछे की तरफ बांधे हैं ।

मैंने मेरी दादी को जलते मोम से चटके देने का घोर पाप भी किया है ।

मैंने ऐसा विचार भी किया कि, "दादी को बाहरगांव जा रही ट्रेन में अकेले बिठा देते हैं । बाद में उनका जो होनेवाला हो, वह हो ।"

मैंने उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया है, और एकबार भावनगर में ही वे दुःखी होकर बोले थे कि, "तेरा-तेरे कुल का उच्छेद होगा, धनोत-पनोत निकलेगा ।" और उनका ये श्राप मेरे जीवन में आज एकदम सच्चा साबित हो गया हो, ऐसा लग रहा है ।

मैंने मेरी दादी को गंदी गालियाँ भी दी है । दि. १७ जुलाई २०१६ के आठ दिन पूर्व उन्हें सोने की जगह ही पेशाब हो गया, तब मैंने ऐसे कहा कि, "वह प्रमाद के कारण से जानबूझकर ऐसा कर रही है । उन्हें उठने का कंटाला आता है, इसलिए शय्या में पेशाब करती है ।" और मैंने क्रोध में उन पर हाथ भी उठाया था ।

अरे, मैं अधमाधम ! शरीर में किसी अंग के दर्द को मिटाने के लिये जंगली लहसुन का तेल आता है, उस तेल के बूंद मैंने मेरी दादी के आंखों में डाले । कैसी क्रूरता ! परमाधामीता ! तुच्छता ! यह सब दि. १ जुलाई से दि. १२

जुलाई तक की बात समझ लो ।

दि. १७ जुलाई ई.स. २०२३ रविवार का दिन था । उन्होंने नवकार गिने । पापा के हाथ (उनके बेटे के हाथ से) पानी लिया, पीया और उनका मुंह खुल्ला रह गया । उन्होंने उस ही अवस्था में प्राण छोड़ दिये । शायद अंतिम के चार दिन हम उन्हें समाधि दे सके ।

मैंने ये जो घोर कर्म किये हैं, वे मुझे कब और किस स्वरुप में भोगने पड़ेंगे यह सोचकर ही मुझे डर लगता है ।

म.सा. ! मेरे जीवन का भयंकर धोखा मैंने मेरी मम्मी के साथ किया है । उसने मुझ पर भरोसा करके भावनगर में मेरा बनाया हुआ प्लान खुद के परिचितों को बताया, और मम्मी के कहने से भी बहुत लोग जुड़े और अंत में सभी को नुकसान हुआ, इसलिए मम्मी का नाम भी बिगड़ा ।

मम्मी ने खुद के पियर में और बाद में ससुराल में दिन-रात जबरदस्त मेहनत की है । उसने मुझे हमेशा कहा है कि "मेहनत से सुखी रोटी मिलेगी, तो भी चलेगा, परंतु सिर ऊंचा करके जीना ।" परंतु मुझ पर अंधविश्वास और अंधप्रेम... उसने मेरी सभी बातों को सच मानकर सपोर्ट किया...

गुरुदेव ! अंतिम ५५ दिन से मैं मेरे माता-पिता से अलग हो गया हूं । दि. १० नवम्बर २०२३ मुंबई में हम अंतिमबार साथ में थे, वहाँ से अलग हुए । आज यह लिख रहा हूं, तब दि. ५ जनवरी २०२४ का दिन है । बस ! दस दिन के बाद मेरी मोक्षमाला है । परंतु मेरे माता-पिता कहाँ है ? वह मुझे पता ही नहीं है ।

गुरुदेव ! आज पता चलता है कि क्या माता का प्रेम था ? मेरे लिये उसका जीव कितना जलता था ? परंतु अब पछतावा करके भी क्या मिलेगा ? मुझे वापस माता-पिता मिलेंगे ? पता नहीं है, कब मिलेंगे ? कहाँ मिलेंगे ? पता नहीं । मिलेंगे या नहीं ? ये ही बड़ा प्रश्न है ।

मैंने धर्म की बहुत आशातना भी की है । युवानी में एकबार मैं और मेरे जैन-जैनेतर मित्र साथ में चल रहे थे, और उसमें धर्म के बारे में चर्चा निकली । तो बीच में मैंने तिरस्कार के साथ कह दिया कि, *"जैनधर्म is in my foot.."* जैनधर्म तो मेरे पैर में है । उस समय जैन मित्रों ने मुझे ऐसा बोलने से मना किया था, परंतु मैं मेरी बात पर मजबूत था, मुझे इसमें थोड़ी भी भूल नहीं लगी । आज इस भूल का एहसास हो रहा है ।

मैं दक्षिण में फेक्टरी में काम करता था, अच्छी पोस्ट पर था, तब एक तरफ मेरे गलत धंधे चालु थे, तो दूसरी तरफ सभी में "मैं अच्छा हूं, धार्मिक हूं।" ऐसी छाप खड़ी करने के लिए दो काम करता था। (१) रोज रु. ५० की रोटी गरीबों को देता, (२) और रोज सुबह प्रक्षालपूजा करने जाता था। मेरी यह धार्मिकता को देखकर भी कितने ही मुझे अच्छा मानकर मेरे जाल में फंस गये, आज तो वे मेरे कारण से धर्म को गाली देते होंगे, धर्म पर द्वेष करते होंगे।

अरिहंतधाम में गीत सुना, **"माता-पिता को वंदना"**... उससे एकदम उल्टा मैंने मेरे जीवन में माता-पिता के साथ किया। उनकी जीवनशय्या में कांटे ही भर दिये हैं, तो भी मुझे सौ प्रतिशत विश्वास है कि वे दोनों इतना कुछ होने के बावजूद आज भी मुझे कोसते नहीं होंगे और "मेरा हित हो।" यह ही चिंता करते होंगे।

आज लगभग ५५ दिन से उनसे अलग हूं। "उनका क्या हुआ ?" उसके कोई समाचार नहीं है। आज उनकी किंमत पता चल रही है। जब हम साथ में थे, तब मैंने मम्मी की दिल से प्रशंसा की होती कि, "मम्मी ! तू सुपर मम्मी है, कितना अच्छा खाने का बनाती है। मुझे मेरी सभी चीजे रेडी करके देती है। मैं कब कहाँ जाऊंगा ?" उस अनुसार कपड़े और भोजन सब तैयार रखती है। मैं खाने की कोई भी फरमाइश करूं, वह तू कुछ भी करके एडजस्ट करके बनाकर देती है, चाहे तेरे पास टाईम नहीं हो।"

ऐसी कुछ भी तारीफ करके मेरी मम्मी के अंतर को खुश रखा होता, तो उनकी कृपा से मेरी बुद्धि इतनी हद तक तो भ्रष्ट नहीं ही होती।

यह तो कैसा था ? मुझे वेतन बिना की नौकरानी मिल गई थी मेरी मम्मी ! नहीं कोई बड़ी इच्छाएँ, नहीं कोई बड़ी डीमांड ! यह सब अभी समझ में आ रहा है कि जब कुदरत ने मुझे उनसे दूर कर दिया है। मैंने जगत का सबसे निःस्वार्थ प्रेम मेरे पास से खो दिया।

बस, साहेब ! आपके सामने मेरे जीवन की किताब खोल दी है। अब आप मुझे अच्छा प्रायश्चित्त दो... मुझे शुद्ध करो। बीच में सुरत गया था, तब **पू.आ. रत्नसुंदर सू.** के मुख से ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया था। उन्हें तो शायद याद भी नहीं होगा।

"इस भव में मुझे मेरे माता-पिता वापस मिलेंगे या नहीं ? वह बड़ा प्रश्न है । साहेबजी ! आप ही कहो ना, क्या मुझे मेरे माता-पिता वापस मिलेंगे ? आज मेरे जीवन का सबसे श्रेष्ठ काम मैंने किया है - उपधान ! थोड़े ही दिनों में माला है । परंतु मेरी मोक्षमाला में तो कोई भी नहीं है, चाहे, कोई नहीं भी हो, तो चलेगा... परंतु सिर्फ मेरे माता-पिता भी होते ना, तो भी चलता । मेरी खुशी का पार नहीं रहता । उन्हें भी खुद के इस शैतान बेटे को संत जैसा बना हुआ देखकर कितना आनंद होता... परंतु वह तो अभी किस तरह शक्य बनेगा ?....

साहेबजी ! आप का बहुत उपकार कि आपके प्रवचनों को सुनकर मुझे भव-आलोचना करने के भाव जागृत हुए, और मैंने मेरे सभी गुप्त पाप आपके सामने पेश कर दिये । बस, अब मुझे शुद्ध करो, पवित्र करो, पावन करो..."

**(यहाँ भव्य की आलोचना के कुछ भाग पूर्ण होते हैं ।)**

पढ़ते-पढ़ते कब मेरी आंखे नम हो गई, पता ही नहीं चला । उनकी आलोचना में तो अन्य भी पाप लिखे हुए हैं, १२० पृष्ठ है, परंतु मैंने जो जरूरी बातें थी वे यहाँ बताई है । उसके असत्य बोलने के छोटे में छोटे संस्कारों ने बड़े होने पर बड़े संस्कारों को जन्म देकर उसे स्व-पर का नुकसान करनेवाला महामृषावादी बना दिया ।

और उसने की हुई हिंसा, क्रूरता, धर्म की निंदा... इन सभी ने उसे सतत निष्फलता की ओर ही धकेल दिया, और इतना ज्यादा दुःखी कर दिया कि वह खुद ही मरने के लिये तैयार हो गया ।

फिर भी मुझे उस पर द्वेष नहीं आया । उसके बदले प्रभुवचनों पर और प्रभुक्रिया पर अतिशय बहुमानभाव बढ़ा । उसने पांच दिन कुलपाकजी में भक्ति की, तीन आयंबिल किये, ४५ दिन उपधान की उत्तम क्रियाएँ की और 45 X 4=180 घंटे व्याख्यान तो मीनीमम सुना । इन सभी का कैसा प्रभाव कि उसने सरलभाव से खुद के सभी के सभी पापों का स्वीकार कर लिया । आत्मा कर्माधीन है, और जिनवचन + जिनोक्तक्रिया कर्मनाशक है । ये दोनों वस्तु मेरे मन में दृढ़ तरह से बैठी ही थी, वह ज्यादा दृढ़ हो गई ।

मैंने भव्य को बुलाया । गोद में मस्तक रखकर वह रो पड़ा । उसके सिर पर प्रेम से हाथ घुमाकर मैंने इतना ही कहा, "प्रभु के शरण में आया है, तो प्रभु तेरी रक्षा करेंगे ।" आदि आश्वासन के शब्द कहे । उसकी आलोचना लिखी हुई नोट के अंतिम पृष्ठ पर प्रायश्चित्त लिखकर दिया ।

**"शक्य हो तो**

(१) आजीवन रात्रीभोजन बंद (महिने में पांच दिन छूट...)

(२) शराब + परस्त्री + जुगार + सट्टे + शेयरबजार + मटका... यह सब बंद...

(३) सिगरेट + हुक्का आदि बंद...

(४) परस्त्रीगमन बंद... (उन्होंने तो संपूर्ण ब्रह्मचर्य ले लिया है, वह मुझे बाद में पता चला ।)

(५) खराब वीडियो देखना ही नहीं ।

(६) रोज एक सामायिक (महिने में ५ दिन की छूट) ।

(७) रोज पूजा (महिने में ५ दिन की छूट) ।

(८) रोज जैन मिडिया वीडीयो देखना (महिने में ५ दिन छूट) ।

(९) हर महिने पांच आयंबिल ।

(१०) सामायिक में अच्छी-अच्छी पुस्तकों का वांचन ।

(११) गुरुवंदन + चैत्यवंदन + सामायिकसूत्र इन तीन के सूत्र + अर्थ + विधि..."

भव्य छोटे-छोटे लोगों के पैसे चुका दे, तो अच्छा... ऐसी हमारी इच्छा थी और आज भी है, परंतु भव्य के पास पैसे ही नहीं है, तो चुकाये किस तरह ? आज दुनिया में अनेक लोग और जैन भी २००-५०० करोड़ रुपयों में उठ जाते हैं, और पैसे चुकाते नहीं है । और फिर भी समाज में बिन्दास्त जीते हैं... परंतु यह गलत है । और हमारे पास मार्गदर्शन लेने को आये हुए भव्य को हम गलत रास्ता बताना चाहते नहीं है । उसकी कुल देने की रकम तो १ करोड़ भी नहीं । उसमें भी छोटे इंसानों को चुकाने की रकम तो ५० लाख के आस-पास भी मुश्किल से होगी ।

"भव्य ! तेरे कोई परिचित है सही ? कि जिन्हें तेरे माता-पिता का ख्याल हो ?" मैंने भव्य को यह बात पूछी, क्योंकि मेरे मन में एक भावना जागृत हुई कि "आज भव्य के रोमरोम से एक ही भावना बाकी बची थी कि "मेरे माता-पिता मुझे मिले । वे मेरी मोक्षमाला देखे..."

"म.सा. ! इतने सालों के मेरे कारनामों के बाद कोई सग्गे सग्गे रहे नहीं है । इसलिये ही तो दक्षिण से वापस घुमे, तब हमने किसी की मदद मांगी नहीं । मम्मी के फुफा ने हमें दक्षिण में सेट कर दिया, परंतु उन्हें भी अब तो कुछ भी पता नहीं होगा... फिर भी उनका नंबर याद है, शायद मम्मी-पापा ने उनका कोन्टेक्ट किया हो..."

भव्य ने नंबर दिया, फुफा के साथ बात हुई । वे खानदान इंसान थे, परंतु उनके पास भी भव्य के माता-पिता का कोई कोन्टेक्ट नहीं था । इसलिए उनके पास से माता-पिता का कोन्टेक्ट होने की आशा तो मर गई थी...

"भव्य ! मम्मी-पापा ने किस जगह जाने को कहा था, वह पक्का याद है ?"

"हाँ साहेबजी ! मैंने आपको लिखा है ना कि वे सौराष्ट्र में वीरपुर जाने का कह रहे थे, वहाँ एक वृद्धाश्रम है । जलाराम बापा की महिमा बहुत है । वहाँ रोज हजारो लोगों को मुफ्त खाना दिया जाता है, सदाव्रत चलता है । मम्मी-

पापा को यह बात मन में आई ही होगी कि "कम से कम पेट भरने का तो मिल जायेगा । पैसे तो पास में है नहीं, अगर दूसरी जगह जाएंगे, तो पैसे के बिना खाएंगे क्या ? यहाँ तो सदाव्रत में रुपये लेते नहीं है । तीन टाईम खाना देते हैं..."

अब उसके बाद वे कहाँ होंगे ? वह तो पता नहीं है । परंतु उस ही एरिया में होने चाहिए...

साहेबजी ! मेरे कारण से आज माता-पिता को सदाव्रत का खाकर जिंदगी पूरी करने का समय आया... अरेरे !"

मैंने उसे आश्वासन दिया, अब इस तरह रोने से कुछ होनेवाला नहीं था ।

अरिहंतधाम के अरिहंत परमात्मा शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान ने हमें इन ३५ दिनों में अनेक पुण्यकार्य करवाकर दिये थे । अशक्य लगती चीजे शक्य बनाई थी... अजैन स्टाफ ने नवकार सीखा । वाड़ा साफ करनेवाले पालिताणा की बहनों ने आयंबिल शुरु किए थे, अजैन स्टाफ में उपवास के दिन एक घंटा प्रवचन होता था । ऐसी तो अनेक बातें थी ।

राजकोट वीरपुर से नजदिक का शहर ! और राजकोट के हमारे बहुत परिचित श्रावक थे, क्योंकि दस साल पहले वहाँ **पू.आ. हंसकीर्तिसूरिजी म.** की निश्रा में हमने चातुर्मास किया था । मैंने वहाँ के एक श्रावक **प्रीतेशभाई** को फोन करवाया । संक्षेप में सब बात बताई, और एक काम सौंपा कि "वहाँ के वृद्धाश्रमों में आप चेक करो कि, "नवेम्बर की १० तारीख के बाद वहाँ कोई वृद्ध कपल आया है ।"

वे तुरंत इस काम के लिये तैयार हो गये । उन्होंने फोटो मंगवाया, परंतु भव्य के पास फोटो नहीं था, तो सामान्य वर्णन कर दिया कि, "भाई की उम्र ६२ साल है, पतले हैं, हाइट भी नोर्मल है, सिर पर बाल नहीं है और बहन की उम्र ५९ साल है । वे भी पतले हैं... आदि ।"

दूसरे दिन उनका फोन आया, "म.सा. ! दो-तीन वृद्धाश्रमों में ढूंढा, परंतु कहीं भी १० नवेम्बर के बाद आये हुए किसी कपल का पता चला नहीं है । फिर भी अगर उनका फोटो मुझे मिल जाये, तो मेरे लिये काम सरल हो जायेगा ।"

भव्य ने कहा, "हैद्राबाद में मेरा जो फोन पड़ा है, उसमें फोटो है।"

हमने हैद्राबाद में विराजित **पू.पं. विरागरत्न म.** का कोन्टेक्ट करके उनके द्वारा वहाँ उसके मोबाइल में से माता-पिता का फोटो निकलवाकर प्रीतेशभाई को भेजा। यह सब काम मेरे शिष्य **मुनि हेमगुण वि.** बहुत चतुराई के साथ और उत्साह के साथ कर रहे थे। हमने प्रीतेशभाई को कहा, "एक-दो बार और ट्राय करो... शायद मिल जाये।"

परंतु आशा घटती जा रही थी।

दूसरी तरफ उपधान में मेरा प्रवचन १०.३० से १२.०० रहता था। बाकी के प्रवचन अन्य महात्मा देते थे। मैं प्रवचन देने गया था। हेम म. और भव्य इस तरह उपाश्रय में बैठकर क्या करना ? इस के विचार-विमर्श में थे।

मुझे पक्का याद नहीं है, परंतु उपधान का लगभग ३७-३८वां दिन होगा। मोक्ष-माला का दिन एकदम नजदिक आ गया था। उपधान कठिन साधना है। उपवास + नीवी सतत करना, अंत में ८ आयंबिल + २ उपवास करना... रोज चार देववंदन, दो प्रतिक्रमण, १०० खमासमणे, १०० लोगस्स... यह सब आसान नहीं होता। इसलिये उपधान में प्रवेश करने वाले के मन में एक डर तो होता ही है कि, "हमसे यह पूर्ण होगा या नहीं ?" और लगभग हरेक उपधान में कुछ विकेट गिरती ही है। परंतु अब तो किनारे पर आ गये थे। अब तो सभी निर्भय बन गये होते हैं। खुद की मोक्षमाला की राह देख रहे होते है, सभी को खुशी होती है। संसारीओं को स्वजनों का राग बहुत होता है, इसलिए सभी स्वजनों को बुलाना, उनकी व्यवस्था करना... उसमें सभी लग ही जाते हैं। खुद के लिये नये-नये कपड़े भी बना देते हैं। अंतिम दिनों में हरेक आराधक अत्यंत खुश होते हैं।

३७-३८ वें दिन का मेरा प्रवचन चल रहा था, सभी अच्छी तरह सुन रहे थे। कुल ११० मोक्षमाला थी, उस प्रवचन में ही एक नई जाहेरात की, "देखो, मैंने अब तक तुम्हें ऐसा कहा था कि, "मोक्षमाला अंदर के होल में होगी।" वहाँ तो हजार लोग भी मुश्किल से बैठ सकेंगे, इसलिए आप सभी चिंता में थे ना कि यह तो पूरा प्रोग्राम बिगड़ जायेगा, बराबर..." सभी ने हामी भरी।

तो अब आप कोई चिंता मत करना। मैंने निर्णय बदल दिया है, आप सभी की मोक्षमाला तीर्थ के विराट मैदान में होगी। जहाँ चार-पाँच हजार लोग

एकदम सहलता से बैठ सकेंगे । अब तो आपको जितने मेहमानों को बुलाना होगा, आप बुला सकोगे, अंदर होल में अगर होता तो हरेक को मेहमानों के लिये ११-११ पास ही देने थे, बाकी के मेहमानों को मैदान में एल.इ.डी. स्क्रीन पर देखने का था । उसमें आपको चिंता थी कि "किस १० मेहमानों को पास दे ? क्योंकि किसी को गलत लग जाये तो ?" परंतु अब तो सभी प्रकार की चिंता निकाल दो, क्योंकि पास व्यवस्था ही नहीं है ।"

"बोलो, शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की जय ।" सभी आराधकोंने एकदम खुशी के साथ जय बुलाई । उनकी कक्षा के अनुसार उनकी चिंता एकदम सच्ची थी । एक-एक के अंगत स्वजन बहुत होते हैं, उसमें से सिर्फ ११ को ही चुनना हो, तो अति भारी हो जाता है । जिन ग्यारह को ले, उनके अलावा के बाकी को दुःख होने की शक्यता पक्की । उन्हें गलत लगे, अपमान लगे, उनके संबंध बिगड़ जाये... यह सब देखना जरुरी तो था ही । और वे मेरे पहले के निर्णय के लिये मुझे कुछ कह सकते नहीं थे, परंतु उनकी चिंता मैं समझ गया था । और ११० माला का माहौल होल में शोभता नहीं है, उस विशाल मैदान में ही शोभता है, वह भी हकीकत ही है । यह सब सोचकर मैंने इस निर्णय को बदला था, और उसके कारण से सभी आराधको की खुशी अतिशय बढ़ गई ।

मुझे सभी के फेस पर वह परम प्रसन्नता दिखाई दे रही थी ।

आठ-दिन के बाद मोक्षमाला...

समुद्र तैर जाने का एहसास...

चार-पाँच हजार इंसानों के बीच माला...

अब तो खुले मैदान में माला...

स्वजनों को गलत लगेगा इससे संपूर्ण चिंतामुक्त माला...

इसलिए ही सभी के मुख से सहज तरह से ही प्रभु के नाम की जय निकली थी ।

यह माहौल देखकर मैं भी अत्यंत खुश हो गया था, आराधको की योग्य खुशी में मेरे जैसे को तो खुशी होगी ही, होगी और होगी ही ।

परंतु उस ही समय मुझे भव्य याद आया । उसका आंसु से भीगा चेहरा याद आया । उसके चेहरे पर उभरती बैचेनी याद आई । मेरे जिनशासन के श्रावक-श्राविका कोई सदाव्रत में गरीबी के कारण से मुफ्त का खाना लाते हुए

नजर के सामने दिखाई देने लगे । शायद शायद कभी किसीने उनका अपमान भी किया होगा कि "अभी भोजन को देरी है, राह देखो..." और पेट में जबरदस्त भूख होने के बावजूद दीन बनकर राह देखते वे माता-पिता नजर के सामने दिखने लगे । उन वृद्धों को दिन में तीन-चार बार चाय पीने की आदत होगी ही, परंतु अब तो एक समय भी उन्हें चाय के लिये विनंति करनी पड़ती होगी... यह याद आया ।

और ११० आराधको की खुशी के साथ-साथ उस एक आराधक की पीड़ा मुझे सताने लगी । मेरा चेहरा बदल गया, मेरे शब्द बदल गये... मेरे आंसु का प्रवाह बदल गया...

"सुनो, आराधकों !

आप सभी आज बहुत खुश हुए, और इसलिये मैं भी खुश हुआ ।

परंतु आपको पता है ? जिसने हम सभी के साथ में यह ३७-३८ दिन आराधना की है, जो आप सभी के साथ में ही मोक्षमाला पहननेवाली है, ऐसी एक आत्मा हम सभी के बीच होने के बावजूद बहुत दुःखी है ।

वह आपका - मेरा सभी का भाई है, परंतु हम सभी खुश और वह अत्यंत दुःखी... यह बात मुझे बहुत दुःखी करती है ।"

और मेरी आंखों में से धड़-धड़ आंसु बहने लगे । मेरी आवाज रुंध गई । सभी को सच्ची बात तो पता नहीं थी, परंतु मेरे आंसु ने उन सभी को भी गीला-गीला कर दिया ।

"वह कौन है ? वह तो अभी नहीं कहूंगा ।

वह क्यों दुःखी है ? वह भी अभी नहीं बताऊंगा ।

बस, इतना कहुंगा कि "आप सभी की मोक्षमाला में तो कितने सारे लोग आएंगे ना ? वे आपको शाता पूछेंगे... परंतु इस एक आत्मा की मोक्षमाला में कोई नहीं आयेगा, उसके सग्गे माता-पिता इस दुनिया में जीवित होने के बावजूद भी वे भी नहीं पहुँचेगे...

अपना भाई, अपने साथ में ४५ दिन आराधना करनेवाला अपना भाई इतना दुःखी हो तो क्या हम खुश हो सकते हैं ? क्या हम उसके दुःख में सहभागी नहीं बनेंगे ?"

सभी को थोड़ी-थोड़ी बात समझ में आई, सभी खुद के आराधक के दुःख में अवश्य दुःखी बने, परंतु "यह आत्मा कौन है ? और उसे ऐसा दुःख

क्यों है ?" यह जानने की तीव्र उत्सुकता सभी के मुख पर स्पष्ट दिख रही थी। सभी भूल गये कि "हमें तुरंत वापरने जाना था क्योंकि टाइम हो गया है..."

"देखो, अभी तो सभी को वापरने जाना है। यह काम हम से नहीं होगा, यह काम परमात्मा ही करेंगे। आज शाम को मंदिर में प्रभु को हमारे उस एक आराधक के लिये प्रार्थना करेंगे, सच्चे भाव से प्रार्थना करेंगे, मैं सभी बात तो अभी नहीं कर सकुंगा... परंतु जब-जब जो उचित लगेगा, तब-तब इस बाबत में सभी को बताऊंगा। बस, आज सभी को देरासर में शाम को भक्ति में बहुत भाव के साथ प्रार्थना करनी है।"

आंसु चालु थे, और प्रवचन पूर्ण करके मैं प्रवचन होल में से नीचे उतर गया। हमारा प्रवचन होल और हमारे रहने के उपाश्रय के बीच विशाल मैदान ! कम से कम २०० कदम ! मैं गोचरी के लिये उपाश्रय की तरफ रवाना हुआ। मैं उपाश्रय पहुंचा, उस बाहर के खुले पेसेज में हेम म. + भव्य बैठा हुआ था, और एक गृहस्थ श्रावक मोबाइल के साथ बैठा हुआ था। मुझे देखने के साथ ही तीनों खड़े हो गये। और एकदम खुश हो गये। हेम म. बोले, "गुरुजी ! भव्य के मम्मी-पापा मिल गये हैं..."

"क्या ?" मेरे आश्चर्य का और आनंद का पार नहीं रहा। भगवान को हम शाम को इकट्ठे मिलकर प्रार्थना करनेवाले थे, परंतु देखो ना भगवान कैसे करुणासागर है, कि हम प्रार्थना करे उसके पहले ही, हम सिर्फ प्रार्थना करने का संकल्प करते है और प्रभु अपनी प्रार्थना को सफल कर देते हैं।

"किस तरह मिले ?" मैं भी उत्सुकता से खड़े-खड़े ही पूछने लगा। हेम म. ने विस्तार से बात की...

"आपने भव्य के मम्मी-पापा का फोटो भेजा था ना, इसलिए काम सरल हो गया। प्रीतेशभाई आज वापस वृद्धाश्रमों में गये। उसमें अभी थोड़ी देर पहले ही एक वृद्धाश्रम में पहुंचे, वहाँ के मेनेजर को दो फोटो दिखाये कि, "ये दंपती नवेम्बर १० तारीख के बाद यहाँ आया है सही ?" पहले तो उस मेनेजर ने ध्यान से फोटो देखा, और फिर प्रीतेशभाई की तरफ शंका की नजर से देखते हुए उन्होंने पूछा, "आप उनके कौन होते हो ?"

प्रीतेशभाई ने उनके चेहरे पर से और उनके पूछे हुए प्रश्न पर से यह जान लिया कि, "उन्हें इस कपल के बारे में कुछ पता है ? नहीं तो वह मुझे

ऐसा सवाल नहीं पूछता ।"

प्रीतेशभाई दिखने में एकदम सज्जन इंसान है, हकीकत में भी सज्जन है, भाषा भी एकदम मीठी है... उन्होंने मेनेजर को प्रेम से बात बताई कि, "मैं तो उनका कुछ होता नहीं हूं, परंतु उनके बेटे ने उनकी तलाश करवाई है । बेटा उनके साथ बात करना चाहता है..."

मेनेजर को विश्वास बैठ गया । उसने उन्हें कहा कि, "हाँ ! ये दोनों यहाँ ही है । वे अभी भोजन करने बैठे होंगे । वे आएंगे, फिर आपका मिलाप करवा दूंगा ।"

बस इतनी बात हुई और हम उनके फोन की राह ही देख रहे थे और आप आये ।"

वहीं ही पास में खड़े हुए श्रावक का मोबाइल बज उठा । सभी की उत्कंठा एकदम बढ़ गई । श्रावक ने दो ही सैकंड में फोन उठा लिया, और इशारे से कहा कि, "प्रीतेशभाई ही है..."

"देखो, म.सा. पास में है ? भव्य है ? यहाँ उसके मम्मी-पापा पास में ही खड़े है और भव्य को देखना चाहते हैं, तो वीडियो कॉल हो सकेगा ?" भव्य ने मेरी तरफ देखा, मैंने ऐसी परिस्थिति में हामी भरी, "दोनों परस्पर देख ले, तो एकदम फिक्स हो जाएगा ।"

और वीडीयो कॉल में माता-पिता और भव्य एक-दूसरे के सामने आ गये । ऐसे तो सिर्फ ५७ दिन का ही अंतर पड़ा था, परंतु ५७ साल के बाद वापस मिलते हो, ऐसी खुशी भव्य के मुख पर छलक रही थी । भव्य रो रहा था, तो माता-पिता तो आहटें भर-भरकर रो ही रहे होंगे, यह सीधी ही बात थी ।

"भव्य ! तू कैसा है ?" माता की आवाज सुनाई दे रही थी ।

"मम्मी ! मैं एकदम मजे में हूं । मम्मी ! मैंने उपधान किये हैं, और बहुत अच्छी तरह पूरे होने को आये हैं । मेरी मोक्षमाला है । मम्मी-पापा आप मजे में हो ना ?" भव्य ने पूछ तो लिया, परंतु उसे ध्यान आया कि "माता-पिता वृद्धाश्रम में रहकर मजे में किस तरह हो सकते हैं ?"

फिर भी उत्तर अच्छा मिला, "हाँ भव्य ! हम यहाँ अच्छी तरह से जीवन पसार कर रहे हैं । हमें कोई तकलीफ नहीं है । यह संस्था बहुत ही अच्छी है ।"

मैंने हेम म. को कहा, "आप यहाँ सब संभालो, मैं आराधको को यह शुभ समाचार देकर आता हूं..." और गोचरी वापरे बिना ही वापस २०० मीटर

चलकर भोजनशाला में पहुंचा । लगभग सभी आराधक वापरने बैठ गये थे । मैंने दो मिनिट के लिए सभी को शांत किया । परोसने का बंद रखवाया और बड़ी आवाज में जाहेरात की कि, "आप सभी के लिए आज आनंद का दिन है । आप जिसके लिये शाम को भगवान के पास प्रार्थना करनेवाले थे, वह कार्य प्रार्थना करने के पूर्व ही पूर्ण हो गया है, वह अभी ही पूरा हुआ है । मैं विस्तार से आपको बाद में बताऊंगा । बस, इतना ही कहना है कि अब हमें प्रभु को प्रार्थना नहीं करनी है, परंतु प्रभु का उपकार मानना है... प्रभु को थेंक्यु कहना है ।"

सभी को कुछ विशेष तो पता नहीं चला, परंतु "बहुत अच्छा हुआ है ।" यह तो पता चल गया । इसलिए सभी खुश हुए ! अभी तक किसी को यह बात पता ही नहीं थी कि "किस आराधक के लिए यह सब बात हो रही है ?"

मैं गया वापस उपाश्रय !

सबसे पहले तो हेम म. को सूचना की कि, "प्रीतेशभाई को कह देना कि माता-पिता को अब वृद्धाश्रम में नहीं रखे । अभी आपके साथ ही आपके घर लेकर जाओ । फिर आगे क्या करना ? वह बाद में आपको बताऊंगा !"

और मैं एकासणा करने बैठा । दीक्षा हुई, तब से ही नित्य एकासणा ! **पू. गुरुदेव** ने दिए हुए संस्कार आज २९ साल पसार होने के बाद भी काम करते हैं । बहुत ही मजा आती है एकासणे में !

एक बात तो भूल ही गया । आज जब मैंने व्याख्यान में भव्य की बात नाम के बिना शोर्ट में की थी, तब सभी के साथ हेम म. के सग्गे भाई **कुणालभाई** भी रो पड़े थे । उन्होंने पूरे उपधान अट्ठम + नीवी... अट्ठम + नीवी... इस तरह किये थे । और हरेक अट्ठम किसी न किसी विशिष्ट संकल्प के साथ किए थे । उस दिन उनको नया अट्ठम शुरु करना था, तो उन्होंने उस ही समय खड़े होकर कहा था कि, "मेरा यह अट्ठम अपने उस आराधक को संपूर्ण शाता समाधि मिले, उसके लिए रखता हूं..." तब सभी बहुत खुश हुए थे । मैंने जाहिर में अट्ठम का पच्चक्खाण भी दिया था । यह भी एक बड़ा मंगल था ।

गोचरी वापरकर बाहर आया, तब जानने मिला कि "वृद्धाश्रम में से निकलने की तैयारी में है । दस्तखत करना आदि अंतिम विधि हो रही है ।"

प्रीतेशभाई ने फोन पर बताया कि "यहाँ के मेनेजर इन दोनों से बहुत खुश है, क्योंकि दोनों एकदम शांत है । कोई शिकायत नहीं, कोई मांग नहीं,

जो हो-जितना हो, उसमें ही सब चला लेते हैं । और बहन तो इतने एक्टीव है कि खुद रसोईघर में - भोजनशाला में भोजन के समय सभी को परोसने का काम भी करते हैं । हमें तो एक भी रुपये के वेतन के बिना की कार्यकर मिल गई है ।"

मेनेजर कह रहे हैं कि "आपको वापस आना पड़े ऐसी इच्छा रखता नहीं हूं। आप अपने बेटे के साथ एकदम प्रसन्नता के साथ जीवन बिताओ, परंतु मानो कि भविष्य में वापस यहाँ आने की जरुरत पड़ जाये, तो हमारे दरवाजे आपके लिए हमेशां के लिये खुल्ले हैं ।"

प्रीतेशभाई ने भी खुद के सज्जनता से भरे हुए व्यवहार से मेनेजर का विश्वास जीत लिया था, इसलिए वहाँ काम जल्दी से पूरा हो गया था । वृद्धाश्रमों में सरकारी कोई भी प्रोब्लेम खड़ी ना हो, इसलिये सबकुछ कायदेसर किया जाता है । वृद्धों की अचानक मृत्यु हो तो संस्था उन्हें अग्निदाह दे सकती हैं या नहीं ? वृद्ध यहाँ रहते हैं, उसमें उनके संतान आदि की संमति है या नहीं ? आदि बहुत सारी बाबतें उसमें कारणवश स्पष्ट करनी पड़ती हैं ।

प्रीतेशभाई कपल को लेकर घर आ गये, और मैंने उन्हें बता दिया कि, "ये माता-पिता २४ घंटे में विजयवाड़ा-अहिंतधाम पहुंच सकेंगे सही ? मेरी इच्छा है..."

प्रीतेशभाई ने मेहनत चालु की, हमने भी यहाँ होशियार श्रावक को काम पर लगाया । वहाँ अहमदाबाद से जल्दी सुबह की ट्रेन थी, वो विजयवाड़ा पहुँचाये... पहले तो ऐसा निर्णय हुआ कि, "राजकोट से कार में अहमदाबाद स्टेशन और वहाँ से ट्रेन में विजयवाड़ा !" परंतु उसमें बहुत समय बिगड़ रहा था और बड़ी उम्रवाले दोनों पूरी रात कार में बैठ-बैठकर सफर करें, उसके बाद २४ घंटे ट्रेन में मुसाफरी करें, तो वे बहुत थक जाएंगे ।

फिर दूसरा विकल्प मिला, राजकोट से ही हैद्राबाद फ्लाइट में, और हैद्राबाद से ३०० कि.मी. कार में अहिंतधाम !

दूसरा विकल्प फीक्स किया गया । प्रीतेशभाई ने दोनों वडीलों को बहुत अच्छी तरह खाना खिलाया, साधर्मिकभक्ति की, जरुरी रकम दी, और सुबह जल्दी एरपोर्ट पर ले जाकर फ्लाइट में बिठा दिया । रास्ते में कुछ भी काम पड़े तो ? तो उसके लिये खुद का एकस्ट्रा सीमकार्डवाला एक छोटा मोबाइल भी उन्हें दे दिया । थेपला आदि नास्ता भी भर दिया । दोनों वड़ील मूक रहकर यह

सभी खुशी को महसूस कर रहे थे, भगवान की अपार करुणा अनुभव कर रहे थे ।

अरिहंतधाम में उस समय हमारे साथ चेन्नई के एक युवक नीतिनभाई उपस्थित थे । अंतिम के दस दिन के लिए सेवा में आये थे । बड़ा बिजनेस होने के बावजूद शासन के कार्य में कहीं भी दौड़कर जाते हैं, तन-मन-धन लगा देते हैं । उनकी मम्मी ने - भतीजे ने खरतरगच्छ में दीक्षा ली है । वे खुद भी खरतरगच्छ के ही है । वे इस पूरे कार्य में इन्वोल्व ही थे । उन्होंने हैद्राबाद खुद के मित्र केतनभाई को फोन किया । वे भी खरतरगच्छ के, उनके बहन ने भी दीक्षा ली हुई है । साध्वी महाप्रज्ञाश्रीजी उनका नाम है । ये सभी ऐसी आत्मा कि खुद के गच्छ को समर्पित सही, परंतु शासन के कार्यो के लिये सभी गच्छों के साथ पूरा प्रेम रखनेवाली ! नीतिनभाई ने केतनभाई को यह काम सौंपा । उन्होंने खुशी-खुशी काम का स्वीकार कर लिया । "नीतिन ! शक्य होगा, तो मैं ही आऊंगा । नहीं तो मेरा ड्राइवर मेरी कार में उन्हें वहाँ रखने आ जाएगा ।"

केतनभाई एरपोर्ट गये, वड़ीलों को खुद के घर ले जाकर अच्छी तरह नास्ता करवाया, और फिर फटाफट खुद की कार में ड्राइवर के साथ अरिहंतधाम के लिए रवाना किया ।

इस तरफ भव्य और उस तरफ दोनों वडील सिर्फ एक ही बात का इंतजार कर रहे थे कि "हम एक दूसरे को कब मिले ।"

प्रीतेशभाई ने फोन पर हमें बताया कि, "दोनों वड़ीलों का स्वभाव अच्छा है, परंतु धार्मिकता नहीं है । जैनधर्म के आचारों का पालन आदि नहीं है ।"

मुझे हंसना आ गया । मैंने उन्हें बताया कि, "अच्छा स्वभाव भी जैनत्व का ही एक भाग है और अभी हम जो कर रहे हैं, उससे उनमें जैनत्व प्रगट होगा ही, उन्हें जैनधर्म के लिए अतिशय सन्मान होगा ही, आप वह चिंता मत करो ।"

हैद्राबाद से कार निकल गई, और हमें मेसेज मिल गये कि, "ड्राईवर का नंबर यह है, और लगभग ढाई-तीन बजे वे अरिहंतधाम पहुंच जाएंगे ।"

मैंने १०.३० से १२.०० बजे के प्रवचन में कहने जैसी बहुत सारी बाते सभी को बता दी ! अब भव्य को प्रगट किया, लोग लगभग सभी बातों को अब समझ सके । सिर्फ भव्य की भूलों को उस समय विस्तार से बताया नहीं था,

क्योंकि तब उसकी जरूरत नहीं थी । यह उपधान का एक श्रेष्ठ कार्य होनेवाला था । हम तो कल्पना भी नहीं कर सके, वैसी घटना हो रही थी... यह सब कुछ परमकृपालु परमात्मा की ही कृपा थी !

आराधकों ने माता-पिता और भव्य के मिलन का एक सुंदर प्लान बना दिया था । ड्राइवर को कह दिया गया कि, "वह कार तीर्थ के बाहर ही खड़ी रखे, अंदर नहीं लाये ।"

इस तरफ सभी आराधक दो-ढाई बजे देरासर के बराबर नीचे आ गये... एक तरफ बहनें लाइन में खड़ी रही, दूसरी तरफ सभी भाई लाइन में खड़े रहे ।

मैं तीर्थ के गेट के बाहर गया । १०० कदम दूर कार खड़ी थी । मेरे संसारी कझीन **तुषारभाई** भी मेरे साथ ही थे । दोनों वड़ील कार में से नीचे उतर गये । मुझे हाथ जोड़े, उनके लिये तो यह एक एकदम ही नई दुनिया शुरु हो गई थी । कल दोपहर तक तो वृद्धाश्रम में एक अनाथ कपल की तरह मुफ्त का खाना पड़ता था, और अचानक चौबीस घंटों के दौरान मान-सन्मान, फ्लाइट, कार और बड़े-बड़े लोगों की तरफ से मिलता रीस्पेक्ट ! ऐसे समय उनके पास आभार के लिये शब्द भी नहीं होते । उन्हें यह सब आता भी नहीं है । ये सब फोर्मालिटी बड़े लोगों को जमती है, ऐसे सीधे-सादे इंसानों का तो फेस ही हजारो आभार शब्दों को प्रगट कर देता है । और उस फेस पर रहे हुए हजारों शब्दों को पढ़ने की छोटी शक्ति पू. गुरुदेवश्री के कारण से मुझे भी थोड़ी तो मिली ही थी । लोग धर्म में जुड़े इसलिए प्रवचन देना यह मेरी मुख्य प्रवृत्ति ! परंतु कभी लोगों को धर्म में जुड़वाने के लिये ऐसी प्रवृत्ति भी करनी पड़ती है । और बहुतबार तो १०० प्रवचन से भी ऐसी एक ही प्रवृत्ति ज्यादा असरकारक बन जाती है...

तुषारभाई ने खुद के दोनों हाथों में दोनों वड़ीलों के हाथ पकड़े और वे तीर्थ के गेट की तरफ चलने लगे । उनकी ये चतुराई-यह स्टाइल मुझे अच्छी लगी । वे बहुत सच्चे भाव के साथ यह प्रवत्ति कर रहे थे ।

माता-पिता ने तीर्थ के गेट में प्रवेश किया ।

माता-पिता ने जैसे ही गेट में प्रवेश किया कि तुरंत सभी आराधक भगवान की जय आदि बोलने लगे, वहाँ के स्पीकर पर प्रभुभक्ति के गीत शुरु हो गये । हरेक के मुख पर अजीब प्रकार की खुशी थी । माता-पिता तो जीवन में प्रथमबार ही ऐसा श्रेष्ठ सन्मान पा रहे थे । संपत्ति नहीं, सत्ता नहीं, रुप नहीं,

युवानी नहीं, शिक्षण नहीं... परंतु जिनशासन के श्रावक-श्राविका... बस ! इस एक कारण से वे यह सन्मान पा रहे थे । उन दोनों के लिये मौन ही अब हर्ष प्रगट करने का एक मात्र साधन बना था । अतिशोक में या अतिहर्ष में इंसान को बोलने के लिये शब्द नहीं मिलते ।

माता-पिता जब आराधकों की दो लाइन के बीच से गुजरे कि तुरंत ही सभी आराधक उन्हें चावल से वधाने लगे... उनकी खुशी तो बढ़ती ही जा रही थी, परंतु मुझे खयाल आ गया कि, "उनकी प्यासी आंखे प्यारे बेटे भव्य को ढूंढ रही थी..." कल ही दोपहर १२:०० बजे उन्होंने वीडीयोकॉल में भव्य को देखा ही था । परंतु हरेक माता-पिता यह बात समझ सकते हैं कि इतने सारे विचित्र प्रसंग होने के बाद खुद के बेटे को देखने के लिये वे माता-पिता कैसे तड़पते होंगे !

शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा का मंदिर ऊंचाई पर है । बहुत सीढ़ीया चढ़नी पड़ती है । फिर भी नीचे चलने के रास्ते पर पैर ऊंचे करके देखो, तो प्रभु के दर्शन होते हैं ।

बराबर, प्रभु की नजर पड़े, ऐसी जगह माता-पिता पहुंचे होंगे, और सरप्राइझ देने के लिये छुपाकर रखा गया भव्य माता-पिता के सामने प्रगट हुआ ।

पौषध में था भव्य !

पिता-बेटे की आंखों में अनराधार आंसु हर्ष के !

फिर पापा के चरणों में झुककर आशिष लिये भव्य ने !

खुद की अनंतोपकारी माता को तो भव्य कैसे भूलेगा ?

परंतु वहाँ गले मिलना या पैर को स्पर्श करना शक्य नहीं था भव्य के लिये ?

जमीन पर ही झुककर खमासमणा की मुद्रा में माता को वंदन किये भव्य ने ।

हाँ ! चावल से माता-पिता को वधाया भव्य ने !

बाद में सभी भगवान के दर्शन करने के लिए देरासर में चढ़े ।

वहाँ की प्रदक्षिणा बहुत बड़ी, परंतु भव्य और माता-पिता ने तीन प्रदक्षिणा दी भगवान शंखेश्वर पार्श्वनाथ को !

वहाँ तक हम रंगमंडप में प्रभु की भक्ति के गीत गा रहे थे - सुन रहे

थे ।

उसके बाद तीनों के साथ सभी प्रवचन हॉल में पहुंचे । समय बहुत हो गया था, प्रासंगिक थोड़ी बातें बताकर सभी खुद-खुद की आराधना में लग गये...

शाम को माता-पिता मुझे मिलने आये । शायद उन्हें वंदन करने के सूत्र भी नहीं आते थे, परंतु भाव से उन्होंने कर दिये ।

"मिले बेटे को..." मैंने पूछा ।

"हाँ ! वह बहुत खुश है, और हम भी !"

"खाना खा लिया ? रहने की व्यवस्था हो गई...?"

"हाँ जी ! सभी बहुत ही भावुक है । सभी तरीके से हमें सहायक बने हैं ।"

"आपको अनुकूलता हो, तो यह बता सकते हो कि मुंबई से सौराष्ट्र गये, फिर क्या हुआ ?"

"पहले तो हमने तलाश करके दो-तीन वृद्धाश्रमों में पूछा-पूछताछ की, हमें वहाँ रखे इसलिए विनंति की, परंतु किसी न किसी कारण को लेकर उन्होंने हमें नहीं रखा । खाने का तो कैसे भी करके हो जाता था । पैसे उतने हमारे पास थे नहीं । अंत में जलाराम बापा के अन्नक्षेत्र में फ्री खाने का सोचा था और वह भी शक्य नहीं होता, तो फूटपाथ पर बैठकर भीख मांगकर पेट भरने की पूरी तैयारी करके ही रखी थी...

एक रीक्षावाले ने हमारी हालत को देखकर हमें एक नये वृद्धाश्रम के लिये सूचना की कि, "आप वहाँ जाओ, शायद आपको रख ले ।"

आत्महत्या करने की हिंमत नहीं थी म.सा. ! मरना है, वह तो पता ही था, परंतु मौत को सामने से बुलाने की ताकत नहीं थी । उस रीक्षावाले की बात सच हो गई । हमें उस वृद्धाश्रम में आदरपूर्वक स्थान मिल गया । वहाँ के मालिक और मेनेजर दोनों भले इंसान थे ।

वहाँ रहने के लिये एक रुम ! तीनों समय भोजन ! यह सब फ्री था । परंतु कपड़े-तेल-साबुन आदि का खर्च हरेक को खुद-खुद के अनुसार ही करना था । दूसरे वड़ीलों को तो उनके लड़कों आदि के पास से महिने की फिक्स छोटी-बड़ी रकम मिलती होगी, परंतु हमें तो एक रुपया भी देनेवाला कोई नहीं था, फिर भी उसकी विशेष चिंता नहीं थी । कपड़े खरीदने नहीं थे । और

तेल-साबुन जैसी चीजों का खर्च तो ज्यादा नहीं होता । फिर भी साहेब ! इस संसार में जीने के लिये पैसे होने जरूरी तो है ही ना !

वहाँ थोड़े गृहस्थ कुछ-कुछ दिन वृद्धाश्रम की मुलाकात लेने आते थे । उनके मन में कभी करुणा जागृत होती, तो हम सभी वृद्धों को १०-२०-५० रुपये की नोट देते । थोड़े तो मना करते, परंतु हमें तो नोटों की बहुत जरूरत थी... शर्म भी आती । परंतु म.सा. ! अब वह शर्म रखे, तो जिंदगी जीनी किस तरह ? इसलिये वे नोट चूपचाप ले लेते थे । उस समय वे दिन याद आ जाते थे । भावनगर के हमारे खुद के घर ! उसके बाद दक्षिण में किराये का घर ! परंतु प्रसन्नतावाला जीवन ! ५००-१००० खर्च कर सकते थे, इतनी शक्ति तो थी ही । और आज १०-१० रुपये भी हमें दान में लेने पड़ते थे ।

अभी दो-तीन दिन पहले ही कोई उदार गृहस्थ आये थे । उन्होंने हरेक वृद्ध को ५००-५०० रुपये दिये थे । तो हमारे पास वे रुपये १००० है । आज तो वे बहुत किमती लगते हैं ।"

मैं सुनता रहा ।

कैसा होगा वह दृश्य !

मेरे जैनशासन के एक समय के समृद्ध श्रावक-श्राविकाएँ जब किसी के हाथ से सिर्फ रुपये १० का भी दान (भीख ?) लेते होंगे, तब उनके हृदय को कितना आघात लगता होगा ? यह तो एक प्रसंग मेरे सामने आया । ऐसे तो हजारों श्रावक-श्राविकाएँ होंगे ना ? उन्हें खुद के अहंकार को खोना पड़े, अति दुःखी होना पड़े, गरीब-हीन-दीन (भिखारी ?) बनना पड़े, वह क्या शोभता है सही ? शासन के अन्य कार्यो में करोड़ों-अरबों रुपये चाहे खर्च करो, परंतु वे दानवीर क्या इस तरफ नजर नहीं डालेंगे ? वे मुनि-आचार्य क्या उन्हें इस तरफ नजर डालने का उपदेश नहीं देंगे ?

**केटरर्स में हर साल करोड़ों रुपये का खर्चा...**

**मंड़पों में हर साल करोड़ों रुपये का खर्चा...**

**पत्रिकाओं में हर साल करोड़ों रुपये का खर्चा...**

यह सब कितना जरूरी-बिनजरूरी... वह तो भगवान जाने, परंतु इन सच्चे साधर्मिकों का उत्थान तो अवश्य जरूरी है ही ना ? जैन ही अगर कम हो जाएंगे, तो मंदिरों में पूजा-दर्शन करेगा कौन ? उपाश्रयों में सामायिक-प्रतिक्रमण करेगा कौन ? व्याख्यान सुनने आएगा कौन ?

शासन के हितचिंतकों को यह सब शांति से सोचने की जरुरत तो है ही ।

साधर्मिकों के प्रति ध्यान देने का शुरु तो हुआ है, परंतु जरुरत और भी ज्यादा है । मैंने आगे एक प्रश्न पूछा उस माता-पिता को...

"आपको आशा थी कि यह भव्य वापस मिलेगा ? आप उसे वापस देख सकोगे ?"

पिताजी बोले, "नहीं, म.सा. ! मुझे तो आशा नहीं थी । ऐसा डर भी था कि कहीं अगर कर्जदार उसे पकड़ेंगे, तो मारेंगे भी सही ! पुलिस में शिकायत करके पकड़वा दें, तो भी पता नहीं । क्योंकि बैंकवाले तो लीगली उसे जेल में भी डाल सकते हैं ना !"

परंतु उसकी मम्मी को पक्की श्रद्धा थी कि, "मुझे मेरा भव्य इस ही भव में वापस मिलेगा ।" आंख भर गई पिता की और आवाज रुंध गई ।

माता बोलने लगी, "हाँ, म.सा. ! मुझे तो विश्वास था ही । मैं रोज सुबह-शाम प्रभु को प्रार्थना करती कि, "मेरा बेटा जहाँ भी हो, तू उसकी रक्षा करना । और उसे रास्ते पर लगाना ।" प्रभु ने मेरी प्रार्थना ऐसी सुनी कि साधुओं के साथ ही उसका मिलन करवा दिया और उपधान जैसे श्रेष्ठ धर्ममार्ग पर उसे लगा दिया ।

और साथ में प्रार्थना भी करती कि, "मुझे इस भव में एकबार तो मेरे बेटे को वापस मिलन करवाना ही ।"

"वृद्धाश्रम में भोजन आदि कैसा ?"

"म.सा. ! बहुत अच्छा । वहाँ वृद्धों को बहुत प्रेम देते हैं । भोजन में भी बराबर ध्यान रखते हैं, फिर भी घर तो घर ही होता है ।"

सूर्यास्त होने को आया, इसलिए मैंने उनको बिदा किया... अब वे मोक्षमाला तक वहीं रुकनेवाले थे । उसके बाद क्या करना ? उसका निर्णय बाकी था । परंतु प्रभु ही अगर केस संभालते हो, तो उसमें होशियारी करने की क्या जरुरत ? प्रभु जो सुझाएगा, उस अनुसार करते जाएंगे ।

**"जीव तु शीदने चिंता करे ? हरिने (प्रभुने) करवुं होय ते करे ।"**

**अर्थ :** "जीव तू किसलिये चिंता करता है ? प्रभु को करना हो वह करेगा ।"

उसके बाद तो बहुत सारे अच्छे प्रसंग बने ।

वापस वह बात कर देता हूं, जहाँ भगवान का साम्राज्य होता है, वहाँ आनंद ही आनंद होता है, प्रभु के प्रति श्रद्धा-समर्पण-स्नेह के बिना प्रभु का साम्राज्य अपने ऊपर छा सकता ही नहीं है...

दूसरे दिन मेरे संसारी पक्ष से भाभी सीमाबहन मुझे मिलने आये, "म.सा. ! उस बहन के पास मंगलसूत्र नहीं है, मेरे पास मंगलसूत्र एकस्ट्रा है । मुझे आप अनुमति दो, आपके भाई मुंबई से आ ही रहे है, तो लेकर आ जाएंगे... मुझे इतना लाभ चाहिए ही है ।"

ऐसे भावों को रोकने का काम मैं क्युं करूं ?

थोड़ी देर में चैन्नई के **कविताबहन** आये, उनकी छोटी बेटी **जिनीषा** ने नौ साल की उम्र में उपधान किये । उन्होंने कहा, "म.सा. ! मुझे मम्मी ने अभी ही कान में पहनने की दो बुट्टीयाँ गिफ्ट में दी है । वे सोने की है । मुझे भव्य की मम्मी को पहनानी है, मुझे इतना लाभ लेने दो...।"

मैंने उनको हाँ ही कहा । और वे तो उस ही समय बुट्टी लेकर आ गये । भव्य के मम्मी को वहाँ ही बुलाया, और मेरे सामने सोने की बुट्टी पहना दी ।

इस बहन ने और उनके श्रावक **विक्रमभाई ने** छः साल पहले चेन्नई में नया इतिहास बनाया था । मागसर सुद ६ के दिन मेरा दीक्षा दिन था, और वे जल्दी सुबह आराधनाभवन साहुकारपेठ के उपाश्रय में आ गये थे । मैंने आश्चर्य के साथ पूछा कि, "क्यों इतने जल्दी ? सूर्योदय तो अभी ही हुआ है ।"

तब विक्रमभाई ने कहा, "म.सा. ! आज आपका दीक्षा दिन है, इसलिये आपको बधाई देने आये हैं, और आपको एक भेट देने के लिये आये हैं ।"

"परंतु मैं तो कुछ लेता ही नहीं । और मुझे कुछ भी जरूरत नहीं है ।" मैंने उत्तर दिया ।

मैं समझा कि वे कुछ बोलपेन या नोट या कामली जैसी कोई वस्तु वहोराने के लिए लाये होंगे और हम इस तरह सामने से लाया हुआ कुछ भी लेते नहीं है ।

वे बोले, "म.सा. ! हम आपको गुरु मानते हैं, और आपके आचारों का हमें पक्का ज्ञान है । परंतु आपके लिये जो भेट लाये हैं, वह तो आपको बहुत ही अच्छी लगेगी । और आप उसका स्वीकार करोंगे ही ।"

मैंने कुतूहलवृत्ति से, जिज्ञासा से उनको पूछा, "क्या ?"

***"हम आजीवन संपूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकारना चाहते हैं, यह ही हमारी भेट हैं ।"***

मैं तो फटी हुई आंखों से उनको देखता ही रहा, क्योंकि उस समय उनकी उम्र सिर्फ ३३-३४ साल की ही थी, और कविताबहन की उम्र सिर्फ ३०-३१ साल ! इतनी छोटी युवान उम्र में ब्रह्मचर्य का संपूर्ण स्वीकार, यह तलवार की धार पर चलने जैसा कृत्य था... मुझे खुशी तो बहुत हुई, परंतु ऐसा व्रत सोचे बिना तुरंत दे देने का दुःसाहस मैं इस काल में तो बिल्कुल नहीं करुंगा... मैंने उन्हें कहा, "उत्साह में व्रत ले तो लेते हैं, परंतु यह पालना आजीवन है । फिर निमित्तों में वापस विचार बदल जाने की शक्यता बहुत है ।"

दोनों बोले, "म.सा. ! पिछले चार महिने से हमने इसकी प्रेक्टीस कर ली है । पूरा चातुर्मास और उसके बाद के २० दिन हमनें एक ही रुम में रहकर निर्मल ब्रह्मचर्य पाला है । तब ही हमें अपने पर विश्वास आया है । आप उस बात की लेश भी चिंता मत करना ।"

अब मुझ में हिंमत आई, और मैंने ३०-३२ वर्ष की उम्र के युवान पति-पत्नी को आजीवन संपूर्ण ब्रह्मचर्य की कसम आराधनाभवन की बाल्कनी में मेरे दीक्षा के दिन सुबह दी थी । उस समय उनके माता-पिता और समाज को यह पता चले, तो शायद वे स्वीकार नहीं सके । अब तो कविताबहन के माता-पिता को पता चल गया था, वे तो बहुत खुश थे । इसलिए इस उपधान में इस बात की जाहिर में अनुमोदना भी की गई थी । इस कविताबहन ने मेरी उपस्थिति में ही भव्य के मम्मी को सोने की बुट्टी पहनाई थी...

उस दिन उपधान के लाभार्थी परिवार की बड़ी बेटी का जन्मदिन था । २२ वर्ष के वे **निधिबहन** मेरे पास आशीर्वाद लेने के लिये आये । और मुझे कहते हैं कि, "म.सा. ! मुझे रास्ते में भव्य के मम्मी-पापा मिले, मैंने उनको हाथ जोड़े, भानुबहन के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद मांगे कि, "आज मेरा जन्मदिन है..." और भावेशभाईने तुरंत भानुबहन को कहा कि, "इसको १०० रुपये दे । ऐसे खाली हाथ आशीर्वाद नहीं होते ।" मैं तो ऐसे भी पौषध में ही थी । इसलिये मुझे पैसे लेने नहीं थे, परंतु जिनके पास पैसे के नाम पर कुछ भी नहीं है, वे भी कैसे उदार मन के हैं कि, "कोई आशिष मांगता है, तो खाली

हाथ से आशीर्वाद नहीं देना ।"

मुझे उससे ज्यादा खुशी तो निधिबहन के नम्रतागुण के लिये हुई ।

वह करोड़पति परिवार की प्यारी बेटी !

वह बहुत पढ़ी-लिखी हुई ।

वह मुमुक्षु नहीं, परंतु मौज-शोख के रंग में रंगी हुई...

उन्हें यह पता है कि सामने का कपल सामान्य है, धार्मिक भी नहीं है, समाज में प्रतिष्ठित भी नहीं है, धनवान भी नहीं है, रुपवान भी नहीं है, खुद के वड़ील स्वजन भी नहीं है, फिर भी रास्ते में मिले हुए उस कपल के चरणों में गिरकर आशीर्वाद लेने जितना नम्रभाव इस यंगजनरेशन में कहाँ से आया ? यह जिनशासन का ही प्रभाव !

उपधान में आराधना करनेवाले एक **रिन्कुबहन** मिलने आये, "म.सा. ! उपधान के बाद इस परिवार को किसी जगह सेट तो करना पड़ेगा ना ! मेरे पास सोने का बिस्किट है, उसके पांच लाख रुपये होंगे । आप मुझे लाभ दो । वह रकम इस परिवार के उत्थान के लिये वापरना ।"

संसारी भाभी + कविता बहन + निधिबहन + रिन्कुबहन चारों ने आज एक नये ही इतिहास का सर्जन किया था । चाहे बात एकदम सामान्य, परंतु मेरी नजर से तो यह बात बहुत ही विशिष्ट थी... है... रहेगी...

'भव्य का ठिकाना (व्यवस्था) नहीं पड़े, तो उसके माता-पिता को कहाँ रखना ? जब तक भव्य घर की व्यवस्था नहीं करे, तब तक तो उसके माता-पिता को कहाँ रखना ?' यह भी बड़ा प्रश्न था । माता-पिता को अब तो वृद्धाश्रम में रखने की भावना नहीं ही थी । परंतु अंत में दूसरी कोई व्यवस्था नहीं हो, तो यह एक ही उपाय था, 'वापस वृद्धाश्रम में उन्हें रखना ।'

यह बात उपधान के सामने व्याख्यान में की, और जबरदस्त कमाल हो गया ।

नवसारी के **दिपीका**बहन खुद के एक बेटे को तो उन्होंने सौंप ही दिया है' जो आज मेरे शिष्य मुनि **वासक्षेप वि.** है... उन्होंने इस ही उपधान में दूसरे बेटे **पंकिल** के लिए भी हामी भर दी थी, 'इसे भी दीक्षा दो ।'

अब घर में सिर्फ **दिपीका**बहन और **जिग्नेश**भाई ही बाकी रहते थे । उन्हें परिवार में सिर्फ दो बेटे ही थे, कोई बेटी या तीसरा बेटा नहीं । उन्होंने खुद

के भविष्य का भी विचार किया नहीं था । शासन के नाम पर सब देने की पूरी तैयारी कर ली थी । देश के सैनिकों की माता जैसा अद्भुत शौर्य इस माता ने अभी तक दिखाया था ।

इतना कम हो, वैसे पूरी भरी हुई सभा में वे खड़े हुए और उन्होंने कहा कि 'मैं भव्य के माता-पिता को मेरे घर में रखूंगा । पूरी जिंदगी रखूंगी । मेरे माता-पिता की तरह रखूंगी... साहेबजी ! आप मुझे आदेश (= लाभ) दो ।'

इस माता की महानता बाकी के सभी बहनों से कई गुणा थी । कान की बुट्टी + मंगलसूत्र + ५ लाख इस सब से भी इस माता-पिता को खुद के घर में आजीवन खुद की जिम्मेदारी के साथ रखना, उसमें भी खुद की उम्र भी पचास के आसपास तो है ही । और भव्य के माता-पिता तो वृद्ध होने से वे किसी काम में भी आनेवाले नहीं थे, उनकी तो सिर्फ सेवा ही सेवा करनी थी । फिर भी यह सब जिम्मेदारी स्वीकारने की तैयारी बताई दिपीकाबहन ने ! धन्य है जैनशासन !

माला के दिन के लिये भव्य के नये वस्त्रों की और उनके मम्मी-पापा के भी नये वस्त्रों की पूरी व्यवस्था हो गई ।

भव्य ने खुद का लोच करवाने की भावना प्रगट की और हेम म. ने उनका पौषध में ही लोच भी कर दिया ।

भव्य के भाव बढ़ते ही गये, और एक दिन उसने खुद की भावना प्रगट की, "म.सा. ! मुझे दीक्षा दोगे ? मुझे इस संसार का त्याग करके प्रभु के मार्ग में जीना है... मुझे इसका रंग लगा है..."

वहाँ ही बैठे हुए माता-पिता के सामने मैंने नजर की, वे तुरंत बोले, "म.सा. ! हमारी तो पूरी संमति है । ऐसे भी हम तो उसकी आशा छोड़कर पूरी जिंदगी जीने के लिए तैयार ही थे ना ! वे मुनि बन जाये, उसमें हम बहुत खुश है ! हम तो वापस वृद्धाश्रम में चले जाएंगे । वहाँ उन्होंने तो हमारे लिये हमेशा का आमंत्रण दिया है । हमारे कारण से इसकी दीक्षा रोकने की जरुरत नहीं है ।"

मैंने कहा, "आपकी बात सच्ची, परंतु भव्य के सिर पर इतना सब कर्ज है । हालाँकि वह यह कर्ज चूका सके, ऐसी शक्यता भी कम । परंतु इतना बड़ा कर्ज दूसरा कोई चुकाये, वह भी शक्यता कम है । इसलिए किसी को कहना

भी अनुचित ही है । इसलिए अभी तो मेरी दीक्षा के लिए मनाई है । भविष्य में मैं मेरे वड़ीलो को पूछ लूंगा, वे इस बाबत में जो मार्गदर्शन देंगे, उस अनुसार करुंगा । इसमें मेरा स्वतंत्र निर्णय नहीं चलेगा ।"

मोक्षमाला की पूर्व की रात को भव्य के ही जीवन पर ड्रामा रखने में आया । **साहिलभाई** और उनके मम्मी-पापा ने मुख्य रोल किया । साहिलभाई बने हुए थे भव्यभाई ! और अंत में लोचवाले मस्तक के साथ भव्यभाई ने स्टेज पर प्रवेश किया था । लोगों की आंखों में आंसु तो बहनेवाले ही थे... वह अब आश्चर्य नहीं था ।

अब एक ही बात की चिंता थी कि, "उपधान के बाद इस परिवार को सेट कहाँ करना ?" भव्य पर सभी को सद्भाव नक्की आया, परंतु विश्वास आना कठिन था । असत्य बोलनेवाले पर कोई भी इंसान विश्वास नहीं करता और पैसे के क्षेत्र का तो सूत्र है कि, "पैसे की बाबत में सग्गे पिता पर भी विश्वास नहीं करना ।" संस्कृत में भी कहावत है कि, "**बृहस्पतिरविश्वासः...** " बृहस्पति कहते हैं कि धन कमा लेने का रहस्य है "अविश्वास !"...

परंतु जिनशासन रत्नों की खान है ।

चेन्नईवाले **नीतिनभाई** मेरे पास आये । कहते हैं कि, "इस पूरे परिवार को मैं चेन्नई लेकर जाऊंगा । मेरे वहाँ नौकरी पर रख लूंगा... आप चिंता मत करो ।"

चिंता तो ऐसे भी मुझे होती ही नहीं है ।

भव्य की भव्यातिभव्य मोक्षमाला हो गई ।

आज वह चेन्नई में खुद के माता-पिता के साथ रहता है । १ बेडरुम - होल किचन का घर किराये पर मिल गया है । १० हजार किराया है । वेतन २५-२७ हजार है । उसमें अच्छी तरह घर चलता है । नीतिनभाई उन्हें धर्माराधना करने में फुल सपोर्ट करते हैं ।

भव्य ने आयंबिल की वर्धमानतप की ओली का पाया भी डाल दिया है । हर महिने पांच आयंबिल तो मीनीमम करते हैं । प्रभुपूजा करते हैं, अवसर मिले, तब व्याख्यान सुनते हैं ।

अभी दस दिन पहले पूरा परिवार मिलने आया । मम्मी-पापा तो हर समय की तरह खुशी के अश्रु बहाया ही करते हैं । उन्हें अभी भी यह सब आश्चर्य

लगता है । दोपहर को गोचरी के बाद माता-पिता मिले, तब माता बोली, "म.सा. ! बस, एक ही इच्छा है अब, मेरा बेटा साधु बन जाये..."

आठ-आठ महिने बीत जाने के बाद भी माता-पिता का भाव ऐसा ही मजबूत था, "बेटे को साधु बनाने का ।"

ये सिर्फ कल्पनाएँ नहीं है, यह नजरों से देखी हुई सत्य घटना है । कितनी खुशी के साथ वह माता बोल रही थी । उन्होंने देखा था कि उन्हें जीवनदान देनेवाला यह जिनशासन ही था, शासन के साधु-श्रावक-श्राविकाएँ ही तो थे ।

खुद के संतानो को दीक्षा नहीं देनेवालें, दीक्षा का विरोध करनेवाले इस विषय पर वापस एकबार नक्की विचार करें, आग्रह कोई नहीं है, परंतु चिंतन नक्की करना ।

"मेरा बेटा दीक्षा ले लेगा, तो हमें बुढ़ापे में कौन संभालेगा ?" ऐसा जो बोलते हैं, या मानते हैं, वे यह भी सोच ले कि संसार में रहे हुए कितने सारे बेटों ने खुद के गलत रास्तों के द्वारा, गलत स्वभाव के द्वारा, माता-पिता के बुढ़ापे को चिंताग्रस्त बना ही दिया है ना ! आज ऐसे हजारो माता-पिता मिलेंगे, कि जिनके बेटे होने के बावजूद वे उनके साथ रहते ही नहीं है । बेटों के कारण ही माता-पिता दुःखी है ।

किसी के बेटे भारत के बाहर सेटल हो गये हैं, साल में एक-दो बार मिलते हैं । माता-पिता को मिथ्या संतोष मानना है कि "मेरे बेटे हैं ।" वे बिमारी में खर्च भेजने में काम आएंगे, मरने के बाद अग्निदाह और शोक सभा के लिए काम आएंगे । बाकी वे माता-पिता के लिए कितना समय निकालेंगे ?

कुछ के बेटे है तो भारत में, परंतु बिझनेस-नौकरी के लिए बड़े शहरों में जाकर बसे हैं । बड़े शहरों में घर छोटे ! बेटे उसमें खुद के परिवार को मुश्किल से सेट कर सकते हैं । उसमें बुढ़े माता-पिता को एक पूरा रुम किस तरह दें ? और गांव में या छोटी सीटी में सालों से रहने के लिए आदि (अभ्यस्त) माता-पिता को बड़े शहरों के छोटे घरों में और भीड़भाड़ में वैसे भी सेट नहीं होता । अंत में वे खुद के पुराने घरों में ही रहते हैं ।

इन सभी में बेटे हैं, फिर भी नहीं है...

उसके बदले वह बेटा शासन का रत्न बन जाये, तो सिर्फ उसका

स्मरण, उसके फोटो का दर्शन भी माता-पिता को परमसुखी बना देता है, सिर्फ दीक्षा के आल्बम भी उनके रोम-रोम में आनंद भर देता है । पूछ लेना साधु-साध्वी के माता-पिताओं को, उनके अंतर की खुशी के लिये !

हाँ ! वहाँ भी कोई दुःखी दिखेगा, परंतु बहुत कम ? और उसमें भी ये गेरंटी तो है ही कहाँ कि उनके बेटे ने दीक्षा नहीं ली होती, वह संसार में रहा होता, तो माता-पिता सुखी होते...

सभी को दीक्षा दे देना, यह बात ही नहीं है । अगर ऐसा सोचते तो भव्य को कभी की दीक्षा दे ही दी होती, अभी भी दे सकते हैं, परंतु ऐसी जल्दबाजी हमने की नहीं । इस केस में वड़ीलों के पास व्यवस्थित सलाह लेंगे, उसके बाद ही कोई निर्णय करेंगे...

बात सिर्फ इतनी ही है कि एकांत से दीक्षा का विरोध नहीं करना । किस कंडीशन में दीक्षा दी जाती है और किस कंडीशन में दीक्षा नहीं दी जाती... इस हरेक बाबत का शांतचित्त से विचार करना जरुरी है । और यह विचार शास्त्र के ज्ञाता गीतार्थ-संविग्न महात्मा ही कर सकते हैं । श्रावक उनके पास बैठकर खुद का सम्यग्ज्ञान बढ़ाये ।

भानुबेन बोलते थे, " म.सा. ! मेरे से रात्रीभोजन छूटता ही नहीं था । परंतु भव्य की मोक्षमाला के बाद प्रभु की ऐसी कृपा उतर गई कि पिछले आठ महिने से रात्रीभोजन छूट गया है । प्रभु की पूजा होती है, कभी व्याख्यान भी सुनती हूं । हमारे घर से उपाश्रय दूर है, इसलिए वह जमता नहीं है... "

उनके जाने के बाद मुझे इच्छा हो गई कि भव्य के जीवन पर एक छोटी पुस्तक लिखुं ।

बस यह घटना यहाँ पूरी कर रहा हूं ।

भव्य का भविष्य क्या ? यह पता नहीं है ।

● वह वापस शेरमार्केट आदि में फंसेगा नहीं ना ? लगता तो नहीं है । उसने सामने से हाथ जोड़कर कसम ले ली है ।

● वह क्या संपूर्ण कर्ज चुका सकेगा ? लगता तो नहीं है । २५ हजार का वेतन है, वे लगभग पूरे खर्च हो जाते हैं, उसमें से कैसे लाखों का कर्ज चुकाएगा ।

● क्या कोई उसका कर्ज चुकाने के लिये तैयार है ? लगता तो नहीं

है । इतनी बड़ी रकम तो कौन चुकाएगा ? किस लिए चुकाएगा ?

● क्या वह दीक्षा लेगा ? पता नहीं । वड़ील हा कहेंगे, यह पहली बात । उसके बाद उनको साधुजीवन की तालीम देनी पड़ेगी, उनके संस्कारों के अनुसार उन्हें ज्यादा तालीम देनी पड़ेगी... उसमें *Pass* हो जाये, तो दीक्षा होगी ।

● उसके माता-पिता प्रसन्न रहेंगे ? उसमें लगता है कि "हाँ ! रहेंगे ।" उनके पास अब वह शक्ति आ गई है । उन्होंने इतना दुःख सहन कर लिया है कि अब छोटे-छोटे दुःख तो उन्हें कुछ भी नहीं लगते । ५० डीग्री गर्मी में रहनेवालों को बाद में ३० डीग्री में रहने का अवसर आये, तो उसे तो स्वर्ग ही लगता है ना !...

भव्य खुद का कर्ज चुका सकेगा या नहीं ? यह तो पता नहीं है, परंतु उनके माता-पिता तो खुद के वृद्धाश्रम का कर्ज चुका ही सकेंगे । भव्य को पैसे देनेवाले तो पैसे कमा लेने की इच्छा से ही देते थे, जबकि उनके माता-पिता को ५० दिन तक आशरा देनेवाले वृद्धाश्रम ने तो उनके पास किसी भी प्रकार की अपेक्षा रखी ही नहीं थी, निःस्वार्थ सेवा की थी । वीरपुर सौराष्ट्र के पास चरखड़ी गांव है, वहाँ ही हाईस्कुल के सामने "**त्रिरंगा**" नाम का वृद्धाश्रम है । माता-पिता के बताये अनुसार...

(१) वहाँ सुबह चाय + कोई भी एक गर्म नास्ता (सातो दिन बदलता रहता है) ।

(२) दोपहर को रोटी-पुरी-दाल-सब्जी-चावल-गुड़-छास-पापड़ और लगभग रोज मिठाई...

(३) शाम को खिचड़ी-कढ़ी-रोटी-सब्जी-गुड़... तो कभी ढोसा आदि भी होता है...

(४) दोपहर को चाय एकस्ट्रा...

(५) टेबल-कुर्सी पर बैठकर खाना खाना...

(६) बगीचा...

आदि बहुत सारी सुविधाएँ हैं । सबसे ज्यादा सुविधा तो है निःस्वार्थ प्रेम की ! जो वृद्ध कुछ भी दे नहीं सकते, उन वृद्धों के लिये ऐसी संस्था काम करती है ।

फालतू पशुओं के लिये पांजरापोल संस्था महान है, परंतु भारत की प्रजा के लिये यह कलंक है कि, वह प्रजा खुद के पशुओं को पालती नहीं है ।

मुंबई से सौराष्ट्र गये, तब शुरुआत में तीन दिन तो यह कपल ५०० रु. के दिन के किरायेवाले गेस्ट हाउस में रुके थे, क्योंकि रहने की कोई जगह नहीं थी और वीरपुर के जलारामबापा के आश्रम में तीनों समय फ्री खाया था । सुबह सिर्फ चाय (जितनी चाहिए उतनी), दोपहर को पुरी-सब्जी-दाल-चावल-बुंदी/लापसी, शाम को भी व्यवस्थित भोजन, दोपहर को चाय... वहाँ जो आये, जितने आये... उन सभी को यह सदाव्रत का भोजन मिलता ।

तीन दिन बाद चरखड़ी के त्रिरंगा आश्रम में उनको प्रवेश मिल गया था । ऐसी भावना है कि जो ५ लाख रु. उन्हें मिले हैं, उसमें से १ लाख रु. उनके (भव्य के माता-पिता) द्वारा - उनके हाथ से उस ही आश्रम में देना... यह उनके लिये सच्ची ऋण मुक्ति होगी ।

शायद उस आश्रम के लिये भी यह पहला प्रसंग होगा कि उस ही जगह रहने को आए हुए वृद्ध वापस खुद के घर खुशी-खुशी गये होंगे, और संस्था का उपकार मानकर वापस वहाँ ऋणमुक्ति पाने के लिये कुछ देने के लिये आये होंगे...

बस, अंत में...

जैनसंघ को, धनवानों को मेरी विनंति है । यह घटना बहुत संदेश देकर जाती है । मुझे यह संदेशा स्पष्ट रुप से बताने की वैसे तो जरुरत नहीं है, फिर भी आप सभी वाचक अगर चिंतन नहीं करोगें, तो आप उस संदेश को पकड़ नहीं सकोगे...

# संदेश-उपदेश-प्रेरणा-हितशिक्षा

(१) **Easy Money के चक्कर में युवानों को फंसने जैसा नहीं है ।** मेहनत की + नीति की कमाई कम होगी, तो भी वह आजीवन टिकेगी, धीरे-धीरे बढ़ेगी, और आसमान को छूएगी । और गलत रास्ते की कमाई शायद शुरुआत में जल्दी हो जाएगी, परंतु वह जितनी जल्दी होगी, उतनी ही जल्दी चली जाएगी । वह टिकेगी नहीं, और शुरुआत में ज्यादा होगी, परंतु धीरे-धीरे संपूर्ण साफ होगी, उल्टा बड़े नुकसान में उतार देगी ।

यह वाक्य छोटा है, परंतु गंभीर है । **श्री धर्मबिन्दु** में १६०० वर्ष पूर्व पूज्य **हरिभद्रसूरिजी म.** ने यह पूरा पदार्थ विस्तार से बताया है । ज्ञानी गुरु के पास जाकर उसका अर्थ जानना ।

**बृहस्पति** कहते हैं कि "पैसे कमा लेने का श्रेष्ठ उपाय है अविश्वास ।" परंतु महान आचार्य **हरिभद्रसूरि** कहते हैं कि " पैसे कमा लेने का श्रेष्ठ उपाय है नीति ! सच्चाई !"

बृहस्पति सग्गे बेटे / पिता पर भी शंका करना सीखाते है ।
आचार्यदेव भोले ग्राहकों के साथ भी प्रेम करना सीखाते है ।
बृहस्पति धन की लालच बढ़ाना सीखाते है ।
आचार्यदेव संतोष के + सत्त्व के रास्ते से धन बढ़ाना सीखाते है ।
आचार्यदेव कहते हैं -
(१) धन कमा लेने का श्रेष्ठ रास्ता है नीति !
(२) अनीति से धन की कमाई शक्य ही नहीं है ।

शायद पापानुबंधी पुण्य के उदय से अनीति के द्वारा भी धन की कमाई हो जाये, तो भी नींव बिना के मकान की तरह वह कमाई बहुत झड़प से खत्म होगी, ज्यादा नुकसान के साथ खत्म होगी... वह धनवान गरीब नहीं, परंतु कर्जदार बनेगा ।

सभी धन के प्रेमी इस महान उपदेश को ध्यान में ले ।

कसम ही ले ले कि क्रिकेट का सट्टा + शेर मार्केट का सट्टा + केसीनो + पैसे का जुगार (पत्ताबाजी द्वारा) + डब्बा जुगार + मटके का जुगार आदि

किसी प्रकार के ऐसे Easy Money के रास्ते पर पैर भी नहीं रखना...

(२) **शक्ति अनुसार साधर्मिको को सहायता करो ।**

संसारी भाभी सीमा बहन, कविता बहन, रीन्कु बहन और अंत में नीतिनभाई इन सभी ने जबरदस्त साधर्मिक भक्ति की । उसके अलावा भी थोड़े लोगों की अंतर से भावना थी ही, परंतु हम इस तरह उन्हें पैसे देना चाहते नहीं थे । वह सक्षम है, स्वयं कमाये और खुद की कमाई पर सादगी भरा हुआ जीवन बिताये, संघर्ष करना सीखे ।

लाखों-करोड़ों के चढ़ावे चाहे बोलो, परंतु १०% रकम इस तरफ भी खर्च करते जाओ ।

ध्यान रखना, जिनमंदिर + जिनप्रतिमा + पुस्तक ये जैनों के जैनत्व को बचाने के लिए - बढ़ाने के लिए साधन है, परंतु अगर जैन इन साधनों का उपयोग नहीं ही करेंगे, तो इन साधनों का काम क्या ? देरासर है, परंतु पूजा करनेवाले ही नहीं हो तो ? उपाश्रय है, परंतु व्याख्यान सुननेवाले, सामायिक-प्रतिक्रमण करनेवाले नहीं हो तो ?

जैन सुखी होंगे, चिंतामुक्त होंगे... तो वे साधनों का उपयोग करेंगे, तो उनमें जैनत्व प्रगट होगा, मजबूत होगा, बढ़ेगा ।

साधर्मिको की किसी भी हिसाब से रक्षा करो ।

उनके अर्थ-काम की रक्षा-व्यवस्था धनवान जैन समाज करें ।

उनके जैनत्व की = धर्म की रक्षा - व्यवस्था धनवान जैन समाज करें ।

उनके जैनत्व की = धर्म की रक्षा - वृद्धि साधु-साध्वीयाँ करेंगे...

(३) **पापो का पश्चात्ताप + पापो का स्वीकार + प्रायश्चित्त + अकरणनियम करो ।**

भव्य ने खुद के सभी पापों का घोर पश्चात्ताप किया, उसके बाद १२० पृष्ठ लिखकर उन पापों का स्वीकार किया, उसके बाद गुरु के द्वारा दिये हुए प्रायश्चित्त को भी करने लगा, और वह पाप वापस नहीं करने का संकल्प भी लिया, तो आज उसका जीवन कैसा सुधर गया है ? वह नजर के सामने दिखता है ।

**(४) पापी ने तुं प्यार करी ले, पापोनो उद्धार थशे ।**

इस गीत का भावार्थ स्पष्ट ही है । वह भव्य पापी था, परंतु उसे धिक्कारेंगे, तो वह ज्यादा बिगड़ेगा, ज्यादा नुकसान करेगा । उसे हृदय का सच्चा प्रेम दिया, सबने दिया । और आज उसका उद्धार हुआ । उसके किये हुए पाप भी पश्चात्तापादि के द्वारा धुलते जाएंगे । कर्म निकाचित बांधे होंगे, तो भोगने पड़ेंगे । परंतु संसार बढ़ानेवाले नहीं बनेंगे ।

आपके घर में, ओफिस में या सब जगह... बिगड़े हुए को धिक्कार कर-फटकारकर ज्यादा बिगाड़ो मत, परंतु उन्हें सुधरने का मौका प्रेम से + माफी से + चतुराई से दो । सावधानी जरुर रखो, विवेक जरुर रखो, परंतु साथ में प्रेम + माफी नाम का गुड़ डालकर उस सावधानी नाम के करेले की सब्जी को मीठा बना दो...

**(५) दुःख में या दोष में देव-गुरु का ही शरण लो ।**

भव्य जब तक दुःखो से बचने के लिए संसारीओं का शरण लेता रहा, तब तक ज्यादा से ज्यादा फंसता ही गया, ज्यादा से ज्यादा दुःखी बनता ही गया ।

कुलपाककी तीर्थ में उसने भगवान का शरण लिया आयंबिल तप का शरण लिया उसके बाद सुगुरु का शरण लिया, उपधान का शरण लिया और यह चमत्कार उसके जीवन में प्रगट हुआ ।

**(६) ठगाई-धोखा-झूठ यह सब हमेशा के लिए छोड़ दो ।**

इन सब के कारण से कितने लोग परेशान होते हैं, कितने लोगों की जिंदगी बर्बाद होती है, कितने लोग दुःखी होते हैं, कितनो की हाय लगती है... उन परिवारों की रात की निंद हराम होती है, दिन के भोजन कड़वे हो जाते हैं, हर श्वास-श्वास में जहर धूल जाता है... यह तो उन परिवारों को आंखो से देखोगें, तो पता चलेगा...

**(७) साधर्मिको को उनके पैर पर खड़ा करने की मेहनत करो ।**

संघ में सकल संघस्वामीवात्सल्य होता है, वह सबके लिये होता है । धनवान-मध्यम-गरीब ! गरीब साधर्मिकों को हर महीने १०००-५००० रु. पहुंचाना... ये भी साधर्मिक भक्ति है । परंतु इन सभी से श्रेष्ठ भक्ति ये है कि उन साधर्मिकों को नौकरी-व्यापार में जोड़ना और इस तरह वे खुद कमाकर खुमारी से जीना सीखे ।

यह तीसरे प्रकार का साधर्मिक वात्सल्य श्रेष्ठ है । हमें इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए । नीतिनभाई ने पूरे परिवार को चेन्नई बुला लिया, Free में कुछ नहीं दिया, उन्होंने नौकरी दी, उसके बदले में वेतन दिया... तो वह पूरा परिवार खुमारी के साथ जी सका । वह खुमारी के साथ ही जी रहा था, परंतु अपनी गलत मदद, काम बिना की मदद उन्हें आलसी बना दे, तो उनको नुकसान ज्यादा होता है ना !

साधर्मिकों को **मदद** नहीं, परंतु **मेहनत** दो ।

मैंने यह सात उपदेश दिये है ।

आप आपकी बुद्धि के द्वारा दूसरे भी बहुत सारे उपदेश स्वयं ही समझ सकते हो । आज मुझे खुशी है कि एक छोटे परिवार को जिनशासन का रागी बनाने में मैं निमित्त बना । प्रभु मुझे यह शक्ति, ऐसी शक्ति ज्यादा से ज्यादा दे...

**|| अर्हं नमः ||**

**|| नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय ||**

# परिशिष्ट-१
# स्टॉक मार्केट या शार्क मार्केट ?

इस २१वीं सदी में सभी को जल्दी से करोड़पति बनना है और इस दौड़ में ९०% लोगों की हालत रोड़पति जैसी हो जाती है... आज का सूत्र है, **'जो दिखाता है ,** वह दिखता है ।' **'जिसके पास पैसा, वह परमेश्वर'** और इन सूत्रों को खुद के जीवन में गूँथकर (ढालकर) *Status, Glamour* के पीछे अंधे कितने भव्य जैसे पागलों ने खुद के घर-परिवार सभी को बर्बाद कर दिया है और तो भी कितने पागल ऐसे है कि जो यह सब जानने के बावजूद भी पागल ही होना चाहते है... जागृत को जगाना जैसे मुश्किल है, वैसे होशियार पागलों को होशियार बनाना भी मुश्किल है ।

**९** बजे और घर में सभी की **बेंड** बज जाती है ऐसी हालत शेरमार्केट के रसीकों की है । ९ बजते ही टी.वी.-मोबाईल चालु हो जाते हैं और शेरमार्केट के इन्वेस्टरो की धड़कने भी ऊपर-नीचे हो जाती है । और धड़कने अगर गवाँ दे तो उस व्यक्ति की जीवन की आशा भी छूट जाती है... तो जीने के बावजूद मारनेवाले शेरमार्केट के आधार से किसको जीना उचित लगता है, योग्य लगता है ? परंतु सभी अंध + पागल ही है ? **'जीने के है चार दिन, बाकी है बेकार दिन'** की मेन्टालिटीवाले सच में ही परिवार, समाज, देश के लिए बोझ स्वरुप है, क्योंकि वे खुद तो डूबते ही है, परंतु साथ में सभी को लेकर डूबते है और वे निर्दोष डूबे हुए बाद में कभी भी उठ ही नहीं सकते हैं ।

मुद्दे और आंकड़े की बात पर आते हुए... आंकड़े देखने जाये तो शेरमार्केट वालों को बहुत ही बड़ा खतरा है... प्रसिद्ध अंदाज के अनुसार शेरमार्केट में घुसनेवाले ९०% लोग खाली हाथ से नहीं, परंतु हाथ देकर बाहर आते है ऐसा माना जाता है... १०% लोग कमाते है और ९०% लोग खोते है, ऐसा देखने में आया है ।

उसमें भी डे-ट्रेडिंग, डब्बा ट्रेडिंग, मटका ट्रेडिंग, MCX के रसीकों को तो बहुत बड़ी लालबत्ती है । **युनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया,** बर्कली के रिसर्च के अनुसार ये डे-ट्रेडिंग करनेवाले लोगों को **२** साल में शेरमार्केट छोड़ना पड़ता

है और **८०%** उनका व्यापार प्रोफिटेबल नहीं होता यानि कि वे लॉस ही करते है ।

भारत की बात करें तो २०२३ के साल में ५०० + ट्रेडस करनेवाले ८०% लोगों को नुकसान ही हुआ था और इक्वीटी केश सेगमेन्टवाले ७०% इन्वेस्टरों को माइनस हाथ से बाहर आना पड़ा था । परंतु कहा जाता है ना **'हारा हुआ जुगारी दुगुना खेलता है ।'** और इसलिये ही ये जुगारी इतनी मार पड़ने के बावजूद *SEBI* की रीपोर्ट को भी मानने के लिये तैयार होते ही नहीं है । उन्हें लगता है कि हम भी राकेश झुनझुनवाले बनेंगे और नहीं मूतने के कारण से मरेंगे । शेरमार्केटवालों को मूतने का समय भी नहीं मिलता यह कैसा पागलपन है वह समझने की चीज है ।

यंग जनरेशन के लिये तो शेरमार्केट विष है क्योंकि *SEBI* की रीपोर्ट के अनुसार **२०२३** में **३०** साल के नीचे के ७६% लोगोंने नुकसान ही किया है । आपका नंबर ७६ में लगेगा या २४ में लगेगा वह क्या आपको पता है ?

चलो, पैसे और आंकड़ों की बात *Side* में रखते हैं... ऐसा कहा जाता है कि **'हेल्थ इझ वेल्थ...'** जो व्यक्ति इस चीज (वस्तु) को नहीं मानता उसकी वेल्थ हेल्थ में जाती है और उसके बाद भी वह वेल्थ हेल्थ वापस से लाने में व्यर्थ साबित होती है ।

आज हम हेल्थ के **पांच** आयामों से शेरमार्केट क्यों खराब है, वह **सोचेंगे ?** हेल्थ के पांच आयाम पहले देख लेते हैं -

(१) स्पीरिच्युअल हेल्थ, (२) फाइनान्शीयल हेल्थ, (३) मेन्टल हेल्थ, (४) फीजीकल हेल्थ, (५) सोशियल हेल्थ...

जब शेरमार्केट में किसी व्यक्ति को लोस होता है, तब उसकी असर डायरेक्ट इन पांच वस्तुओं पर होती है, ऐसा रीसर्च कहते हैं और आप *Google* करके स्पष्ट हो सकते हो । हम सबसे पहले स्पीरिच्युअल (आध्यात्मिक) दृष्टि से शेरमार्केट के नुकसान देख लेते हैं...

## (१) स्पीरिच्युअल नुकसान :

(*A*) **श्रद्धा बर्बाद :** जब व्यक्ति शेर्स में हारता है... लोस करता है, तब उसकी श्रद्धा प्रभु पर से उड़ जाती है, ऐसा देखने में आता है । 'प्रभु कहाँ है ?' ऐसा प्रश्न उसके दिमाग में खड़ा होता है, क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि 'प्रभु मुझे मेरी मूर्ख प्रवृत्तिओं में मदद करेगा...' परंतु *'God Helps those who help themselves'* प्रभु उनकी मदद करते हैं जो खुद की मदद करता है... जो व्यक्ति डूबने के लिए ही इच्छा करता है उसे प्रभु किस तरह मदद करता है ? और उसके कारण इन जुगारीओं का विश्वास प्रभु पर से उठ जाता है ।

(*B*) **आनंद बर्बाद :** शेर्स में डूबनेवाले व्यक्तिओं को प्रभुदर्शन, प्रभु पूजा, प्रभु स्तवना आदि से मिलता हुआ आनंद भी गायब हो जाता है... उन्हें अकेलापन लगता है और उनका कोई नहीं है ऐसा उन्हें लगता है और इतना ही नहीं 'धर्म से मुझे क्या फायदा हुआ ?' ऐसे नास्तिकता से भरे हुए विचार १००% आते हैं । एक बार व्यक्ति धर्म से दूर होता है, तो उसका पुण्य भी बढ़नेवाला नहीं है, घटने वाला ही है और इस जीवन में वह सफल होनेवाला नहीं है, डूबनेवाला (हारनेवाला) ही है ।

(*C*) **अंतर बर्बाद :** शेरमार्केट में डूबनेवाला अंदर से टूट जाता है... शेरमार्केटवाले लोग लगभग गुस्से में, दुःख में, फ्रस्ट्रेशन में ही होते हैं और वे अंदर से आगे नहीं बढ़ सकते हैं... वे खुद के लॉस के नीचे डूब जाते हैं और उससे 'मेरी इस दुनिया में कोई वेल्यु नहीं है ।' ऐसा वे अंदर से अनुभव करने लगते हैं ।

(*D*) **ध्यान बर्बाद :** जो व्यक्ति शेरमार्केट में डूबे हुए होते हैं, वे ध्यान करने बैठे, तो भी ध्यान नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उनके ध्यान को स्ट्रेस ही खा लेता है । सतत मन में आंकड़ें और स्टॉक ही दिखता रहता है और उनकी आध्यात्मिक विकास यात्रा स्टॉप हो जाती है... **स्टॉक** यानि आत्मा के गुणों का फूलस्टॉप ।

(*E*) **सिद्धांत बर्बाद :** शेरमार्केट में डूबे हुए पैसों के लिये खुद के सिद्धांतों को भी साइड में रखने के लिये तैयार हो जाते हैं... और जो व्यक्ति खुद की गुणवत्ता को साइड पर रख देता है, वह इंसान के रूप में मर जाता है

और पशु से भी बेकार बन जाता है, क्योंकि पशुओं को भी खुद के सिद्धांत तो होते ही है । लॉस को रिकवर करने में उन व्यक्तिओं के सभी गुण काले धंधो से कवर हो जाते हैं और फिर वे आध्यात्मिक दृष्टि से **भिखारी** ही हो जाते हैं ।

(*F*) **भक्ति बर्बाद :** शेरमार्केट में घुसने के बाद **२** घंटे धर्म करनेवाला व्यक्ति २ मिनिट के धर्म पर आ जाता है । पूजा बंध, प्रभुप्रेम बंध, बस दर्शन करो, Attendance प्रभु के सामने लगा दो और फिर मार्केट में भटकते रहो ।

(*G*) **शांति बर्बाद :** सबसे बड़ा नुकसान शेरमार्केट का ये है कि जिस पैसे का फल शांति है वह ही शांति गायब हो जाती है... और एकबार शांति गायब हो जाये तो धर्म करने की इच्छा ही कहाँ से होगी ? धर्म पर अहोभाव आयेगा कहाँ से ? खुद से हारे हुए को धर्म क्या संभालेगा ?

(*H*) **मोटिवेशन बर्बाद :** जो व्यक्ति खुद से हारा हुआ हो, उसे गुरु के शब्द भी बाहर नहीं निकाल सकेंगे । उसके जीवन में से आध्यात्मिकता के लिए जरूरी मोटिवेशन नाम की वस्तु ही गायब हो जाती है और मोटिवेशन यह जीवन के प्राणस्वरुप है ।

▶ ▶ ▶

दूसरी हेल्थ फाइनान्शियल हेल्थ है । उसमें क्या नुकसान होता है वह देखते हैं...

## (२) फाइनान्शियल नुकसान :

(*A*) **सुविधा बर्बाद :** जब एक व्यक्ति शेरमार्केट में पैसे खोता है, तब उसकी असर परिवार के खर्च पर पड़ती है । पहले परिवार अच्छी तरह, सभी सुविधाएँ के साथ जीवन व्यतीत करता होता है, परंतु बाद में उसे तंगी और कसरपूर्वक जीना पड़ता है जिसके कारण अंदर के तनाव बढ़ते हैं...

(*B*) **रोटेशन बर्बाद :** खर्चा करने की शक्ति तूटने से देश को भी नुकसान होता है क्योंकि देश की आर्थिक स्थिरता केश + पैसे के रोटेशन से होती है । जो व्यक्ति डूबता है, वह पैसे खर्चता नहीं है या कम खर्चा करता है और उसके कारण से पैसों का रोटेशन नहीं होता, जिससे देश डूबता है ।

(*C*) **बैंक बर्बाद :** एक-एक करके जब बहुत सारे लोग उठते जाते हैं, तब सबसे ज्यादा नुकसान बैंकों को होता है और उस बैंक की पोलिसीयाँ बदलती है जिससे इन्टरेस्ट की दर बढ़ती है क्योंकि उन्हें नुकसान की भरपाई करनी होती है और उसके कारण से सब महंगा होने लगता है और इन्फलेशन बढ़ता है, मंहगाई बढ़ती है ।

(*D*) **पोलिसी बर्बाद :** पूरे देश में लॉस चलने से सरकार की पोलिसीयाँ बदलती है जिसके कारण से इन्कम-टॅक्स, *GST* सभी में बदलाव होता है और सामान्य इंसान को खुद के पैसे उसके लिए भरने पड़ते है । दूसरे का टोपला दूसरे के सिर डालने में आता है और सभी में पैसे को कर-कसर पूर्वक उपयोग करने की भावना प्रगट होती है जो अंततः तो देश के लिये नुकसानकारी ही है ।

(*E*) **विश्वास बर्बाद :** जिस व्यक्ति ने शेर-मार्केट में लॉस किया होता है, वह लोगों के पास से लिये हुए पैसों की भरपाई नहीं कर सकता और एक दिन ऐसा उगता है कि जब मार्केट में उसके ऊपर से लोगों का विश्वास उठ जाये और लोग उसे क्रेडिट यानि की पैसे उधार रुप से देने का बंध कर देते हैं । उसके कारण ऐसी हालत होती है कि उसे मुफ्त में भोजनशाला में सूट पहनकर खाना पड़ता है और लोग उसे **सूटवाला भिखारी** कहते हैं ।

(*F*) **रीयल एस्टेट बर्बाद :** लगभग लोग शेरबाजार में से खुद की आवश्यकता नहीं, परंतु लक्झरीयों को पूरा करने के लिये पैसे कमाते होते हैं । परंतु लॉस होते ही कि जो लगभग सभी को होता ही है, वे खुद की इच्छानुसार का घरादि खरीद नहीं सकते और उसके कारण उनके घर, जमीनादि नहीं खरीदने से देश के रीयल एस्टेट सेक्टर को बड़ा नुकसान भी हो सकता है । ऐसा देखने में आया है कि जब *Stock Market* में लोगों को नुकसान हुआ है, तब रीयल एस्टेट कि जो इकोनोमी का प्राण कहा जाता है वह उड़ गया है ।

(*G*) **जॉब बर्बाद :** अभी और थोड़े दूर का सोचे तो, यदि व्यक्ति शेरमार्केट में लॉसादि करता है, तो वह खुद के पीछे की उम्र में भी काम करता है और रीटायरमेन्ट भी नहीं लेता, जिसके कारण उसकी जगह खाली नहीं होती और दूसरा व्यक्ति उसकी जगह जॉब पर नहीं लग सकता । उसके कारण बेरोजगारी की समस्या खड़ी होती है । यह अपनी आर्थिक हेल्थ की बात देश और व्यक्तिगत स्तर पर पूरी हुई ।

▶ ▶ ▶

अब तीसरी हेल्थ मेन्टल यानि कि मानसिक हेल्थ = स्वस्थता है । यह सबसे ज्यादा इफेक्ट होती है ऐसा देखने में आता है । लाफा मारकर गाल लाल रखनेवालों जैसी हालत शेरमार्केटवालों की होती है । वे मानसिक स्तर से खोखले हो जाते हैं और बाहर से हृष्ट-पुष्ट दिखने का नाटक करते हैं... मानसिक स्तर के कैसे क्रूर और कितने क्रूर नुकसान होते हैं वह अब देखते हैं ।

## (३) मेन्टल नुकसान :

(*A*) **नींद बर्बाद :** शेरमार्केटवालों को फ्युचर की चिंता बहुत ज्यादा होती है । और इन भविष्य की बेकार की चिंताओं में व्यक्ति को स्ट्रेस और Anxiety अनुभव होती है । जब स्ट्रेस एक लेवल से ऊपर जाता है, तब उस व्यक्ति की नींद हराम होने लगती है और उसे इन्सोम्निया जैसी प्रोब्लेम चालु हो जाती है ।

(*B*) **मन बर्बाद :** शेरमार्केट में बारबार अनपेक्षित झटके लगने से व्यक्ति की आशाएँ टूटती जाती है और साथ-साथ में उसका मन भी टूटता जाता है और यह टूटने की परंपरा उसे डीप्रेशन में डाल देती है । उसे सभी वस्तुएँ जो उसे पहले आनंद देनेवाली थी वे अब उसे नीरस लगती हैं और उसके कारण उसका मन दुनिया पर से उठ जाता है और उसके कारण उसे उठ जाने का मन हो जाता है ।

(*C*) **दिमाग बर्बाद :** जब मन बर्बाद होता है, सिर पर भार बढ़ता है, तब दिमाग चलने का बंध हो जाता है या तो दिमाग बिगड़ जाता है । उससे व्यक्ति की एकाग्रता बर्बाद हो जाती है और वह बराबर निर्णय ले नहीं सकता उसके कारण से उसे शेरमार्केट में और भी ज्यादा नुकसान होता है वह डूबता है । जब दिमाग ज्यादा से ज्यादा बर्बाद होता जाता है, तब उसकी सीधी असर यादशक्ति पर पहुँचती है और व्यक्ति का जीवन कन्फ्युजन से भरा हुआ और भूल जानेवाले स्वभाववाला हो जाता है, जो अंत में मौत लाता है ।

(*D*) **स्वभाव बर्बाद :** शेरमार्केट जब चालु होता है, तब सभी व्यक्ति बहुत ही समझ-सोचकर ही इन्वेस्टमेन्ट करते हैं, परंतु जब बारबार धक्के लगते हैं, तब उसके स्वभाव में रिस्क लेकर पैसे इकट्ठे करने की खराब आदत घुसती है । और फिर क्या होता है वह सब जानते ही है । वह डूबता है और दूसरों को मुंह नहीं बता सके उस तरह डूबता है । वह चिड़चिड़ा हो जाता है और उसका स्वभाव बर्बाद हो जाता है ।

(*E*) **शरीर बर्बाद :** शेरमार्केट के टेन्शन में जीनेवाले मूर्ख इतना टेन्शन लेते हैं कि उन्हें *A-B-C-D* यानि कि अटेक, ब्लडप्रेशर, कॉलेस्ट्रॉल, डायाबिटीस सभी दर्शन देने और कभी-कभी साथ में रहने के लिए भी आ जाते हैं । अब बिमारी आई, तो दवा लेनी ही पड़ती है, परंतु इस भाग्यशाली को दवा लेने का समय भी कहाँ मिलता है और फिर खुद अपनेआप से शेरमार्केट को बंध नहीं करनेवाले को कुदरत ही हॉस्पिटल पहुँचाकर शेरमार्केट बंध करवा देती है और बहुतबार तो हमेशा के लिये बंध हो जाता है ।

(*F*) **जीवन बर्बाद :** रीसर्च के अनुसार ऐसा देखने मिला है कि जो व्यक्ति शेर्स में होता है, वह लगभग हॉस्पिटल में खुद का दिमाग चेक कराने जाता है । उससे 'मैं रोगी हूं ।' ऐसी उसकी धारणा दृढ़ बनती है और जीवन में मजा उड़ जाती है । जब **मजा** उड़ती है । तब जीवन **सजा** लगती है और जीवन सजा लगने से जीवन को पूर्ण कर देने की भावना यानि कि स्युसाइड की भावना तीव्र होती जाती है । भावना कब रीयालीटी बन जाएँ वह कहा नहीं जाता ।

(*G*) **नियत बर्बाद :** रीसर्च के अनुसार ऐसा जानने मिलता है कि जो व्यक्ति शेरबाजार में लॉस का शिकार बनता है, वो बाद में गेरधंधो में घुस जाता है । गॅम्बलींग, ड्रग्स डीलिंग, बिना सोच के गैरकायदेसर इन्वेस्टमेन्ट आदि जितनी कितनी राजद्रोहकारी नीतिओं में, धंधों में वे घुस जाता हैं, जिससे उसकी नियत ही बिगड़ जाती है ।

ऐसी तो चिंता से लेकर स्युसाइड तक के कितने ही मानसिक दुःखों का भोग ये शेरमार्केट के कीड़े बनते हैं.. और अंजाम तो सभी का एक ही है - मौत...

अब हम चौथे आयाम को देखेंगे कि जो हमें सबसे प्यारा शरीर का है । शरीर के लिए धन की दौड़ चालु होती है और फिर एक समय ऐसा आता है कि धन के लिये शरीर की दौड़ हो जाती है और जब शरीर खुद की क्षमता से ज्यादा घिसने में आये तब बैठ जाता है । बाद में जो बड़ी दुर्घटना का सर्जन होता है वह हम फीजीकल हेल्थ के नुकसानों में देखेंगे ।

## (४) फीजीकल नुकसान :

(*A*) **हेल्थ बर्बाद :** जब स्ट्रेस जबरदस्त और लगातार चलता है, तब हार्ट की बिमारीयाँ, पेट की बिमारीयाँ और हाइ-ब्लड प्रेशर जैसी बिमारीयाँ शरीर को खाने लगती है । समझो कि प्रोफिट हो, तो धन आता है सही, परंतु टिकता नहीं है, क्योंकि शरीर ही उसे खिंच लेता है... पैसे के पीछे हेल्थ को नुकसान होता है ।

(*B*) **इम्युनिटी बर्बाद :** ज्यादा चिंता, ज्यादा रतजगा (रात्री जागरण) अपनी इम्युनिटी का खात्मा बुला देते है । जब इम्युनिटी कमजोर होती है, तब बिमारीयाँ अपने शरीर में मजबूत हो जाती है और पैसे के पीछे दौड़नेवाला शरीर के पीछे दौड़ता है और फिर यह सायकल मृत्यु तक चलती ही रहती है... पैसे-शरीर-पैसे-शरीर...

(*C*) **वजन बर्बाद :** स्ट्रेस के दो काम है -

(१) **वजन बढ़ाना :** लगभग शेरमार्केटवालों का जीवन बिठाऊ होता है और उसके कारण से धन की परत बढ़े या नहीं बढ़े परंतु पेट की परत (तह) तो गजब की बढ़ती है और फिर जहाँ वजन वहाँ बिमारीयाँ फीक्स है ।

(२) **वजन घटाना :** शेरमार्केट में जब ज्यादा वृद्धि-घटाव होता है, तब Extra चिंता के कारण से वजन में भी ज्यादा वृद्धि देखने मिलती है । व्यक्ति की खाने-पीने की अनियतता के कारण से, Schedule नहीं होने से वजन घटता है ।

(*D*) **हार्ट बर्बाद :** फायनान्शियल लॉस के कारण से जो स्ट्रेस खड़ा

होता है उसके कारण से ऐसा देखने में आया है कि ऐसी व्यक्तिओं को कार्डीयो-वेस्क्युलर प्रोब्लेम खड़ी हो जाती है । उसके कारण से हार्ट अेटेक, स्ट्रोक, ब्लॉक की शक्यताएँ बहुत बढ़ जाती है ।

(*E*) **मसल बरबाद :** शेरबजार के स्ट्रेस से मसल टेन्शन होता हैं, जिसकी कारण सर दुःखना, पीठ दुःखनी और दूसरे भी अंग दुःखना यह कॉमन चीज है ।

(*F*) **स्टेमिना बर्बाद :** जो मानसिक चिंताएँ इस शेरबाजार से खड़ी होती है उसके कारण से व्यक्ति को थकान बहुत आसानी से अनुभव होती है । तब की थकान से भी मन की थकान बहुत ही कातील होती है । उसके कारण पूरा तन ढीला (कम१) हो जाता है । और एकबार तन थकता है, तो दिन की हररोज की वस्तुएँ भी करने की शक्ति मर जाती है ।

(*G*) **भोजन बर्बाद :** शेरबाजार की सबसे मीठी बुरी खाने की आदत पर पड़ती है । यानि कि जो शेरबाजार में घुस जाता है वह व्यक्ति या तो बहुत ज्यादा खाता है या तो बहुत ही कम खाता है और दोनों वस्तु हेल्थ और भोजन पद्धति को बर्बाद कर देती है । हमने संक्षेप में शरीर संबंधी हेल्थ के मुद्दे देख लिये ।

अब, सबसे महत्वपूर्ण वस्तु जिसके उपर पूरा भारत देश टिका हुआ है, यानि कि भारतदेश की एकता टिकी हुई है, वह सोशियल हेल्थ यानि कि सोसायटी में जीना वह भी शेरमार्केट के कारण से बर्बाद हो जाता है । वह किस तरह, वह हम अब देखेंगे ।

## (५) सोशियल हेल्थ :

(*A*) **रीलेशन बर्बाद :** एक बहुत ही गंभीर बाबत रीसर्च में सामने आई है । शेरमार्केट में नुकसान करके घर में आया हुआ पति-पिता, पत्नी, बालक

पर **डॉमिस्टिक वायोलेन्स** गुजारते हैं यानि कि बालक, पत्नी को मारना, उसे खराब-खराब शब्द, गालियाँ बोलना और ऐसे तो अगणित अत्याचार ये व्यक्ति करते हैं । उसके कारण से तलाक, शत्रुता जैसी कितनी रीलेशन्स को तोड़नेवाली घटनाएँ खड़ी होती है ।

(*B*) **एज्युकेशन बर्बाद :** शेरमार्केट में हारे हुए व्यक्ति खुद के बच्चों को अच्छी स्कुल में, कॉलेज में भेज नहीं सकते । मानो कि वे भेज भी दे, एडमिशन भी ले ले, परंतु कुछ समय के बाद उसे खुद के बच्चों को स्कुल चेन्ज करवानी पड़े, और छोटी स्कुल में भेजने से अेज्युकेशन का स्तर और संस्कार बर्बाद हो जाते हैं । बेटा या बेटी आगे अच्छी जगह पढ़ना हो, तो फटीचर पिता उन्हें भेज नहीं सकता । उसके कारण से बेटे-बेटी का करीयर भी बर्बाद हो जाता है ।

(*C*) **कम्युनिटी बर्बाद :** कोई व्यक्ति शेरबाजार के कारण से खुद के हाथ उपर कर दे, तो वह जिस ज्ञाति का हो, कम्युनिटी का हो, उसका नाम बर्बाद हो जाता है । उस कम्युनिटीवालों के सामने तो वह व्यक्ति मुख नहीं ही बता सकता, परंतु साथ-साथ में वे कम्युनिटीवाले भी खुद का मुख नहीं बता सकते, क्योंकि लोगों का विश्वास ही उस कम्युनिटी के ऊपर से उठ जाता है । दक्षिण भारत में ऐसा बहुत विशेष से देखने मिलता है ।

(*D*) **लाइफ स्टाइल बर्बाद :** जो व्यक्ति शेरबाजार में उलझा हुआ होता है, वह सोसायटी के स्टेन्डर्ड के साथ जी नहीं सकता है । कभी पैसे कम पड़ते हैं, तो कभी समय कम पड़ता है और बाद में पैसे-समय के इस **झोल** में उसका सोसायटी के साथ की लाइफस्टाइल में भी **होल** हो जाता है । वह खुद शांति से समाज के साथ जी नहीं सकता । उसकी सोशियल एक्टीवीटीयाँ समय और पैसों के कारण से अटक जाती है ।

(*E*) **घर बर्बाद :** जैसे अपने भव्य को खुद के २-२ घर बेचने पड़े, उस तरह कितने ही लोगों को खुद के घर इस शेरबाजार के कारण से बेचने पड़े हैं । उसमें नुकसान यह होता है, कि समाज में घर बिना के व्यक्ति की वेल्यु रहती नहीं है और इसलिए वह व्यक्ति भी समाज से दूर ही रहता है और उससे समाज बिखरता जाता है ।

(*F*) **कल्चर बर्बाद :** शेरमार्केट में घुसने के बाद मन को रिलेक्स करने

के लिये, स्टेटस के लिये लोग नशे में - शराब में - सबस्टन्स - अब्युज में घुस जाते है । पूरे समाज में उसका नाम 'नशेडी' के रूप में बदनाम होता है और बाद में वह व्यक्ति समाज के तानों से समाज से दूर होकर अंत में खुद की ही कब्र खोदता है । और इतना ही नहीं... ऐसे ही नशेडी आगे जाकर मर्डर, रेप करनेवाले भी बनते हैं । परंतु उसके मूल में तो शेरमार्केट ही होता है ।

बड़े-बड़े फिलोसोफरों ने भी इस मार्केट से दूर रहने की सलाह खुद के पुस्तक और प्रवचनों के माध्यम से दी है, परंतु ऐसा कहा जाता है कि पैसे के पीछे पागलो को कान नहीं होते, उन्हें कुछ भी सुनाई देता नहीं है और वे किसी का सुनते भी नहीं है । उन बहरों में अपना नंबर नहीं लग जाये, उसका ध्यान हमें ही रखना है । यह **स्टॉक** मार्केट **स्टॉक** मार्केट नहीं, परंतु **स्टॉक** को खानेवाला **शार्क** मार्केट है... कहीं अपना भी सब खा न ले, वह ध्यान रखना... इसमें *Entry* बहुत आसान है, परंतु *Exit* सौ बार लात खाने के बाद भी कठिन है... तो भी लात खानी ही हो, तो आपकी इच्छा ?

# U-टर्न,
# भाविन की दीक्षा का अनोखा मोड़

# प्रस्तावना

'इस पुस्तक का नाम क्या है?' नाम से एक पुस्तक छपी। सैकड़ों-हजारों लोगों ने इसे पढ़ी। उस भाई को लेनदारों की तरफ से कोई समस्या न हो, इसलिए इसमें कुछ बातें बदल दी गई थीं। लेकिन अब सारी सच्ची बातें सार्वजनिक की जा रही हैं।

(१) उस युवक का नाम भव्य नहीं, **भाविन** है।

(२) वह सौराष्ट्र का नहीं, बल्कि **कच्छ** का है।

(३) उसके अपने दो घर मुंबई, **डोंबिवली** में थे।

यह सब अब इसलिए सार्वजनिक किया जा रहा है क्योंकि अब उसे कोई डर नहीं रहा... वह डर क्यों नहीं रहा? यह अब इस छोटी सी पुस्तक में बताया जाएगा।

**गुणहंस विजयगणि**
**बैंगलोर कुमारा पार्क नूतन उपाश्रय**
**तारीख २५-०५-२०२५,**
**रविवार दोपहर १२-०० बजे**
**मारवाड़ी जेठ वद-१३**

# पूर्वभूमिका

सन् २०२३ में नवंबर महीने में भाविन ने आत्महत्या का विचार किया था, और वह विचार छोड़ भी दिया, और उसके बाद माता-पिता को राजकोट तरफ भेजकर वह कुलपाकजी पहुँचा, वहाँ दिवाली के दिनों में लगातार तीन आयंबिल (जैन तपस्या का एक प्रकार) किए, उसके बाद पूज्य पंन्यास विरागरत्न महाराज और मुनि देवर्षिरत्नविजयजी की प्रेरणा से विजयवाड़ा अरिहंतधाम तीर्थ के उपधान में शामिल हुआ। उस उपधान में तीस-पैंतीस दिन बाद उसने आलोचना (अपने पापों का प्रायश्चित) लिखी, ६० पृष्ठों की! मुझे हकीकत पता चली। और मेहनत करके उसके माता-पिता को ढूँढा, अरिहंतधाम में बुलवा लिया। उपधान के बाद चेन्नई के नीतिनभाई ने उन्हें अपने यहाँ नौकरी पर रख लिया। और लिफ्ट वाले नए बिल्डिंग में वह परिवार किराए से रहने भी लगा....

उसके बाद क्या हुआ? अब देखते हैं....

# हैदराबाद की ओर हमारा विहार

मेरे शिष्य अनामीविजय को दीक्षा का डेढ़ वर्ष बीत गया था। लेकिन बड़ी दीक्षा बाकी थी। क्योंकि बड़ी दीक्षा पदवीधर महात्मा ही दे सकते हैं। और मेरी पदवी नहीं हुई थी। और अन्य पदवीधर दक्षिण भारत में मुझे नहीं मिले थे। इसलिए अब मुझे लगा कि एक बार मुझे सारे जोग करके पदवी ले लेनी चाहिए। ताकि बड़ी दीक्षा देने में कभी कोई बाधा न आए।

हमारे वडील **पूज्य आचार्य जिनसुंदर सूरिजी** ने इसके लिए अच्छी मेहनत की, उस वक्त हैदराबाद में पूज्य पंन्यास **विरागरत्न महाराज** विराजमान थे, उनसे विनंती की। उन्होंने अनुमति दी और हम ३०० कि.मी. का विहार करके सारे साधु हैदराबाद पहुँचे। यूँ तो ११ वर्ष पूर्व ही पूज्य **गच्छाधिपति जयघोषसूरिजी महाराज** ने मुझे आंबावाड़ी जैन संघ में पदवी के लिए अनुमति दे दी थी। लेकिन उसके लिए मेरे कुल नौ महीने के जोग बाकी थे। जैसे श्रावक उपधान करते हैं, वैसे ही साधुओं में जोग की आराधना होती है। हमारे जोग अति कठिन होते हैं। आयंबिल-नीवी तो होते ही हैं, लेकिन उसके अलावा अत्यंत कठिन कई सारी क्रियाएँ होती हैं। वह जोग मेरे नौ महीने के बाकी थे, ११ वर्ष पूर्व मेरा ऐसा उत्साह नहीं था, इसलिए जोग नहीं किए। और इसलिए पदवी नहीं हुई, अब तो ११ वर्ष बीत चुके थे, बस, सिर्फ जोग करने बाकी थे। और उस नौ महीने की विशिष्ट आराधना के लिए हम विजयवाड़ा के उपधान के बाद हैदराबाद पहुँचे, और पूज्य पंन्यास विरागरत्न महाराज के सान्निध्य में जोग शुरू किए...

# सिकंदराबाद में भाविन के माता-पिता

हमारा चातुर्मास सिकंदराबाद में था ।

भाविन का एक भी फोटो मीडिया में न जाए, इसकी पूरी सावधानी बरती गई थी। क्योंकि वह फोटो घूमता-फिरता अगर उसके लेनदारों के पास पहुँच जाता, तो भाविन और उसके माता-पिता को समस्या होने की पूरी संभावना थी। भाविन की भावना तो थी कि, 'मुझे सारे पैसे चुकाने हैं।' लेकिन वह चुकाए कैसे? अपने पास तो पैसे ही नहीं हैं। और रकम भी छोटी नहीं थी। ब्याज न दे, और मूल रकम दे तो भी लगभग ९० लाख से १ करोड़ रुपये तक की रकम चुकानी थी। इसमें बैंक लोन, भागीदार के पैसे और छोटे-बड़े कुल १०० से भी ज्यादा लोगों की छोटी-बड़ी रकम शामिल थी।

एक बार चौमासे में भाविन और उसके माता-पिता सिकंदराबाद में दर्शन-वंदन के लिए आए। दोपहर में गोचरी के बाद बैठे, तब मैंने भाविन से पूछा,' तुम्हारी दीक्षा लेने की भावना है?' उन्होंने एक सेकंड में हाँ कह दिया...

मैंने उनके माता-पिता से पूछा कि, 'आप तो बूढ़े हैं। ६० से ऊपर उम्र है। क्या आप भाविन को दीक्षा के लिए हाँ कहेंगे?'

मुझे ऐसा लगा कि, 'वे ना कहेंगे।' क्योंकि उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। दूसरा कोई बेटा या बेटी... कोई नहीं, और अपना घर नहीं। कोई पूंजी नहीं, तो वे खुद कहाँ रहेंगे? क्या खाएंगे? क्या पिएंगे? वे तो अब स्वयं कमा भी नहीं सकते। नीम के सूखे पत्तों की तरह वे शरीर से ढीलेढाले हैं।

और पूरी दुनिया जानती है कि आज धन के बिना आदमी की कोई कीमत नहीं है। '**बिना पैसे का नाथियो, पैसे से नाथालाल...**' (जिसके पास पैसे नहीं वह नाथियो, जिसके पास पैसे वह नाथालाल) यह कहावत यूँ ही नहीं बनी।

लेकिन मेरे आश्चर्य के बीच उन दोनों ने एक सेकंड में हाँ कह दिया। और बोले, 'महाराज साहेब! वैसे भी हमने तो इसे मरा हुआ ही मान लिया था! वृद्धाश्रम में ही तो रहने चले गए थे न! आज यह हमें मिला, यह सब धर्म के ही प्रभाव से है! तो हम इसे दीक्षा लेने से क्यों रोकें? हमारा तो जो होना होगा, सो

होगा... लेकिन इसकी दीक्षा में हम कभी ना नहीं कहेंगे...

मैंने पूछा, 'लेकिन इसकी दीक्षा के बाद आप कहाँ रहेंगे? अभी तो यह महीने के २० हजार कमाता है। उसमें से १० हजार किराए के देकर आप वहाँ रहते हैं। इसकी दीक्षा के बाद क्या करेंगे?'

दोनों का जवाब तैयार ही था। 'हम जिस वृद्धाश्रम में पहले रहते थे, उसके मैनेजर बहुत अच्छे हैं। उन्होंने हमसे कहा था कि जब भी आपको वापस आना हो, तो आ सकते हैं। तो हम वापस वहीं चले जाएँगे। शांति से अपना जीवन बिताएँगे...'

'लेकिन यह १ करोड़ रुपये का कर्ज है... इसका क्या करेंगे? शास्त्रों में मना किया है कि कर्ज हो तब तक दीक्षा नहीं देनी चाहिए । नहीं तो जैन धर्म की निंदा होती है । वह लेनदार बोलने ही वाले हैं कि 'हमारे पैसे खा गया। और अब पैसे वापस देने न पड़ें, इसलिए साधु बनकर बैठ गया.... ये साधु लोग भी जबरदस्त हैं। अपने चेले बनाने की लालच में ऐसे देनदारों को भी दीक्षा दे देते हैं... अब हमें तो उस पैसे के लिए सिर धोना ही पड़ेगा।' इसलिए पैसे चुकाए बिना तो दीक्षा नहीं हो सकती।' मैंने कहा, लेकिन इसका प्रैक्टिकल जवाब उनके पास नहीं था और मेरे पास भी नहीं था। क्योंकि उनके पास पैसे नहीं थे और मेरे पास एक आत्मा की दीक्षा के लिए १ करोड़ देने वाले कोई भक्त नहीं थे। इसलिए यह बात यहीं अटक गई...

# १०० ओली के पारणे का चढ़ावा - २२०० आयंबिल

चेन्नई आराधनाभवन शाहुकारपेट में **तार्किकशिरोमणि, श्रमणी गण-नायक आचार्यदेवश्री अभयशेखरसूरिजी** का चातुर्मास था। भाविन उसमें अच्छी तरह से जुड़ा। अंत में आचार्यदेव के दो शिष्यों के १००वें ओली का पारणा था। उसके चढ़ावे के लिए साहब ने आराधना में बोलने का निर्णय किया, उसमें भी उन्होंने आयंबिल में ही चढ़ावा बुलवाया। भाविन ने वह चढ़ावा लेने का निर्णय किया, अंत में २२०० आयंबिल का चढ़ावा लिया, उन्हें आदेश मिला। नियम ऐसा है कि 'जितने आयंबिल का चढ़ावा बोलो, उससे दुगुने दिनों में उतने आयंबिल करके देने...'

२२०० आयंबिल ४४०० दिनों में करने के दृढ़ संकल्प के साथ भाविन ने चढ़ावा लिया। बहुत ही उल्लास के साथ साधु भगवंत को प्रथम वोहराने का लाभ भाविन ने लिया।

और तुरंत ही ओली का पाया भी डाल दिया। और १७-१८ ओली तो अब तक हो भी गई हैं।

# खेतवाड़ी मुंबई में साध्वीजी के प्रवचन

'इस पुस्तक का नाम क्या?' यह पुस्तक त्रिस्तुतिक संप्रदाय की एक प्रभावशाली साध्वी श्री पद्मरेखाश्रीजी ने पढ़ी। उन्हें यह पुस्तक बहुत ही असरकारक लगी। उन्होंने खेतवाड़ी जैन संघ में उस पुस्तक के आधार पर प्रवचन दिए, वहाँ के युवाओं को वह प्रवचन बहुत पसंद आए।

उन्होंने मुंबई में रहने वाले हमारे संसारी भाई प्रतीकभाई से संपर्क किया। मेरे कहने से प्रतीकभाई और संसारी भाभी सीमाबहन साध्वीजी के पास जाकर आए। आँखों देखी सारी बातें बताई, अंत में बात आई भाविन की दीक्षा की... बस, वहाँ वे चुप हो गए। खेतवाड़ी में उन प्रवचनों का अच्छा माहौल बन गया था।

# कुलपाकजी में प्रस्ताव आया

हमारे उपधान कुलपाकजी में चल रहे थे, और प्रतीकभाई की तरफ से खेतवाड़ी साध्वीजी के प्रवचनों के मैसेज मिल गए थे। और थोड़े ही दिनों में खेतवाड़ी के दो युवा कुलपाकजी आए और उन्होंने इच्छा जताई कि 'अगर भाविन दीक्षा लेता है, तो हम कर्ज उतारने की मेहनत करें, लेकिन वह रकम कितनी है?' भाविन ने १ करोड़ रुपये बताए, नाम + रकम के साथ एकदम परफेक्ट लिस्ट दी, उनकी लाभ लेने की इच्छा तो निश्चित रूप से थी, लेकिन रकम बहुत बड़ी होने से वे विचार में पड़ गए और काम अटक गया।

# बैंगलोर-सुशीलधाम उपधान में

हमारा १२ साधुओं का चौमासा श्रमणी गणनायक **आचार्यदेव श्री अभयशेखरसूरिजी महाराज** के पास निश्चित हुआ था। हम ७०० कि.मी. का विहार करके बैंगलोर पहुँचे। वहाँ से साहेब के सान्निध्य में ही सुशीलधाम तीर्थ पहुँचे जहाँ समर-उपधान होने वाले थे। वहाँ दूसरे या तीसरे दिन ही देवर्षिरत्न महाराज से खबर आई कि, 'एक भाग्यशाली भाविन की दीक्षा के लिए ४५ लाख रुपये देने को तैयार हैं... उनका सारा कर्ज.अगर उतर जाए, तो वे दीक्षा ले सकते हैं।' हमें इस खबर से बहुत खुशी हुई।

# लाभार्थी कौन थे?

फिर पता चला कि अमेरिका का जो युवक ऋषि पूज्य पंडित विरागरत्न महाराज के पास दीक्षा लेने वाला है, उसकी मम्मी की दीक्षा भी निश्चित हो गई है। और मम्मी ही यह लाभ लेना चाहती हैं... क्योंकि उन्हें अब पूरा संसार छोड़ना ही था, तो बाकी बचे पैसे अच्छे मार्ग में ही इस्तेमाल करने थे । एक युवक कर्ज से मुक्त होकर दीक्षा ले, इससे अच्छा और क्या हो सकता है?

# कुलदीपभाई का सपोर्ट

१०० से ज्यादा लोगों के पैसे चुकाने थे। १ करोड़ रुपये का कर्ज सेटलमेंट करके ५० लाख में पूरा करना था। एक ही व्यक्ति का कर्ज होता, तो तो एक ही व्यक्ति को समझाना पड़ता, लेकिन यह तो १०० से भी ज्यादा लोग थे। उसमें छोटे लोगों की १०-२०-३० हजार जैसी रकमें भी थीं।

यह सब सेटिंग कौन करे? आखिरकार मेरे शिष्य वासक्षेप विजय के भाई पंकिल ने अहमदाबाद के कुलदीपभाई से परिचय करवाया, वह भाई परोपकार की भावना वाला निकला। वह स्पेशली अहमदाबाद से बैंगलोर आए, हमसे मिले, सारी बातें उन्होंने समझीं और तारीख १८ मई के दिन उन्होंने हमसे कहा कि 'मैं इस महीने के अंत तक सब सेटिंग करवा दूँगा। मैं घर भी नहीं जाऊँगा, यह काम पूरा करने के बाद ही अपने घर अहमदाबाद जाऊँगा। आप खुशी से दीक्षा की तैयारी करो...'

# दीक्षार्थी अमर रहें

तारीख ८ जून को मुंबई शाहपुर के पास मानसमंदिरम् तीर्थ में ऋषि और उनकी मम्मी की दीक्षा निश्चित हो चुकी थी । कुलदीपभाई ने २२-२३ तारीख तक ५०% से ऊपर का काम पूरा कर दिया । दक्षिण भारत में चिपलून चले गए, वहाँ लेनदारों से मिले, सारी बातें कीं... पहले तो उन सबने गुस्सा प्रकट किया, अपशब्द भी बोले। लेकिन फिर पता चला कि ५०% पैसे वापस मिलते हैं, तो वे एकदम खुश हो गए। पैसे लिए, कर्ज । चुकता होने के हस्ताक्षर करके दिए... और फिर तो कुलदीपभाई को कहने लगे 'नाश्ता करो, भोजन करके जाओ...' वगैरह। पैसे की ताकत जबरदस्त है, यह स्पष्ट दिखाई देता है।

कुलदीपभाई ने हमें बताया कि 'अब आप दीक्षा की तैयारी कर सकते हैं। बस, अब ५०% काम बाकी है। और वह भी हो जाएगा।'

और उनकी हरी झंडी मिलते ही पूज्य पंन्यास विरागरत्न महाराज ने **पूज्य गच्छाधिपति राजेंद्रसूरिजी** की अनुमति लेकर दीक्षा की जय बुलवाने का निश्चय किया... दिन निश्चित किया रविवार, तारीख २५-०५-२०२५ और स्थान निश्चित किया ईर्ला जैन संघ मुंबई! निश्रा निश्चित हुई पूज्य गच्छाधिपतिश्री की!

# डोंबिवली वाले भाई कहते हैं कि

लेनदारों में डोंबिवली के भी कुछ भाई हैं । उनमें से एक भाई को जब कुलदीपभाई ने भाविनभाई की बात बताई, तो उन्होंने कहा कि, 'उस बात को तो ११ साल बीत गए, मैं तो यह समझकर ही बैठा था कि वह पैसा अब वापस नहीं आएगा। लेकिन चलो, अच्छा हुआ कि तुम आज ११ साल बाद ५०% रुपये वापस देने आए हो। अभी मेरे घर बेटे की शादी है। फूल नहीं, तो फूल की पत्ती... मुझे जो मिला, उससे मुझे थोड़ा तो सपोर्ट मिलेगा ही।

उन्होंने राहत महसूस की।

# तारीख २५-०५-२०२५, रविवार

चेन्नई से विक्रमभाई भाविन को लेकर मुंबई फ्लाइट में सुबह जल्दी पहुँच गए। वहाँ मेरे संसारी भाई प्रतीकभाई, विले पार्ले के आराधक भाई हितेशभाई गाला, हेमगुण महाराज के माता-पिता... ये चार लोग भी जुड़े।

भाविन के मम्मी-पापा तो उपधान में सुशीलधाम में हैं। अब ३० मई के दिन तो उनकी माला है। सिर्फ पाँच दिन ही बाकी हैं। इसलिए उनका उपधान छोड़ देना उचित नहीं था। इसलिए उन्होंने पौषध नहीं तोड़ा, और लाडले बेटे भाविन की दीक्षा की जय में वे हाजिर नहीं रहे।

वहाँ ईर्ला संघ में बहुत अच्छी तरह से दीक्षा की जय बोली गई। दीक्षा होगी तारीख ८-६-२०२५ को मानस्तंभतीर्थम् तीर्थ में ऋषि के साथ ही! बस, कल से चौदहवें दिन तो उसके हाथ में रजोहरण होगा। देह पर वेष होगा... और दुनिया की नजर में दो साल पहले का पापी वह भाविन अब बनेगा विश्व को वंदनीय पंचमहाव्रतधारी साधु!

आज दोपहर में गोचरी करने के बाद बैंगलोर कुमारपार्क के नूतन उपाश्रय में बैठकर मैंने यह लिखना शुरू किया है। मन में इच्छा हुई कि ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन सबको दिखाऊँ और उत्साह जगाऊँ कि तुम चाहे कितने भी पापी हो, तो भी तुम इसी भव में अपना जीवन बदल सकते हो।'

# उपधान में भाविन के माता-पिता

हम तारीख २०-५ तक तो उपधान में सुशीलधाम में ही थे। मैंने भाविन के माता-पिता को उपधान में देखा है। शुरुआती एक-दो दिन बाद ही वे कहते थे कि, 'हमसे उपधान नहीं होगा। हम पारके चले जाएँगे।'

मैंने दो-तीन दिन रुकने को कहा। वे रुके... आखिरकार आगे बढ़े, सोलह दिन पूरे हुए। पापा कहने आए कि 'भाविन की मम्मी तो घर जा रही हैं। उन्हें पैर की बहुत समस्या है। अब उनसे नहीं हो पाएगा। बस, अठारह दिन हो गए तो बस है... और मैं भी सोच रहा हूँ कि जाऊँ या रहूँ?'

मुझे लगा कि 'उनके लिए यह अच्छा अवसर है। अभी अगर उपधान छोड़ देंगे, तो भविष्य में करेंगे या नहीं? यह एक बड़ा प्रश्न ही रहने वाला है।' मैंने उन्हें प्रेरणा तो दी, लेकिन Force नहीं किया। मैंने मन ही मन नियति को सलाम कह दिया। उसके बाद दस मिनट बाद मैं नीचे के हॉल में गया, तो वहाँ वे क्रियाकारक पूज्य पंन्यास **विनयशेखर** महाराज के पास खड़े थे । मैंने उनसे कहा कि, 'यह कपल पारके जाने की बात कर रहा है, लेकिन अब आपके हाथ में है, जाने मत देना।'

और मेरे उन शब्दों को पूज्य पंन्यास जी ने पकड़ लिया। उन्हें समझा-कर, Force देकर भी उपधान चालू ही रखवाया।

१९-२०वें दिन जब मैंने उन्हें देखा, तो ख्याल आया कि वे उपधान में ही हैं। Force भी आत्मा के लिए हितकारी हो सकता है... यह अनेकांत का प्रत्यक्ष अनुभव था। मेरे स्वभाव के अनुसार मैं Force नहीं दे सकता, वह अलग बात है। लेकिन 'Force करना ही नहीं चाहिए' ऐसा एकांत मैंने बाँधा नहीं है। मेरी आँखों के सामने उसका लाभ मुझे दिखाई दे रहा है।

उसके बाद २०वें दिन से ३९वें दिन तक मैंने उन्हें अनेक बार उपधान में देखा है। प्रायः उपवास के दूसरे दिन दोपहर १.०० बजे नीवी करनी होती है, इसलिए उस दिन वे बहुत ढीले पड़ जाते। साहेब का व्याख्यान ९.३० से ११.०० बजे तक रहता, उस व्याख्यान के बाद जब मैं हॉल में वापस आता, तो कई

बार मैंने देखा है कि नीचे कटासणा बिछाकर और उपधि पर सिर टिकाकर वे आराम करते होते... उन्हें देखकर मेरा हृदय भर आता। इस पिता ने कितने दु:ख सहे हैं, उनके मन पर कैसी-कैसी यातनाएँ बीती हैं, वृद्धाश्रम में कैसे रहे हैं, और वहाँ किसी ने दिए हुए १० रुपये भी उन्होंने दान के रूप में लिए हैं... अभी उनके मुख पर थकान महसूस हो रही है, बुढ़ापा दिख रहा है, भूख दिख रही है, बस! डेढ़ घंटे गुजरने का इंतजार कर रहे हैं, फिर नीवी करके भूख की आग को शांत करेंगे...

यह लिखते समय भी उनके उस चेहरे की मासूमियत, दीनता, दर्द... सब नजरों के सामने तैर रहा है।

जब २० तारीख को वे मुझे मिले, तो कह रहे थे, 'आपने प्रेरणा दी, और हमारे उपधान हो गए... आप तो आज जा रहे हैं, और मोक्षमाला पर वापस नहीं आने वाले हैं, बस आशीर्वाद देना।'

संसार में कोई स्वजन नहीं हैं, एक मात्र बेटा है, और वह भी दीक्षा ले रहा है। पहले वह इतना बिगड़ा हुआ था कि वह दूर चला जाए तो अच्छा... ऐसी भावना थी। और अब वह सुधर गया है, तो वह दीक्षा लेकर दूर जा रहा है। है न विचित्रता!...

# मोक्षमाला की व्यवस्था

तारीख १८-५ रविवार को सुशीलधाम में मोक्षमाला के चढ़ावे बोले गए। साहेबजी ने एक नियम बहुत अच्छा बनाया था कि, 'मोक्षमाला का जो भी चढ़ावा बोलो, वह पैसा तारीख ३०-५ के दिन माला पहनने से पहले अवश्य भर ही देना...' भले ही चढ़ावे करोड़ों रुपये के न हों। लेकिन जो हो, वह तुरंत ही भर देना होगा।'

पहली माला का चढ़ावा २३ लाख रुपये में गया। इस तरह प्रायः ३० जितनी मालाओं के चढ़ावे बोले गए। कुल माला १९५ हैं, इसलिए बाकी के १९५ लोगों की माला नक़रे के अनुसार व्यवस्थित की गई। उसमें साहेब ने अलग-अलग नक़रे निश्चित किए हैं। जिसमें जिसे जो अनुकूल हो, उसमें वह जुड़ सकता है। सबसे छोटा नक़रा ११०० रुपये का है।

भाविन ने शीलगुण महाराज से सलाह ली कि, 'मैं पापा-मम्मी को कौन सी माला पहनाऊँ? कौन सा नक़रा लिखाऊँ?' शील महाराज ने कह दिया कि, 'तुम्हारे पास धन अल्प है, और लेनदारों को चुकाना बाकी है। ऐसी कंडीशन में सिर्फ १,१०० रुपये का नक़रा लेकर ही माला पहन लेनी । भले ही आखिर में माला आएगी, लेकिन हमें तो मोक्षमाला से मतलब है न।'

और भाविन ने १,१०० रुपये के नक़रे में दोनों मालाएँ लिखवा दीं।

तारीख ३०-५ के दिन सुशीलधाम में मोक्षमाला का कार्यक्रम है। १९५ मालाएँ होंगी, उसमें शायद आखिरी ५ मालाओं में भाविन के माता-पिता का नंबर होगा। अच्छा है कि उनके कोई समाज-स्वजन नहीं हैं, नहीं तो फिर उन सबके सामने नीचा देखना पड़ता, और मानसिक दुःख बढ़ जाता...

# मेरी भावना

भाविन से मुझे यह कहना बाकी है कि तुम इतना काम कर लो...

(१) प्रत्येक लेनदार को फोन करके सच्चे हृदय से माफ़ी मांगो...

(२) प्रत्येक लेनदार को अपनी दीक्षा में आमंत्रित करना, जितने आएंगे, उतने भी दीक्षा देखकर धर्म प्राप्त करेंगे। मन में शायद थोड़ा भी हिचकिचाहट होगी, वह भी मिट जाएगी...

(३) दीक्षा लेने से पहले कुल १०८ मजबूत नियम ले लो, उससे तुम्हारा संयम जीवन सुंदर प्रकार का जिया जाएगा...

# पाठकों के लिए

इसे पढ़कर अगर आपको ऐसा मन हो कि, 'भाविन की दीक्षा के बाद उसके माता-पिता का क्या होगा? चलो, हम अपनी शक्ति के अनुसार साधर्मिक भक्ति करें... हर महीने १०,००० या ५,००० या १,००० उस परिवार को पहुँचाएँ... ताकि बुढ़ापे में वे अच्छी तरह से जी सकें।' तो अवश्य संपर्क करना...

**प्रतीकभाई (मुंबई) - 93232 29655**

और अगर साधर्मिक भक्ति की भावना न हो, तो कोई बात नहीं, लेकिन अंतर मन से उन सबकी अनुमोदना तो जरूर करना...

# दो रहस्य आपको खोजने हैं

यह पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद आपको दो रहस्य खोजने हैं।

(१) **रहस्य:** आपको एक प्रश्न खड़ा करना है, वह प्रश्न ही एक रहस्य है। इसे पढ़ने के बाद भाविन का इतिहास जानने वालों के मन में एक प्रश्न होने की संभावना है, वह प्रश्न आपको खोजकर बताना है। प्रायः यह संभव नहीं होगा।

(२) **रहस्य:** उस प्रश्न का सही उत्तर दूसरा रहस्य है। शायद पहला रहस्य मिल जाए, तो भी दूसरा रहस्य तो नहीं ही मिलेगा...

जो भाग्यशाली इन दो रहस्यों को खोज सके, वह लिखकर प्रतीकभाई के नंबर पर व्हाट्सएप कर सकता है।

जो दोनों रहस्यों को खोजने में सफल होंगे, उन सभी का विशेष सम्मान किया जाएगा।

लेकिन मुझे लगता है कि एक भी व्यक्ति का सम्मान करने का अवसर ही नहीं आएगा।

**नोट:** जैन मीडिया-**मेहुलभाई** के कहने से इस छोटी सी पुस्तिका का नाम रखा गया है U-Turn

# जिज्ञासा-समाधान ।

(१) **जिज्ञासा: इस तरह ५०% पैसे चुकाकर कर्ज.पूरा कर देना क्या उचित है?**

**समाधान:** भाविन ने जो कर्ज.लिया था, उसे चुकाने की शक्ति अभी उसके पास नहीं थी। उसकी भावना निश्चित रूप से है कि मैं १००% कर्ज. चुकाऊँ। लेकिन अभी महीने के २० हजार कमाता है, उसमें से सिर्फ ५ हजार ही मुश्किल से बचत होती होगी। क्योंकि किराया ही १० हजार का हैं। खाने-पीने में तीन लोगों के बीच महीने के ५ हजार तो हो ही जाते हैं न? बीच में उनकी मम्मी का ऑपरेशन आया, तो उसमें सहायता लेनी पड़ी। अब आप ही सोचिए कि साल के मुश्किल से ६० हजार इकट्ठे होते हैं, १० साल में ६ लाख इकट्ठे होते हैं। १०० साल में ६० लाख होते हैं, तो भी १ करोड़ रुपये कैसे चुकाए?

आप कहेंगे कि, 'वह ज्यादा कमाएगा न?' लेकिन इसकी गारंटी कितनी है? उसे सट्टा वगैरह तो करने ही नहीं देना चाहिए... मान लीजिए वह धंधा करे, लेकिन पूंजी कहाँ है? कौन उसे पूंजी देगा? और वह तो उसे आता ही नहीं है। और धंधे में नुकसान गया तो? नौकरी में सुरक्षा है। लेकिन वहाँ इनकम बढ़कर भी कितनी बढ़ेगी? चमत्कार के आधार पर तो जिया नहीं जा सकता...

इसलिए १००% कर्ज.चुकाया जा सके, वह तो जाने दो... लेकिन वह १०% चुकाए, वह भी संभव न था। और यह १ करोड़ तो ब्याज के बिना की बात है। ब्याज गिनने जाएँ, तो कर्ज.की रकम कितनी होगी, भगवान जाने।

तो दुनिया में भी यह रिवाज मान्य है कि अगर आदमी कर्ज.नहीं चुका सकता तो आखिरकार जितना संभव हो उतना चुका दे। और, जो बड़े-बड़े लोग हाथ खड़े कर देते हैं, वे ज्यादातर अपनी सुरक्षा पहले कर लेते हैं, उन्हें जीने में कोई समस्या न आए, मौज-शौक की जिंदगी में कोई फर्क न पड़े, ऐसा सेटिंग करके फिर १०%, २०% चुकाते हैं। भाविन ने अपने लिए क्या

रखवा? माँ-बाप के लिए क्या रखवा? कुछ है ही नहीं, तो रखवे क्या? इसलिए अगर उसने ५०% भी चुका दिए हैं, तो वह उचित ही है।

(२) **जिज्ञासा: लेकिन अगर वह १००% चुकाने के बाद ही दीक्षा ले तो?**

**समाधान:** बात वही है कि दूसरे ५०% भी कहाँ संभव हैं? वह छोटी रकम नहीं है। ५० लाख वह कहाँ से लाएगा? असंभव के लिए मेहनत करना उचित नहीं है।

(३) **जिज्ञासा: लेकिन जैसे इस ऋषि की मम्मी ने ४५ लाख दिए, वैसे दूसरे कोई ऐसे दाता नहीं मिलेंगे?**

**समाधान:** अगर कोई मिले, तो आज भी १००% चुकाने की तैयारी है ही। लेकिन इतने बड़े रकम के दाता मिल जाएँगे, ऐसा मानना उचित नहीं है, यह चमत्कार जैसी बातें हैं। और इसके लिए साधुओं का किसी को प्रेरित करना भी उचित नहीं है। फिर तो लोग साधु के लिए कहेंगे कि, '५० लाख देकर चेले को खरीदा है...' इससे तो साधुओं की और जैन शासन की निंदा होती है... इसलिए इसके लिए किसी को व्यक्तिगत प्रेरणा करना उचित नहीं है। और सामान्य प्रेरणा तो भाविन की पुस्तक में हो ही गई है। उसमें लिखा ही है कि, 'कर्ज.के कारण दीक्षा नहीं ले रहा।' इतने से समझदार लोग समझ ही जाएँगे न!

ऋषि की मम्मी ने दिए, उसका भी कारण तो यह है कि वह खुद दीक्षा ले रही है, तो अपनी पूंजी उन्होंने खर्च कर देनी है। भाविन की बात का उन्हें अंदाज़ा आया, इसलिए उन्हें ४५ लाख रुपये की तैयारी दिखाई।

(४) **जिज्ञासा: वही १ करोड़ दे दें तो?**

**समाधान:** उँगली दे, तो हाथ पकड़ने जैसी यह बात है। जिस बहन ने उदारता से ४५ लाख दिए हों, उनकी अनुमोदना करने के बजाय

'उन्होंने १ करोड़ क्यों नहीं दिए?' ऐसा विचार उचित नहीं है न! और, उनके पास १ करोड़ देने की अनुकूलता नहीं होगी... यह भी संभव है। दीक्षा के बाद वह कुछ पैसे रखकर कुछ करने वाली हैं, ऐसा तो नहीं है। वे सब खर्च ही रही हैं। तो उनकी ४५ लाख देने की ही शक्ति होगी, ऐसा मानना ही पड़ेगा।

(५) **जिज्ञासा: इस तरह पैसे देकर दीक्षा करवाना क्या उचित है?**

**समाधान:** यह बिलकुल उल्टा पकड़ा आपने ! अंतर समझने जैसा है।

(१) किसी को दीक्षा लेने की भावना नहीं है, लेकिन उसे लालच दिया जाता है कि हम तुम्हारे परिवार को ५० लाख देंगे, और तुम दीक्षा ले लो।' तो पैसे की लालच से दीक्षा देना बिल्कुल गलत है।

लेकिन भाविन को तो दीक्षा लेने की भावना है, और सिर्फ कर्जे के कारण रुका हुआ है, तो उस कर्जे को चुकाने के लिए पैसे देने है, उसका कर्जा चुका दिया जाए, तो दीक्षा हो... इस तरह से व्यवस्था करना लालच नहीं है, सहायता है, साधर्मिक भक्ति है।

(२) क्या वह ४५ लाख रुपये उसके परिवार को मिलते रहे हैं? नहीं। वह तो कर्जदारों के पास जा रहे है। इसलिए इसमें परिवार की लालच को पोषित करने का तो सवाल ही नहीं उठता।

(३) साधुओं की समझदारी तो यह है कि भाविन तो डेढ़ साल से दीक्षा लेने के लिए तैयार ही था। फिर भी साधुओं ने शास्त्रज्ञान को ध्यान में रखकर उसे दीक्षा नहीं दी। अगर शिष्य की लालच होती, तो तो उसे दीक्षा दे देते। उसे इतना ज्ञान नहीं था कि, 'कर्जदार को दीक्षा नहीं दी जाती।' लेकिन साधुओं ने उसके अज्ञान का दुरुपयोग नहीं किया। भविष्य में शासनहीलना की थोड़ी भी संभावना न रहे। इसलिए वे दृढ़ रहे कि, 'कर्जा नहीं चुकाया जाएगा। तब तक दीक्षा नहीं।' बोलो, इसमें साधुओं की शिष्य-लालच कहोगे? या शासनप्रेम...?

(४) एक भी कर्जदार को पता ही नहीं है कि, 'भाविन कहाँ है?' इसलिए अगर उसे दीक्षा दे देते, तो तत्काल तो कोई हंगामा होने वाला नहीं था। चिपलुण के कर्जदार डेढ़ साल पुराने हैं, डेढ़ साल में कर्जदार न मिले, तो आज के जमाने में लगभग कर्जदार समझ ही जाते हैं कि "अब यह रकम आने वाली नहीं है।"

और डोंबिवली के कर्जदार तो ११ साल पुराने हैं। बोलो, उन्हें तो सपने में भी अब वह पैसा याद नहीं आता होगा... फिर भी साधुओं ने ऐसी किसी भी बात का गलत फायदा उठाने का विचार नहीं किया। एक ही बात... कर्जा चुकता हो जाए, फिर दीक्षा....

(५) कर्जदारों की रकम भी बड़ी-बड़ी नहीं थी। सिर्फ दो-तीन कर्जदारों की रकम बड़ी होगी। बाकी तो १०००० से लेकर लाख तक ही मुश्किल से होगी। इतनी छोटी रकम के लिए कर्जदार बड़ा हंगामा-मस्ती करें, यह संभव नहीं है। फिर भी दीक्षा तय नहीं की, क्योंकि 'कर्जा बाकी है।'

(६) भाविन को यह निर्देश भी दिया गया है कि 'छोटे लोगों का पैसा पहले चुकाना। बड़ों के पास अपने बड़े सेटिंग होते हैं। लेकिन छोटों ने तो तुम्हारी बड़ी बातों में फंसकर अपनी पूंजी तुम्हें दे दी होगी निवेश करने आदि के बहाने! उनके लिए तो बहुत बड़ा नुकसान ही होगा। इसलिए उनकी ओर विशेष ध्यान देना...

ये सभी बातें देखोगे, तो निश्चित रूप से लगेगा कि इसमें पैसे देकर दीक्षा करवाई, लालच से दीक्षा करवाई... यह बात गलत ही है।

▶ ▶ ▶

(६) **जिज्ञासा: लेकिन इतनी जल्दी दीक्षा कैसे दी जा सकती है? अभी तो वह गुरु के पास रहा ही नहीं है। क्या यह अजीब नहीं लगता कि दीक्षा की Training ली नहीं है, और अचानक दीक्षा तय हो जाती है, और चौदहवें दिन ही दीक्षा हो जाती है?**

**समाधान:** (१) भाविन ने डेढ़ साल पहले ही उपधान किए हैं। इसलिए उन्होंने पौषध जीवन तो जिया ही है। और सबको पता है कि पौषध ही दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा प्रशिक्षण है...

(२) भाविन ने लोच भी करवाया है, इसलिए उसकी भी प्रैक्टिस है।

(३) भाविन लगभग आयंबिल करते हैं। और २२०० आयंबिल ४४०० दिनों में करने हैं। इसलिए भोजन के प्रति वैराग्य भाव उनके पास मजबूत है।

(४) ४५ दिनों तक उपधान में रहे, स्वभाव में कोई खराबी दिखाई नहीं दी। नितिन भाई के यहां डेढ़ साल से नौकरी कर रहे हैं, उनकी तरफ से भी कोई शिकायत नहीं है।

(५) पूज्य पंन्यास विरागरत्न म. उनके गुरु बनेंगे। वर्धमान तप के १०० ओली के आराधक हैं। यानी कि तपस्वी हैं। मैं खुद उनके पास नौ महीने रहा हूँ। उनकी सहायक वृत्ति, उनके संयम के लिए परवाह, उनकी सूत्र शुद्धि... ऐसी तो बहुत सी बातें अनुमोदनीय हैं।

(६) संघ शासन कौशल्याधार **पूज्यपाद आचार्य देव जयसुंदरसूरीश्वर** दीक्षादाता हैं, और पहला चातुर्मास उन्हीं के साथ इर्ला जैन संघ में है। तो चार-चार महीने तक ऐसे महान ज्ञानी आचार्य देव की छत्रछाया भी उनकी पात्रता का विकास करेगी...

हमें या आपको इतना ही सोचना है कि बड़ों को यह उचित लगा होगा, तभी तो अनुमति दी होगी ना... बस! प्रभु से प्रार्थना करो, वही हमारा कर्तव्य है।

▶ ▶ ▶

(७) **जिज्ञासा: उनके माता-पिता का क्या?**

**समाधान:** चिंता न करें। भाविन, उनके गुरुजी आदि और मेरे जैसे भी सभी मिलकर उचित व्यवस्था कर लेंगे।

अंत में,

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना कि भाविन जीवन में अपनी ही गलतियों के कारण बहुत सारे संघर्ष झेल चुका हैं। आज अब जिनशासन उन्हें प्रेम से स्वीकार करता है। अब तक के संघर्ष कर्म बंधन कराने वाले थे। अब से उनके जीवन के सभी संघर्ष मोक्ष की साधना बनें...

▶ अब तक उनके कारण सैकड़ों लोग दु:खी हुए। अब उनके कारण हजारों लोग आत्मा की प्रसन्नता पाएं...

▶ अब तक वे लोगों से डर-डर कर भागते रहे, अब वे लोगों के हित

के लिए विहार में और गोचरी में घूमते रहें...

▶ अब तक वे सैकड़ों लोगों को धन की लालच देकर सट्टा आदि जैसे गलत धंधों में जोड़ते रहे। अब वे सैकड़ों-हजारों लोगों को मोक्ष की, आत्महित की, सच्चे सुख की लालच देकर हजारों प्रकार की सच्चे धर्म में जोड़ते रहें...

▶ अब तक उसने सैकड़ों लोगों को उल्लू बनाया, अब वह अपनी इंद्रियों को उल्लू बनाए।

जिस उत्साह के साथ भाविन दीक्षा ले रहा है, उसी उत्साह के साथ वह पूरी जिंदगी इसका पालन करे... यह बहुत सच्चे मन से प्रार्थना! इस काल में साधु जीवन अत्यंत कठिन है।

हां! बाहरी सामान्य आचरण तो पाले जा सकेंगे, लेकिन अंतर के परिणामों की सुरक्षा और वृद्धि दोनों कठिन हैं। आज पतन के कारण ढेर सारे हैं, उत्थान पाने के कारण उंगलियों पर गिने जा सकें इतने हैं। और बड़ी तकलीफ यह है कि पतन पाने वाले को पता भी नहीं चलता कि 'मेरा पतन हो रहा है।' यह इतना अज्ञात पतन है।

भाविन या कोई भी संयमी ऐसे मीठे-मधुरे पतन का शिकार न बने, यही ख्वास देखना है। लेकिन वह देखने वाला तो प्रभु है, प्रभु की कृपादृष्टि है। हम सब तो सिर्फ प्रार्थना कर सकते हैं।

अरे, दूसरों की बात बाद में, पहले तो मैं अपने ही लिए अपने प्रभु से यह प्रार्थना करूं कि प्रभु! मुझे पतन से बचाना। जीवन के ५० वर्ष पूरे हुए, अब बाकी बचे हुए वर्ष बहुत अच्छी तरह से बिताऊं, उत्थान पाऊं और बहुत जल्द मोक्ष पाऊं... परम पद पाऊं... यह पुस्तक तारीख २५-०५-२०२५ को दोपहर में शुरू की गई थी और २६-०५-२०२५ सुबह पूरी हुई...

**|| अर्हं नमः||**

**।। नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय ।।**

# Available In
# Hindi & English Language

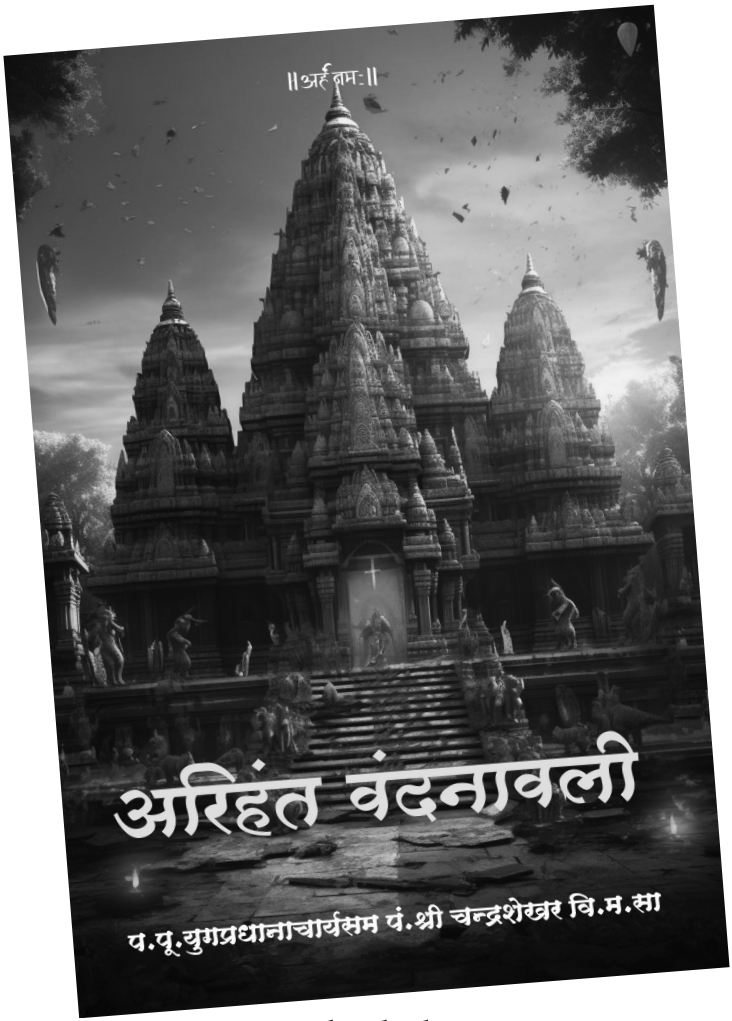


Available In
Gujarati & Hindi
Language..

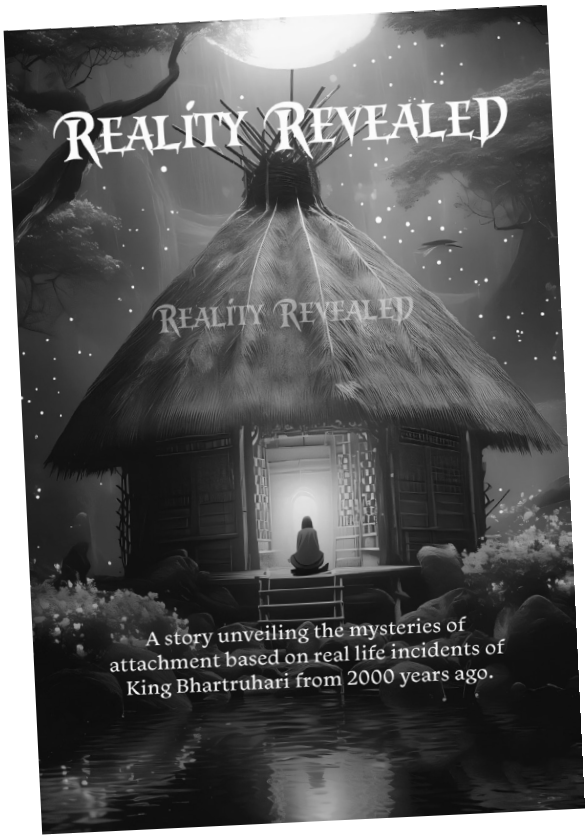


# REALITY REVEALED

Available In
English, Gujarati & Hindi
Language..

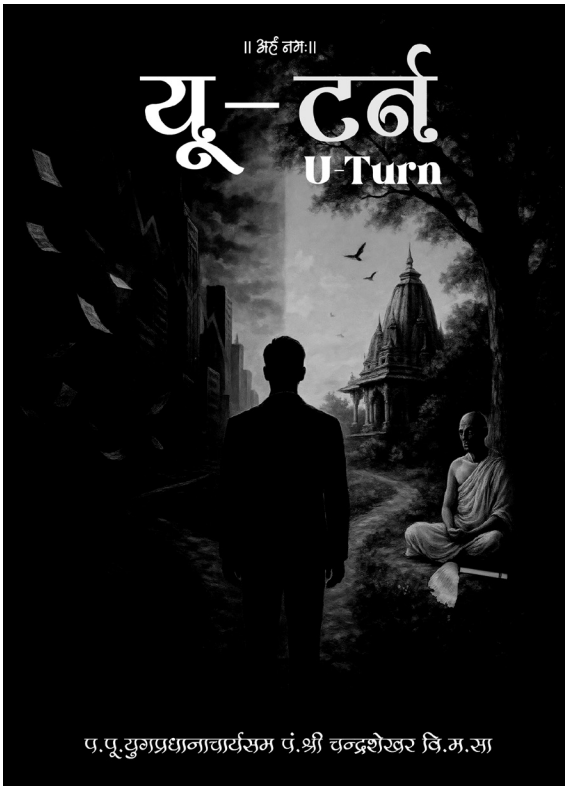


# Available In Gujarati Language..